बरिस 8 अंक 30

ISSN – Applied For

www.sirijan.com

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अप्रैल-जून 2026

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका
सिरिजन (अंक 30 : अप्रैल-जून 2026)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	नरसिंह तिवारी , (दिल्ली)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
	:	
उप सम्पादक कार्यकारी सम्पादक सलाहकार सम्पादक	: : :	तारकेश्वर राय संजय कुमार मिश्र राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजुन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
	:	
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

मुखपृष्ठ के चित्रकार - श्री अंतरिक्ष

अनुक्रम

संपादकीय
- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 5

आपन बात
- आपन बात - तारकेश्वर राय / 8

कनखी
- जाति पूछ लीं नेता..... - डॉ. अनिल चौबे /12

धारावाहिक
- श्रीमद्भगवद्गीता (भोजपुरी)- कृष्ण मुरारी राय/ 14

अंउजा पथार
- मलकिनी के फरमान -बिनोद सिंह गहरवार / 17

कविता/गीत/ गजल
- दुगो बाल कविता - कनक किशोर / 22
- मनवाँ के मार के - संगीत सुभाष / 27
- होली - गोवर्धनसिंह फ़ौदार 'सच्चिदानन्द' /30
- फागुनी बयरिया - राकेश कुमार पांडेय/31
- चड़त महीनवां- राकेश कुमार पांडेय/31
- फगुआ गीत गवाइल हो - राकेश कुमार पांडेय/32
- नवा बरिस - राकेश कुमार पांडेय/33
- आजादी - अखिलेश्वर मिश्र / 35
- हहरा के बहेला - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" / 37
- अइलें सजनवाँ - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" /37
- चहकेला घरवा - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" /38
- राम जी के जनम - गणेश नाथ तिवारी"विनायक" /38
- मुक्तक तीन गो - विद्या शंकर विद्यार्थी / 42
- भाई से अरदास - गंगानन्दन झा कलाधर /43
- मझौआके बागड़ - पंडित कालीकुमार मिश्र विशारद/44
- मंगरुआ - राम नाथ बेख़बर /45
- भोजपुरी - गुड़िया शुक्ला /46
- दिल की बात बता के देखीं - शिव शंकर सिंह सुमित/47
- एगो सोहर - अजय सिंह 'सिसोदिया' /48
- ए बबुआ ई सोना माटी-आकृति विज्ञा 'अर्पण'/57
- बेटी सोहर -आकृति विज्ञा 'अर्पण'/57
- चैती -आकृति विज्ञा 'अर्पण'/58
- आजादी ? - नक्कू मझव्वी/66
- गालिब के पढ़ते मातर - नक्कू मझव्वी/66
- आपन करनी पार उतरनी - नक्कू मझव्वी/67
- भेलेनटाइन भोजपुरिया - नक्कू मझव्वी/68
- सुन हो कन्हाई - डॉ शिप्रा मिश्रा/69
- एगो देह - डा राजेन्द्र भारती /74
- घेंट में कुछ बा - डॉ उदय हयात/75
- हिया के दीअना - डॉ उदय हयात/75
- आज कऽ हाल - डॉ विवेकानंद तिवारी 'रहि'/76
- महंगाई - उमेश कुमार राय/77
- बात मोहब्बत के हउवे - दीपक सिंह/81
- हम रह गइनीं - कुमार जीवन सिंह/84
- वन्दे मातरम् - पं० लक्ष्मण त्रिपाठी 'प्रवासी'/90
- जिनिगी गँवाइल - डॉ० रामनारायण तिवारी/91
- जिनिगि जे रहल कचनार - डॉ० रामनारायण तिवारी/91
- अइलें पहुनवाँ मधुमास में - डॉ. मुकेश कुमार दुबे "दुर्लभ"/93
- प्रेम अब कहाँ होला हो - प्रिया मिश्र "मन्नु"/94
- जियल भी मुश्किल - राम अचल पटेल/103
- छोड़ा ख़ैर? - राम अचल पटेल/103
- आग लागल बा सोना में - दीपक तिवारी /106
- गुजारिश बा सरकार से - दीपक तिवारी /106
- कहाँ आसान बा - सूर्येश प्रसाद निर्मल तरैया/107
- जिनगी चलऽतिया.... - विशाल विद्रोही/108
- के आपन बा - नूरैन अन्सारी/110
- घर आके न कहल जाला - नूरैन अन्सारी/110
- ना मिलेला - नूरैन अन्सारी/111
- हरवा - राधेश्याम "रागी"/112
- हमार दरद - अभियंता सौरभ कुमार/113
- जिया बे-कल बा - अभियंता सौरभ कुमार/113
- गाँव...... - ज्योतिका प्रसाद/114
- नाइ जाला हो - काजू निषाद/115
- बेटी के व्यथा - निधि कुमारी सिंह/116

पुरुखन के कोठार से
- अंजन जी के कविता / 6
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 9
- स्व. रामजी सिंह मुखिया के कविता / 11

कथा-कहानी
- ज्ञान दान - कनक किशोर / 20
- पूजा घर - मनोकामना सिंह / 36
- अब हमनीं के बारी बा - अजय सिंह 'सिसोदिया' /49

अनुक्रम

- रीसि बहल छोह में - सत्य प्रकाश शुक्ल "बाबा‘’/51
- गदबेरा - डॉ शिप्रा मिश्रा /70
- सास-पतोह - उमेश कुमार राय/80
- बेबी सिटिंग - बिम्मी कुंवर/87
- एगो रहलन कवि जी - डॉ रजनी रंजन/100
- हरिया वाला कप - नितिन शिवम्/109

आलेख

- धनुर्धर एकलव्य - प्रो. जयकान्त सिंह ' जय’ / 23
- ना भीख चाहीं ना कर्जा..- डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद /59
- महातम माई क बोलीके - नक्कू मझव्वी/64
- अनमोल नारी शक्ति - उमेश कुमार राय/78
- बज्जिका मातृभाषी डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के भोजपुरी साहित्यिक सफर - दिनेश प्रसाद सिन्हा/82
- ग्रामीण समाज मे स्नेह सुरेंद्र गिरी के “कहाँ गइल ऊ दिन“ - प्रकाश कट्टारी /85
- भोजपुरी समाज के बियाह के रस्म - प्रिया मिश्र "मन्नु"/97

पुस्तक समीक्षा

- अवकिल जी के"लकीर“ - अजय कुमार / 28

एकांकी

- पत्थर के जहान-विद्या शंकर विद्यार्थी/39

हँसी-ठिठोली - संगीत सुभाष / 104

सतमेझरा – 1-4, 13,105,117-118

हमरे जहन में त भोजपुरी बा जनाब,

अंग्रेजी में त बतिया लेब,

पर भोजपुरी के रंग के ना भुला पाइब॥

जुद्ध लाठी आ पत्थल से लड़ल जाई

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

"पता ना तीसरा विश्व युद्ध कइसन-कइसन हथियारन से लड़ल जाई लेकिन चउथा विश्व जुद्ध लाठी आ पत्थल से लड़ल जाई।"

विश्व प्रसिद्ध महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ई बात 1949 में पत्रकार अल्फ्रेड वर्नर के संगे एगो साक्षात्कार देत समय कहले रहलें। अल्फ्रेड वर्नर संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रकाशित होखे वाली एगो यहूदी पत्रिका "लिबरल जूडाइज्म" खातिर काम करे वाला एगो चर्चित पत्रकार रहलें।

सगरी दुनिया संकट के कगार पर खड़ा बा। इजराइल आ हमास गाजा में लड़ रहल बा। रूस यूक्रेन से लड़ऽता। पाकिस्तान आ अफ़गानिस्तान एक-दूसरे पर बमबारी करते बा। एही लड़ाई के बीच फेरू नया लड़ाई शुरू बा- मध्य पूर्व में इज़राइल-अमेरिका बनाम ईरान के संघर्ष। ए सब खींचातानी में उहो लड़ाई शुरू हो सकऽता जवन फिलहाल रूकल बा, तनिको एने ओने भइल कि इहो भड़कबे करी।

जइसे कि थाईलैंड-कंबोडिया के सीमा विवाद। महान महान चिन्तक लोग के ई कहनाम बा कि अगिला पाँच बरिस में कवनो ना कवनो जुद्ध में परमाणु हथियार के इस्तेमाल होखबे करी।

अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस आ कनाडा में कम से कम एक तिहाई लोगन के त ई कहनाम बा कि अगिला पाँच बरिस में जुद्ध में परमाणु हथियार के इस्तेमाल होखे के बहुत अधिके संभावना बा। ट्रंप के भी कहनाम बा कि ईरान के पाषाण जुग में ले जाइब।

आखिर ए जुद्ध से, भयानक तबाही से नुकसान त मानवता के ही बा। आज केहू केहू से कमजोर नइखे । वर्चस्व आ दबंगई खातिर सब लड़े के तइयार बा।

आ सभे ए जुद्ध से कवनो ना कवनो तरे परेसानो बा।

"ई जवन भयावह माहौल युद्ध के लउकत बा एकर मानवता से कवनो लेना देना कहीं नइखे। ई एगो सामूहिक पागलपन ह जवन कुछ कुछ बरिस के बाद उपटत रहेला। कारण बदलत रहेला। कबो पावर के प्रतिस्पर्धा, कबो तेल की कीमत, कबो दू देस के झगड़ा, त कबो न्यूक्लियर हथियारन के निर्माण आ परीक्षण ! जइसे व्यक्तिगत पागलपन होला वइसने देश अउर विश्व में पागलपन होला। जेकरा चलते जुद्ध पहिलहूँ भइल बा आ आगहूँ होते रही व।

डेराए आ डेरवावे के स्थिति पूरा विश्व में बन रहल बा।

हमनीं के जीयऽ आ जिये द वाली परम्परा के अनुसार चले वाली संस्कृति के रहवइया हईं जा। जुद्ध कवनो समस्या के समाधान ना होला। जुद्ध के बाद एगो पछतावा आजीवन पीछा ना छोड़े। अकारन लाखों करोड़ो लोग के मउगत के जिमेदार जैविक हथियार ना ओ के चलावे वाला होला।

जदी जुद्ध आपन भयानक रूप ले लिहलस त मानवता की साथे साथे कई गो सभ्यता ध्वस्त हो जाई। आवेवाला समय में जुद्ध लाठी आ पत्थल से लड़ल जाई।

डॉ. अनिल चौबे

अंजन जी के कविता

चाँछी मति, काटी मति,
टुकी-टुकी क के बाँटी मति,
राउरे हवे, सलहन्त से एके गो रहे दीं,
केहू का बात में मति परी, जे कहत बा कहे दी,
ना करार परे त पाँव का नीचे दबाइल माँटी से पूछि ली,
बड़का-समुन्दर, ऊँचका पहाड़, नदियन के
जाल बुनाइल-फुलाइल घाटी से पूछि ली,
दुआरे-दुआरे के चासनी चाटी मति,
सुतल-पिराइल देहि के घाव उपाटी गति,
चउआरि बेआरि उठि गइल बा, बहते रही बहे दी ।। राउरे.......!

बाप के करेजा फाटि जाई, माई के ऑखि लोराई
जब देहि से देहि बँटाए लागी।
रोआँ-रोओं में बिच्छिन के डंक लेखा बुझाई
जब आँखि से आँखि कटाए लागी ।।
मन्दिर-मस्जिद पर खुनाइल पोस्टर साटी मति,
जुग जुग से जगमगात दिया के उलाटी मति,
सगरो गतर टो-टो के बचा ली, बतास वहत बा, बहे दी !! राउरे.....!

भोजपरी गीत सम्राट
पं॰ राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

शेष अगिला पन्ना प........

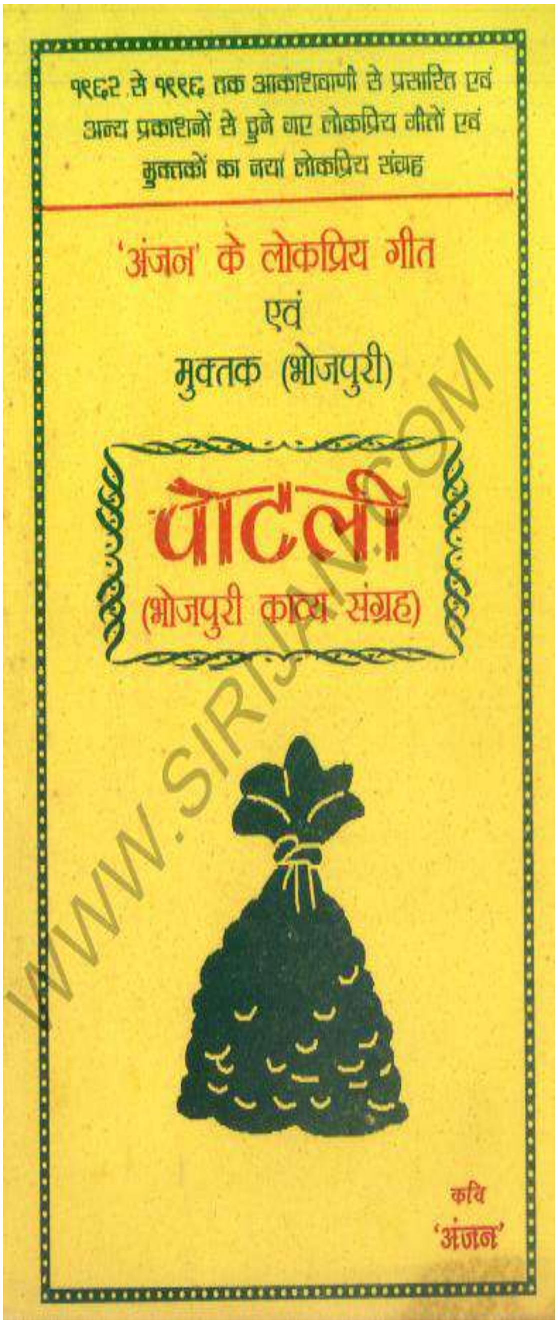

बाँटि लेब त कहे के परी, हतने हमार ह –
बाकी हुनुके ह, हुनुके ह,
काटि देब त कहे के परी बाग-पहाड़
घाटी हुनुके, हुनुके ह,
एते सब राउर हवे, फाटी मति,
ढेर छँटाइल बा, अब छाँटी मति,
अरिहा का मन में आणि होला, जे सहत बा, सहे दी !! राउरे....!

छोटका भाई का नइखे बुझात, त बड़का भाई प्रेम से –
डाँटी-डेरवाई, पुचकारी, कहियो ना कहियो त होश में आई
बाकी उजरे ना दी फुलवारी ॥
कवनो आँखि के सपाना उचाटी मति,
सोझे जीये दी पलाटी मति,
आँखि हँसे दी, अंजन रचवे दीं, प्रेम के गंगा बहे दी !! राउरे.....!

◆◆◆

भारत में अप्रैल से जून तक के समय तीखर घाम आ मुँह झुलसावे वाली चिलचिलात गरम हवा के प्रतीक मानल जाला। ई ऊ समय ह जब सूरुज देवता उत्तर की ओर बढ़े लागेलन, जेकरा से तापमान में भारी बढोतरी देखे के मिलेला। भोजपुरिया बघार के जनजीवन, खेती-बारी आ प्रकृति खातिर ई समय चुनौती आ बदलाव से भरल रहेला।

एह मौसम के सबसे बड़ विशेषता 'लू' ह। दुपहरी में चले वाली ई सुखल आ गरम हवा ना खाली देह थका देले, बलुक सेहत खातिर भी बहुते खतरनाक होले। एह दिनन में बेर बढ़ते गली आ सड़क पर सन्नाटा पसर जाला आ लोग घरे में रहल पसंद करेलन।

गाँव-जवार में दुपहरिया में सुते के रिवाज एही मौसम के वजह से ह, ताकि लोग साँझ के ठंढा भइला पर आपन काम कर सके।

जहवाँ एक ओर गरमी परेशान करेला, दूसरी ओर ई मौसम प्रकृति के कुछ खास तोहफा भी ले के आवेला। एही समय आम बउरा के तइयार हो जाला आ बजार में आवे लागेला। एकरा अलावा तरबूज, खरबूजा आ लीची नियर रसीला फल देह में पानी के कमी पूरा करे के बीड़ा उठावत दिखेला। बेल के शरबत, आम के पन्ना, सत्तू आ मट्ठा एह मौसम के जान हउवन सँ।

जून के अंत आवत-आवत उमस बढ़े लागेला। ई एह बात के संदेसा होला कि अब बरखा नियरे बा।

अप्रैल से जून के मौसम धीरज धरे वाला समय ह। भले ई मौसम देह के झुलसा देला, बाकिर ई हमनीं के खेती आ प्रकृति के चक्र के एगो जरूरी हिस्सा ह, जे अंत में हरियर-बरियार बरखा के रास्ता साफ करेला।

रूस-यूक्रेन युद्ध आ पश्चिम एशिया (ईरान-इजरायल-अमेरिका संघर्ष), जब दुनिया के कवनो कोना में युद्ध छिड़ेला, त ओकर असर खाली ओहिजा ना, बलुक हमनीं के गाँव-जवार आ रसोई तक पहुँच जाला। आजु के जमाना में सब देस एक-दूसरा से अइसे जुड़ल बाड़न सँ कि एगो के चोट लागल त हूक सब के उठेला।

जुद्ध से सबसे पहिले सामान के दाम बढ़ जाला। खाड़ी देसन में तनाव भइल त पेट्रोल-डीजल, एलपीजी के दाम आ उपलब्धता पर भी असर पर रहल बा। परेशान सभे बा।

जुद्ध कवनो समस्या के हल ना ह। एगो पुरान कहावत ह — "जेकर घर जरल, ओकर त गइबे कइल, बाकी पड़ोसियो के धुआँ से आँखि पिराए लागल।" यानी युद्ध के आग त कुछ जगह लागल बा, बाकी ओकर धुआँ पूरा दुनिया के आँखि में लोर ले आ रहल बा।

हमनीं में जेतना लूर सहूर रहे ओह तरह के रसोई हमनीं के परोस देले बानीं जा। पाठक गण से हमनीं के निहोरा रही कि आपन सचेत नजर एक बेर सिरिजन के बर्तमान अंक पर जरूर डालब जा।

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय
उप सम्पादक, सिरिजन

स्व. पं. धरीक्षण मिश्र जी के कविता

परिवर्तन के सूचक सात

पन्द्रे सौ सताइस में बाबर के राज भैल
हारि भैल छब्बिस में लोदी अफगान के।
मुवले औरंगजेब सत्रह सौ सात बीच
छिन्न भिन्न राज भैल मुगल खन्दान के।
सत्रे सौ सन्तावन में पलासी के युद्ध भैल
कम्पनी का हाथे गैल जिला बर्दवान के।
अठारे सौ सन्तावन में भैल विद्रोह भारी
आइ गैल बेरा विक्टोरिया फरमान के॥

उन्निस सौ सताइस में नून सत्याग्रह में
भैल अवज्ञा वृटिश शासन विधान के।
उन्निस सौ सैतिस में काँगरेसी मन्त्री लोग
लागल चलावे राज पूरा हिन्दुस्तान के।
भारत से गोरा लोग भागल सैंतालिस में
और नेंव डालि गैल इहाँ पाकिस्तान के।
कहियो ना भैल तवन भैल मार काट इहाँ
दूनूँ जाति नष्ट भैल हिन्दू मुसलमान के॥

शेष भाग भारत में राम राज भैल आ की
कौन राज भैल बा ना लिखला का मान के।
जामवन्त अंगद सुग्रीव नल नील सभे

शेष अगिला पन्ना प........

भोजपुरी के आचार्य कवि

पं. धरीक्षण मिश्र

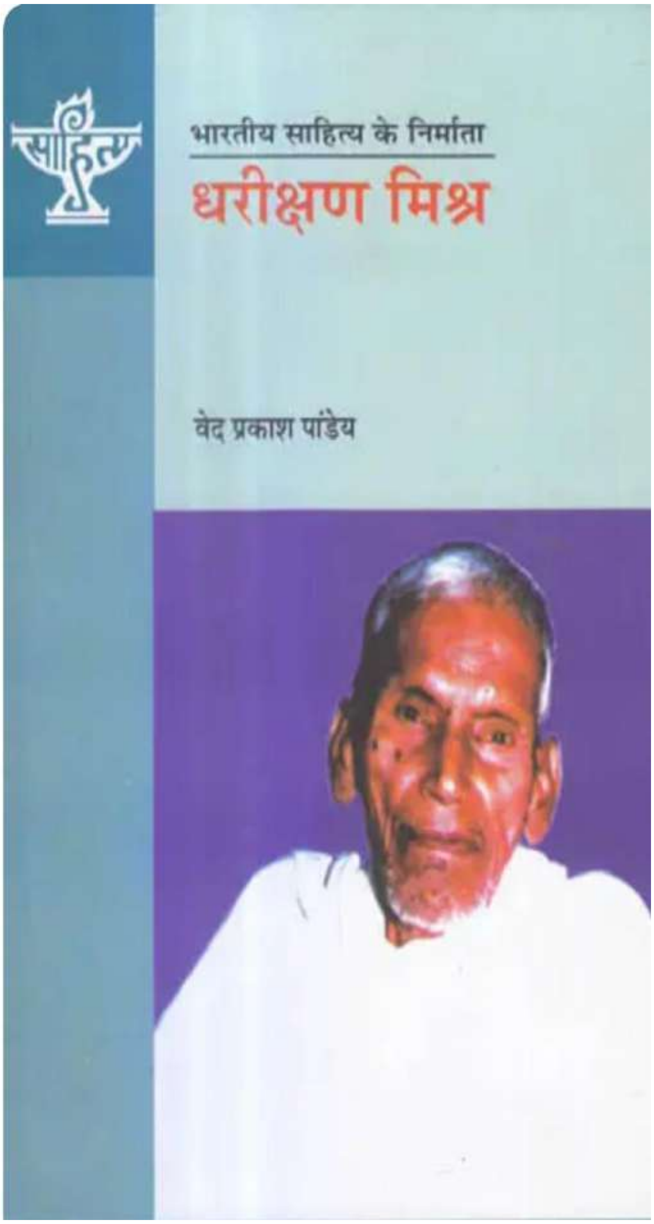

मुँह बा के देखि लिहल खेला ईमान के ।
शासन दल के कुर्सी समूचा जब छेंकि बैठल
एके दल खानी करिमूहाँ हलुमान के ।
एही दुखें सात मास बीतहीं के रहे तौले
जामवन्त गति अपनौले अन्तर्ध्यान के ॥

शेष दल बानर के लागल अधीर होखे
कब ले ई लोग भला ताको मुँह आन के ।
बीसन बरीसन से लोगो रहे ऊबि गैल
करिया मुँह बानर का भारी जियान से ।
सरसठ में सर सठ भैले अनेक जने
आइल झकोरा बड़ा शासन बिधान के ।
असली लोकतंत्र भैल उत्तर प्रदेशो में
मन्त्री लोग भैल सात दल का प्रधान के ॥

मई सताइस के भइल, नेहरू के अवसान ।
भारत से इक उठि गइल, सत्ता ईश महान ॥
सात मास तक चलल जब, संविद के सरकार ।
ओहू में लागल चले, फूट-फाट के कार ॥
दू वर से न वियाह हो, एकवर पशु न किनात ।
छवर न केहु छोड़े चहें, सब चाहें वर सात ॥

◆◆◆

स्व. रामजी सिंह मुखिया

स्संक्षिप्त परिचय: लगभग 1925 में ग्राम पवट, जिला भोजपुर, बिहार में जनम। बचपने से धर्मग्रन्थन्हि आ साहित्य-संगीत में रुचि। किशोरावस्था से भोजपुरी साहित्य में ब्यंग अवरू भक्ति क्षेत्र में पद्यरचना। भारत से लेके बिदेशन्हि तक ब्यंग रचननन्हि के प्रसिद्धि। भोजपुरी साहित्य में अनन्य योगदान। समाजसुधार खाति ग्रामीण राजनीति में अइनी - बेहरा ग्राम पंचायत के मुखिया अवरू आरा अंचल के बी.डी.सी. के अध्यक्ष पद के सुशोभित कइनी। 3 अप्रैल 1999 के निधन। इहाँ के कबिता-संग्रह 'हमहूँ मुखिया होखबि' भोजपुरी साहित्यांगन के वेबसाईट प उपलब्ध बा।

महँगी-अकाल

(आजु के पीढ़ी के इ भान ना होई बाकि 1970 के दशक के पहिले तक अकाल भी हमनी के सामाजिक जीवन के एगो दर्दनाक पहलू रहे। मुखिया जी कभी-कभी बहुते व्यथित हृदय से ओह समय, विशेषकर 1966, के विषय में बतावत रही। - सं.)

भारत के दीन दसा, महँगी से दुर्दशा,
मनसा ना साफ-साफ केहू के इमान बा।
राजनीति नेता, भा समाजिक कार्यकर्ता,
जइसन पुरोहित जी, वइसन जजमान बा।
मंत्री के हाल जवन, संत्री के हाल तवन,
भुखाइल भगतजी, भुखाइल भगवान बा।
'रामजी' के दुर्दिन बा, हरामजी के सुभ दिन बा,
संत भइले निर्धन, असंत धनवान बा।।

महँगी अजगरनी के, करनी के बरनी के,
कलमो में गरमी ना, मन में ऊसँग बा।
राज-राज जिला-जिला, अन्न बिना चिला-चिला,
तिलमिलात थरथरात, गतर-गतर अंग बा।
तन पर ना कपड़ा बा, भवन पर ना खपड़ा बा,
दफन के कफन ना, मउअतिवो तँग बा।
मरते जवाहिर के, मुदई धाधाइल बा,
धनिकन के आंगन में बाजत मिरिदंग बा।।

◆◆◆

बाकी अगिला अंक में.....

“जाति पूछ लीं नेता के तब दीं आपन वोट”

जतिगो के जनगणना से का नफा नुक़सान हो सकऽता ई त आम अदिमी के शायदे बुझाई बाकु ख़ास लोग के हो सकता होखे। तबे नू हेतना किचाइन हो रहल बा। जतिगो के जनगणना होखे के चाहीं आ होइयो गइल।जब गाय, भँइस, बकरी माने पशु जाति के गणना हो सकेला त अदिमी के जातिगणना काहे नइखे हो सकत? कबीर दास जी पहिले कहले रहनीं- “जाति न पूछो साधु की”।

उहाँ के जानत होखबि कि एक दिन सभकर जाति पुछाई। एही से उहाँ के पहिलवे कहि दिहनीं-साधु के जाति मत पुछिहऽ लोग।

अब बताईं जतिगो के जनगणना में जाति ना त ज्ञान पुछल जाई? आ ओसहूँ ज्ञान पुछि के होई का? के पुछऽता ज्ञान के? पुरनिया लोग कहत रहे सभे एके गो परमेसर के संतान ह, केहू से केहू में कवनो भेद नइखे। बाकी सत्ता के लालच, चुनावी गणित के जोगाड़, कुर्सी हथियावे के हथकंडा सभकर अल्पज्ञान के गठरी राजनीति के मेला में कवनो ठगवा ठग लिहलस। अब समझ में आवऽता। सभे मानव एक जइसन नइखे। सभकर भगवानो एक नइखन। यदि कवनो भेद नइखे त संख्या आ प्रतिशत के भेद त बटले बा।

आदमी जन्म लेला त कवनो जाति में ही जन्म ली आ आदमी के जनमते ओ जाति के एगो संख्या बढ़ि जाला। जन्म से ही व्यक्ति में जाति के गन्ध फुटे लागेगा। जब आदमी वोट देवे लायक होला त उहे जातिगत गन्ध सूंघत सूंघत नेता लोग आपन जातीय समीकरण बइठावेला। कई जगह त आपन जाति ना बतावेवाला साधु के शाख़ पर भी इहे राजनीति के जतिगो वाला महोखा बइठल लउक जइहऽसन।

जतिगो जनगणना से सजातीय दुर्गन्ध सूंघे के क्षमता नेता लोग में बढ़ि जाई। जातीयता के संख्यात्मक गन्ध से जवन सम्मोहन पैदा होला ऊ मानवता के सुगन्ध में कहाँ बा? अपना जाति के आदमी के भँइस यदि लखनउ में पाड़ी बिआइल बिया त पटना में बइठल सजातीय बन्धु के छाती फूल के फुलौना हो जाई। एतना ज़ोर से छाती पिटे लगिहें कि जइसे इनका छाती में अबे दूध उतर जाव त पूरे गाँव में फेंसा बटवा दिहें। जाति के बेमारी एतना लाइलाज होले कि पड़ोस के बाभनो अछूत लगेगा। राजनीति के खेत में जाति के फसल के रोपनी हो चुकल बा। खाद पानी देके समय समय पर रखवाली कइल जात बा। कहीं एकता के अवारा जानवर चर मति जाव? ना त अंग्रेजन के झींटल बीज भारत से समूल नष्ट हो जाई।

“जाति न पूछो कहि के कबीर दास जी जातीय समीकरण के नुकसान पहुँचावे के असफल कोशिश करत बानीं। आज समाज के अइसन कवनो सन्त ज्ञानी के जरूरत नइखे जे नेतन के खानदानी धन्धा के नोकसान पहुँचावे। लोकतंत्र में चुनाव होला आ चुनाव जितावे में जाति के बड़ भूमिका होला। जातिगत गणना के मुख्य उद्देश्य इहे बा कि संख्याबल के अनुसार चुनावी टिकट लेके अपना अपना सजातीय क्षेत्र के हीक भर विकास के नाम पर बकलोल बनावल जाव। जनता भी इहे चाहत बिया, एकरो इकास-विकास से कवनो मतलब नइखे। रउवो गन्धाइल स्वजाति के अउरी गन्ध फ़इलाईं आ अपना सजातीय बाहुल्य क्षेत्र से टिकट के जोगाड़ बइठाईं। आ ना त खुद के जनता मानत बानीं त-

जाति पूछलीं नेता के

तब दीं आपन वोट।

◆ ◆ ◆

डॉ. अनिल चौबे

सम्पादक, सिरिजन

मुखपृष्ठ के चित्रकार अंतरिक्ष के परिचय

सितंबर 2006 के जनमल अंतरिक्ष के स्थाई निवास गाँव महादेव, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश हा। अंतरिक्ष वर्तमान में बी०सी०ए० (2nd Sem) के छात्र बाड़ें। अंतरिक्ष के फोटोग्राफी, पेंटिंग आ लेखन में रूचि बा। अंतरिक्ष के पेंटिंग आ रचना कई पत्र-पत्रिकनन में प्रकाशित भइल बा। सितंबर 2022 से अंतरिक्ष फोटोग्राफी क रहल बाड़ें आ ए छोटे अंतराल में उनके सैकड़न फोटो आ डिजिटल आर्ट्स देश-विदेश के जानल-मानल पत्रिकन जइसे हंस, पक्षधर, नया ज्ञानोदय, सेतु, वर्तमान साहित्य, कथाक्रम, परिकथा, विपाशा, वीणा, पाखी, समयांतर, सरस्वती, उत्तर प्रदेश, प्रस्ताव, अदम्य, जलवायु, सार-समीक्षा, प्रेमचंद पथ, नाद रंग, अंतरंग, छाँह, रचना उत्सव, हिम भारती, समीरा, आउटलुक, अक्षरा, संवदिया, बरोह, शीतल वाणी, पाती, पतहर, प्रस्ताव, प्रश्नचिन्ह, समकाल, हरिगंधा, सत्राची (शोध पत्रिका), मुक्तांचल, कलम हस्ताक्षर, समकालीन अभिव्यक्ति, शैक्षिक दखल, साहित्य समय, साहित्य यात्रा, शब्दिता, शुभ तारिका, शब्द संयोजन (नेपाल से प्रकाशित), हिमप्रस्थ, हिमतरू, अभिदेशक, दि अण्डरलाइन, राजस्थली, साहित्य समीर दस्तक, पाठशाला, आधारशिला साहित्यम्, परिवर्तन, प्रकृति मेल, प्रकृति दर्शन वगैरह के मुख पृष्ठ आ भीतरी पन्नन पर प्रकाशित भइल बा। साथहीं, देश के जानल-मानल प्रकाशन जइसे बोधि प्रकाशन, समय साक्ष्य, डायमंड बुक्स, समर प्रकाशन, शिल्पायन बुक्स, पुस्तकनामा, न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन्स, पाखी पब्लिशिंग हाउस, सत्राची फाउंडेशन, कामायनी, सी जी ज्ञान प्रकाशन, मैत्रेयी प्रकाशन, चतुरंग प्रकाशन, किसुन संकल्प लोक वगैरह के पुस्तकन के आवरणो पर अंतरिक्ष के फोटो आ आर्ट स्थान पवले बा। देश के दुसरो चर्चित साहित्यिक पत्रिका आ प्रकाशन अंतरिक्ष के फोटो आवे वाला अंकन आ पुस्तकन खातिर चयनित कइले बा।

अंतरिक्ष

सुपुत्र श्री पवन चौहान, गाँव व डा० महादेव, तहसील-सुन्दरनगर, जिला- मण्डी (हि०प्र०)- 175018

मो०- 9805402242, 8894122242
Email : antriksh92006@gmail.com

◆ ◆ ◆

अंतरिक्ष

पुस्तक क नाम –श्रीमद्भगवद्गीता,

भोजपुरी भावानुवाद (काव्यात्मक)

---- कृष्ण मुरारी राय ----

प्रकाशक - सर्व भाषा ट्रस्ट, दिल्ली

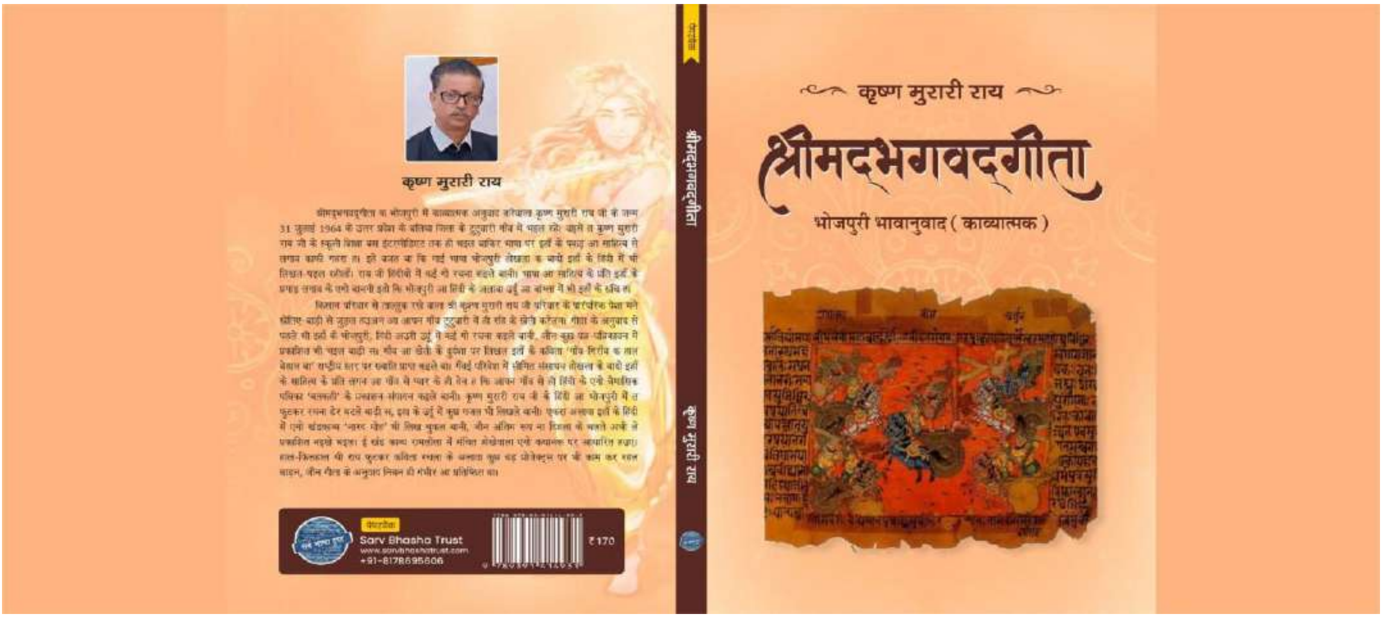

पिछिला अंक में अध्याय 1 क 24 वाँ श्लोक तक भईल रहल ह....

अब आगे....

अध्याय 1

श्लोक 25 से श्लोक 47 तक (अध्याय 1 क समापन तक)

सेना दूनो ओर खड़ी, खड़े पितामह, द्रोण।

रथ कर बीचो बीच खड़ा, कह पड़लें रणछोड़।।25।।

युद्ध बदे खाड़ पार्थ! कौरव लोग के देखऽ अब,

पृथा पुत्र देखे लगलन नजर गड़ाई के।

ताउ-चाचा, दादा, परदादा, गुरु खाड़ सभे,

देख तारन खाड़ ऊहाँ मामा आदि भाई के।।26।।

चारू ओरी नाती, पोता, पुत्र मित्र खाड़ बाड़न,

देख तारन हित नात आंँख पथराई के।

गोतिया दयाद सभे अंँखिया क सोझे खड़ा,

बोलले करुण बोली कान्हा के सुनाई के।।27।।

सुनऽ सुनऽ कृष्ण सुनऽ खड़ा सभ अपने बा,
देखि देखि देहिया आ मुंँहवा सुखात बा ।
लागता शरीरिया में तनिको ना जोर बाटे,
रोंआ गनगनात बाटे, मन छनछनात बा।।28।।

हाथ से छुटल जाता मोर प्रिय गांडीव धनुष,
चमड़ी जरता जइसे आगी में भुंँजात बा।
मन घबड़ात बाटे, गोड़ भहरात बाटे,
हमरा से अब खाड़ होखलो न जात बा।।29।।

केकरा से युद्ध करीं, केकरा के मारीं काटीं,
जेनिये ताकींला सब अपने देखात बा।
लछन न नीक अब कसहूं देखात बाड़े,
होई ना भलाई मन बड़ा पछतात बा।।30।।

हमके ना जीत चाहीं, नाहीं चाहीं राजपाट,
नाहीं हम चाहीं कृष्ण सुविधा या सुख के।
अइसन जियलका के नीक नाहीं बूझीं हम,
सुनिलऽ विचार हमरा हियरा में ढुक के।।31।।

हमनी का बाद जे भी भोगे वाला राज बाटे,
ओकरे ना मोह बाटे अपना परान के।
धन जिनगी क मोह छोड़ि के पिसात बाड़े,
जइसे पिसाला घून संँगवा पिसान के।।32।।

देखीं होने गुरू ,ताऊ, चाचा, बेटा, दादा, मामा,
नाती पोता हित नात सभे तैनात बा।
धरा के पूछत के बा तीनों लोक चाहीं नाहीं,
मरीं चाहे मारीं बात एक ही बुझात बा।।33.35।।

बड़का बाबूजी धृतराष्ट्र क लइकवन के,
मार के कवन सुख पाइब हम कन्हैया।
उलटे संघारब यदि एह अततइयन के,
पाप क बनब भागीदार हम कन्हैया।।36।।

एही से कहत बानी नाहीं ओह जोग बानी,
अपने भइयवन के मारि दीं कन्हैया।
हमके बुझात नइखे पाइब कवन सुख,
इन्हनी के काहें के संघार दीं कन्हैया।।37।।

लोभ में समाइल चित इन्हनी क भ्रष्ट बाटे,
चाहेलन स कइल विनाश खानदान के।
एकरा में दोष ना लखात बाटे कवनो के,
लइकन का संगे-संगे बुढ़ओ सयान के।।38।।

मित्र का विरोध से कवन पाप उपजेला,
केहू समुझावे वाला नइखे भी जान के।
हमनी का कुल्ही बात पाप दोष बूझऽतानी,
काहें ना पराइल जाउ लेईं के परान के।।39।।

कुल क विनाश से खतम होला कुल धर्म,
धर्म का विनाश से बढ़ेला कुल- पाप जी।
मेहरारू कूल्हि खानदान क दूषित होली,
दोगला जनम ले ले पता ना के बाप जी।।40.41।।

कुल कुलघतियन के नरक ले जाये बदे,
दोगला जनम लेई लेलन खानदान में।
इन्हनी से पितरन के तर्पण मिलेला नाहीं,
नीच गति पावेलन ई जाने अनजान में।।42।।

सनातन धर्म खत्म होला कुल घतियन के,
खतम होला जाति-धर्म दोगलापन अइला से।
नरक में वास करे लोग ई अनंत काल,
कूल्हि कहतानी हम पहिले सुनइला से।।43.44।।

शोक क ई बात बा कहाईला जा बुद्धिमान,
बानीं जा उतारू करे बदे बड़ पाप के,
राज सुख लोभ में समाइल चित हमनी के,
मारे बदे बानी जा तइआर भाई बाप के।।45।।

हमरा त मन बा निहत्थे रहीं ईहां खाड़,
लइका धृतराष्ट्र क लड़स जा हथियार ले।
हमरा के एही मा बुझात बा भलाई कृष्ण,
जेकरा भी मन करे हमरा के मारि ले।।46।।

संजय कहले रणभूमि में, अर्जुन धनुहा त्याग।
शोकाकुल मन रथ क, धइलन पिछला भाग।।47।।

।। पहिला अध्याय समाप्त।।

अगिला अंक में क्रमशः जारी.....

◆ ◆ ◆

कृष्ण मुरारी राय
टुटुवारी, बलिया (यू. पी.)

मलकिनी के फरमान

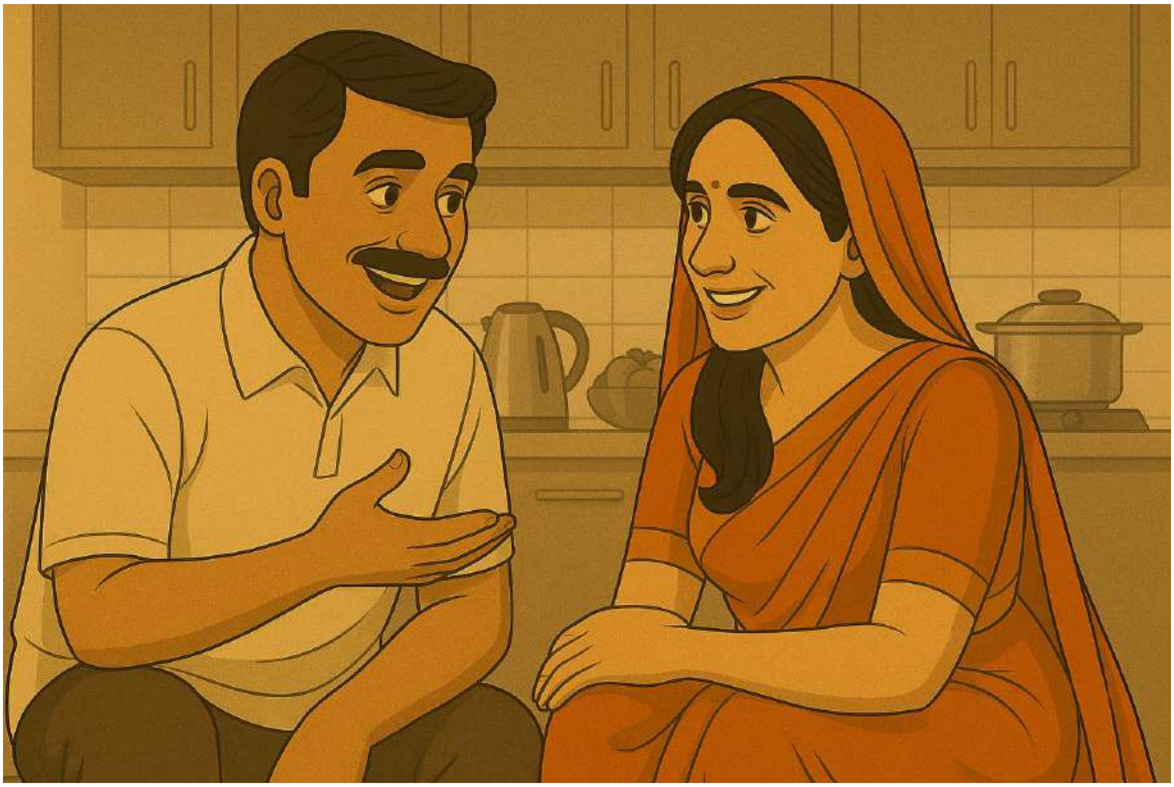

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

दू दिन के छूट्टी बा। ईद सुक के होइत त तीन दिन के छुट्टी भेंटा जाइत। फजिरहीं उठ के फर - फराकत भइला के बाद बेयाम करे में लाग गइनीं। सोचनीं कि बेयाम कइला के बाद जम के कबिता, कहानी आ आलेख लिखम। बाकिर सोचल काम बड़ा भाग से होला। हमरा से त असहुँओ भाग ना जाने काहें हर दफे रुसले रहेला। हम का जानत रहीं कि जतना एक्सरसाइज रामदेव बाबा अपना पन्द्रह - बीस दिन के योगा शिविर में करावत होइहें ओसे अधिका एकसरसाइज मलकिनी दू दिन में करा दिहें।

बेयाम क के जसहीं मोबाइल खोल के सोचनीं कि बइठारु बा चलीं रउआ सभे खातिर कुछ लिखीं त अचके में मलकिनी कहली, "खाली लिखते रहम का? जाईं, कुछ हरियर सब्जी ले आईं।" आदेश मानहीं के रहे। सोचनीं कि बगल के दोकान से झटाक सेका कुछ ले आके दे के जान छोड़ाईं आ आराम से लिखम बाकिर ऊ काहे के। साग लेके जसहीं घरे अइनीं त कहली रउआ के बथुआ के साग के ले आवे के कहले रहे? गेन्हारी के नू ले आवल चाहत रहे।

हमरा पटल प रउआ सभे खातिर लेख लिखे के रहे। हम हाथ जोड़ के बड़ा अदब से कहनीं, "अब जवन ले अइनीं तवन बनावऽ। इहो सागे नू ह।" अतना प ऊ कहली, "दुनो बराबर कइसे हो जाई, कहाँ हँसुली कहाँ हँसुआ दुनो बराबर? चलल बानीं बात करे? जाईं, जाके गेन्हारी के साग ले आईं। " हमहूँ सोचनीं कि दू दिन के छुट्टी बा राड़ बेसहला में कवनो फायदा नइखे। जवनो शांति से कुछ लिखा जाई ऊहो ना होई। एह से हम तुरंत आज्ञा के पालन कइनीं। दोकानदार से कहनीं, "भाई हई बथुआ वाला सगवा फेर के गेन्हारी के साग दे दऽ। "" का....रउओ भोरे-भोरे फेरा - फेरी करिला? बोहनी के बेरा बा जतरा बिगड़ जाला।"

अब हम दोकानदार के का जबाब दिहीं। गते से कहनीं जाय दऽ आज भ दे दऽ। "ऊ एक पलड़ा प बथुआ आ दोसरका पलड़ा प गेन्हारी के साग बराबर क के हमारा के पोलिथिन में क के साग दे त देलख बाकिर हटते - हटते बिरही बोले से बाज ना आइल, " लीं.. रउआ लेखा चार गो गाहक भेंटा

जाय त हो गइल हमार दोकानदारी।"

हम मुँह अपना लेखा बना के घरे चल देनीं। राहता भ सोचत अइनीं। करीं त का करीं, बाहर दोकनदार आ घरे समझदार! आज त नीमने आफत में पड़ गइनीं।

बाकिर हम का जानत रहीं कि आफत अबहीं कहाँ, अबहीं त शुरुए भइल बा। घरे आके मलकिनी से डेराते - डेराते कहनीं, "लऽ तोहार गेन्हारी के साग ले आ देनी। अब खुशऽऽऽ! ""ए में खुश आ नराज होखे वाला का बात बा? रउआ ना खाइब का?" फेर पटास्टिक में से साग निकालत कहली, "आ हई का.....! ललका गेन्हारी नू चाहीं? रउआ ई हरियरका उठा ले अइनीं? रउआ के का हम कहीं! निरंकुश जी आ निरंजन चाचा कबिता लिखे के कहिहें त झट से ना कतना नीमन लिख दिले आ.... साग खरीदे में अकिल चरी चरे चल जाता। "हम गते से कहनीं, " आरे त सगवा गेन्हारिये के नू ह? का भ गइल हरियर बा तऽ?""भइल का ना! हरियर आ लाल में अंतर नइखे? लाल रंग प्रेम के प्रतीक ह। एकरा से पति - पत्नी में प्रेम बढ़ेला। रउआ ईहो ना बुझाय?" हमरा मुँह से गते से निकल गइल, "पति-पत्नी में जवन परेम बा ऊ त भगवाने जानत बारन। ""का कहनीं हँ?. . का कहनीं हँ?" बुझाता कि उनका सुना गइल। स्कूल से आ के कहब कि तनी चाह बना दऽ त, त इनका ना सुनाय बाकिर ई सभ बात तुरंत का जाने कइसे दो सुना जाला। हम एकदम सकपका के बात बदल के कहनीं, "हम कहाँ कुछ कहनीं हँ । हम त ईहे कहनीं ह कि ललका रंग साँचो प्रेम के प्रतीक ह। ""हलहीं ह, ए में का सक बा! जाईं जा के ललका गेन्हारी ले आईं। "

अब लीं अब ना बनल त आउर बनल। अब ना जाईं त घर में धनिया के चार बात सुनीं आ फेरे खातिर जाईं त बनिया के चार बात सुनीं। आगु कुइया पाछे खाई। भाग के कहाँ जाईं। दू दिन के छुट्टी पहिलके दिन छड़पट छूट गइल। ऊ त गनुमत कहीं कि चान बियफे के ना लउकल ना त शुक के ईद, सनिचर के सरहुल आ एतवार एतवारे ह। तीन दिन के छुट्टी में त सभ अँउजा-पथार लिखल भुला जाइत।

कसहूँ - कसहूँ बनिया भीरी पहुँचनीं। हाथ में पोलिथिन देखते मुँह बिधुआ के कहलस, "अब का हो गइल?" हम एकदम हकला के कहनीं, " भा... भा... भाई ह... ह.... हमरा के एकरा बदले ललका गेन्हारी दे दऽ। "अतना सुन के त ऊ अगिया बैताल हो गइल। एकदम पेनी से उसुक गइल आ बोलल, " का महराज रउओ एकदम्मे ऊहे हईं। दस रोपेया के साग ना लेनीं सतरह हाली फेरा - फेरी क रहल बानीं। बुझाता कि क रउओ भारी पत्नी भगत हईं!" खिस्सा में कइसे दो कहल गइल बा, " आपन हारल आ मेहरी के मारल, कहीं त केकरा से कहीं। मनवा में कहनीं , बुझात ना, हम पत्नी-भगत हलहीं हईं। खैर! दोकानदरवो हमरा के बूझ गइल रहे। हो सकेला हमरा के ऊ पत्नी - भगत कह रहल बा आ ऊ खुदे अपनहूँ उहे होखो। कवन ठीक, घर - घर देखा एके लेखा। दोसरा के ममिला में त सभे एड़ी अलगा के झाल बजावेला। अपना बेरा देवता पिछूती चल जाला। हार दाव के कसहूँ झनक - पटक के ऊ हमरा के ललका गेन्हारी के साग दे देलस। उहो मने - मने कहत होई कि आज केकर मुँह देख के उठनीं हँ, आ हम मने- मने कहत रहीं उफर पड़ो अइसन छुट्टी के।

सोचले रहीं कि इतमिनान से नीमन - नीमन रचना करम। ईहाँ श्रीमती जी त दोसरे रचना रच देलीं। चलीं, कसहूँ ललका साग कीने में हम कामयाबी हासिल क लेनीं। भले तनी दउड़ - धूप करे के पड़ल। बाकिर ग्रह - नक्षत्र के शांति खातिर अतना त करहीं के पड़ेला। हम होखीं चाहे रउआ सभे होखीं।घरे ललका साग लेके आ गइनीं। लाल रंग प्रेम के प्रतीक ह। मलकिनियो कहले रही कि एकरा से पति - पत्नी में प्रेम बढ़ेला। हमरो एह बात प बिसवास हो गइल रहे।पोलिथिन उनका हाथ में देके कहनीं, "लीं, हम ललका गेन्हारी ले आ देनीं।"

ऊ पोलिथिन में से साग निकाल के उलट - पलट के देखे लगली। हम चुपचाप ठाढ़ होके उनकर चेहरा के भाव - भंगिमा पढ़त रहीं। जइसे एगो कैदी कटघरा में ठाढ़ हो के चुपचाप जज साहेब के चेहरा पढ़ेला आ बेसबरी से उनकर बोले के इंतजार करेला। ओसहीं हम श्रीमती जी के चेहरा पढ़त रहीं आ फाइनल डिसिजन के इंतजार करत रहीं। अचके में ना जाने काहें उनकर चेहरा लाल हो गइल आ ऊ एकदम तमतमा के हमरा के कहली, " भगवान रउआ के किताब लिखे के बुद्धि देलन आ साग कीने के ना देलन? जइसे कबिता, कहानी आ लेख लिखे में शब्दन के छाँटिला ओसहीं साग-सब्जियो के छाँट के नू कीनल जाला?" अतना सुन के हम त एकदमे

अकबका गइनीं आ कहनीं, " अब का भइल? लाल गेन्हारी कहलू हम लाल गेन्हारी ले अइनीं। "हम खिंचा आ ताजा लाल गेन्हारी कीने के कहले रहीं। जंगल - झार उठा के ना ले आवे के कहले रहीं। ई कहिया के मउराइल डाढ़ - पात उठा के ले अइनीं। एकरा के हम का करम? एकरा के बिने - बिछे में सँउसे दिन निकल जाई। तेल - मसाला जियान होई से फरके। ए से बन्हिया रहित कि रउआ पालक के साग ले अइतीं। जाईं: ... जाके पालक ले आईं।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया, झारखंड हिन्दी साहित्य संस्कृति मंच आ झारखंड भोजपुरी बिकास केंद्र खातिर लेख लिखला से घर ना चली।"का करीं। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के खिलाफ कतहूँ अपीलो के गुंजाइश नइखे। गेन्हारी फेर के पालक के साग ले आवे जात बानीं। जबले हम पालक के साग कीन के ना आ जाईं हमार अँउजा-पथार पढ़ीं सभे। जय राम जी की।

◆ ◆ ◆

बिनोद सिंह गहरवार

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

ज्ञान दान

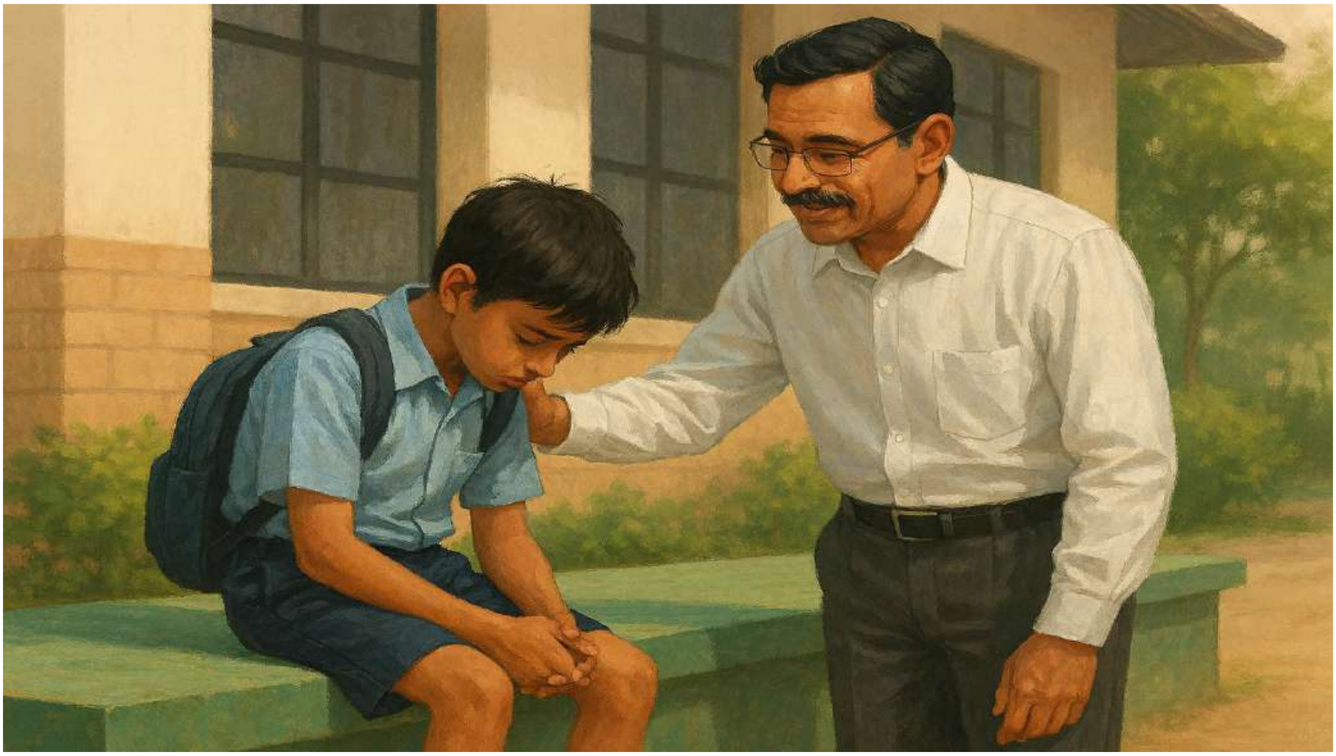

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

विद्यालय में आजु खूब गहमागहमी रहे। दिसंबर के अंतिम सप्ताह के पहिला सोमार के विद्यालय में वार्षिकोत्सव समारोह के आयोजन रहे आजु । तरह - तरह के प्रदर्शनी, खेल आ मेला के आयोजन खेल के मैदान में कइल गइल रहे।सब लइकन सब अपना टीम के साथे अपना प्रदर्शनी के बढ़िया रूप में प्रदर्शित करे में लागल रहन सं।साथी संगे मेला के आनंद लेत रहन सं। शिक्षक लोग अपना क्लास के लइकन के मनोबल बढ़ावत रहे आ आपन बढ़िया प्रदर्शन देखावे खातिर उत्साहित करत रहे। एही बीच प्रधानाध्यापक ठाकुर जी आयोजन के निरीक्षण करत मैदान में पहुंचले त एक किनारे एगो लइका के भीड़ से अलग - थलग अपना में मस्त बाकी उदास बइठल देखले त ओकरा पास चल गइले।ऊ लइका वर्ग सात के महेंद्र रहे। ठाकुर जी ओकरा से आ ओकरा परिवार के माली हालत से अवगत रहन। महेंद्र के ओह विद्यालय में नाम ठाकुर जी के कारण लिखाइल रहे।ना त महेंद्र के परिवार के आर्थिक स्थिति ओह विद्यालय में पढ़ावे लायक ना रहे। नजदीक अइला पर महेंद्र ठाकुर जी के गोड़ छू के प्रणाम कइले त ठाकुर जी पूछ देले एने अकले काहे? आ उदास काहे बाड़?

ई सुनि महेंद्र के आंखि में आंसू आ गइल आ कहले कि हमहूं चाहत रहीं आजु सांझि के मुख्य अतिथि के सामने आयोजित वाद - विवाद प्रतियोगिता में भाग लेलां।एह खातिर हम तइयारी कइले रहीं बाकिर हमार क्लास टीचर हमार नांव ना देके आपन लइका विशाल के नाम दे देले बाड़ें। बाति बूझीके ठाकुर जी कहले उदास जनि होखऽ तोहार नाम रही ओह प्रतियोगिता में।हम बात करब तोहार क्लास टीचर से। तूं समय पर

आयोजन स्थल पर चल अइहऽ।हम इंतजार करब।

सांझि चार बजे से आयोजन रहे वाद - विवाद प्रतियोगिता के। मुख्य अतिथि स्थानीय विधायक राकेश सिंह जी आ जिला कलेक्टर रमेश प्रधान रहन।वाद - विवाद के विषय रहे ' दान के महत्व '। सब छात्र लोग अपना - अपना तरह से दान के पक्ष - विपक्ष में आपन बात रखल। केहू अन्नदान, केहू कन्यादान, केहू नामदान के महिमा पर आपन बाति अपना तरह से राखल।जब महेंद्र के नाम ठाकुर जी खुद लेके आपन बाति रखे खातिर बोलवले त महेंद्र मंच पर जा आपन बाति विद्या दान, ज्ञान दान पर केंद्रित राखत ज्ञान दान के सर्वोपरि दान बतावत अंत में कहले कि आज हमनीं बीच कलेक्टर साहब प्रधान जी भा हमनीं के प्रधानाध्यापक ठाकुर जी बानीं उहां सभे ज्ञान दाने के प्रतिफल हईं आ हमनीं के आगे जीवन में बढ़ रहल बानीं जा उहो ज्ञान दाने के कारण संभव हो रहल बा। ई ना केहू चोराई भाई, ना केहू लूट ले जाई आ सब दूसरो दान के महिमा इहे बताई,इहे कहत आपन वाणी के विराम देलन त कलेक्टर साहब उठि के महेंद्र के गला लगा लेलन।हाॅल ताली के गड़गड़ाहट से गूंज गइल।एह प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार महेंद्र के मिलल आ विधायक जी महेंद्र के आगे के सारी पढ़ाई के खर्च वहन करे के आपन वचन देत कहलन कि ' ज्ञान दान महिमा अपरम्पार/ विद्या धन योजना ले आई सरकार।'

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची, झारखंड

दूगो बाल कविता

1

बातूनी नानी
ना पढ़लू स्कूलिया जाके
ना गइलू कवलेज
बात - बात में ज्ञान बघारऽ
बोलऽ लोक के बाणी
ई कइसे
बतावऽ
तूहीं बातूनी नानी।
रामायण, गीता हम सुननीं
कहे पुरनिया उहे मननीं
लोक कथा, लोक गीत से
बबुआ
जननीं छोड़ नादानी
तब जाके बननीं
तोहर बातूनी नानी।
तूहूँ छोड़ऽ मनमानी
बबुआ
कहे बातूनी नानी।

◆ ◆ ◆

2

जंगल
हाथी, भालू, बाघ
चीता, लोमड़ी, मोर
जंगल प्राणी छोड़ के भागल
बढ़ते जंगल में शोर।
मनई हाथे जंगल कटल
नदी सुखाए लागल
जंगल बीच शहर के बसते
हाथी गाँव में भागल।
जंगल बहुते देहलस तोहके
का का करीं बखान
उत्पाती मनई तू ना बूझलऽ
जंगल केतना महान।
जंगल रो रहल बा आजु
देखि के आपन रूप
जंगल मंगल दायक रहल ना
सुनऽ जगत के भूप।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची, झारखंड

धनुर्धर एकलव्य

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

एकलव्य चन्द्रवंशी क्षत्रिय परिवार में जनमल रहस। रहलें वासुदेव कृष्ण के चचेरा भाई। वसुदेव के भाई देवश्रवा के बेटा। मूल नक्षत्र में जनम भइल रहे। यदु-कुलगुरु मुनि गर्ग जनमत परिवार के जनवलें - ' ई नवजात होई बहादुर। मन - मिजाज से अड़ियल - अंखड़ियल। कुल-वंश खातिर अपसगुन जनावऽता। मान - प्रतिष्ठो पर आंच आ सकेला।' गर्ग मुनि के देवश्रवा के पुत्र शत्रुघ्न से जुड़ल अगमजानी बात जान के महाराज शूरसेन आ देवश्रवा के बहुत चिंता भइल रहे।

संजोग से शत्रुघ्न का जनम के कुछे दिन के बाद देवश्रवा के पत्नी दिवंगत हो गइली। महतारी के मरला के बाद शत्रुघ्न परिवार में खुद के उपेक्षित महसूस करे लगलें जवना के प्रभाव उनका प्रकृति - प्रवृत्ति पर पड़े लागल। नान्हेपन में चिड़चिड़ापन आ क्रूरता घेरे लागल। ओने उमिर में जेठ वसुदेव के पुत्र बलराम आ कृष्ण के प्रति परिवार आ परिवेश के प्रेम जलन के आउर बढ़ावत गइल। एक दिन पिता के डांट घर - परिवार से दूर जाए खातिर मजबूर कर दिहलस त तइसे - तइसे ऊ पहुंच गइले निषादराज हिरण्यधनु के राजधानी श्रृंगवेरपुर (प्रयाग के पास)। होनहार बालक के देखके संतानहीन हिरण्यधनु आ उनकर पत्नी सुलेखा ओह बालक के पुत्र रूप में अपना लिहल लोग।

हिरण्यधनु दत्तक पुत्र शत्रुघ्न के धनुर्विद्या आ युद्धकला के शिक्षा देवे लगलें। हिरण्यधनु खुदे बहुत बड़ धनुर्धर रहस। हिरण्यधनु मतलब सोना का धनुष के प्रयोग करेके चलते ऊ खुद हिरण्यधनु नाम से प्रसिद्ध हो गइल रहलें। धनुर्विद्या के प्रसिद्धि उनका मगध के राजा जरासंध से जोड़ दिहलस आ ऊ उनकर सेनापति के रूप में बड़ दायित्व सम्हारे लगलें एकरा बाद पश्चिम के कमान जरासंध उनका के सउंप दिहले रहस। अइसे उनकर वंश परम्परा राजा बेन से जुड़ल रहे। राजा बेन महाराज मनु के वंशज राजा अंग के पुत्र रहस। जे अपना उदंडता के वजह से ऋषि अंगिरा से सापित रहलें। उनकर एक पुत्र पृथु भूमि पर कृषि - कर्म के बढावत अपना उद्यम से ओह के उर्वर बतवलें। फेर धरती के एगो नाम पृथ्वी धराइल। बेन के दोसर पुत्र के रूप - रङ्ग देखे में ठिगना, ललियाइल आँखि आ जमुनिया काया वाला रहे, जिनका ऊ सम्मान ना

मिलत रहे जवन पृथु के मिलत रहे। एक दिन ऊ ऋषि अत्रि का आश्रम में अपना मन के पीड़ा लेके पहुँच गइलन। ऋषि अपना शिष्य लोग के उपदेसत रहस। ऊ ओहि बीच जाके ठार हो गइलन। ऋषि शांत भाव से बोललें - ' निषीदऽ मतलब बइठऽ। ' ओह दिन से उनकर नाम हो गइल निषाद। कुछ समय बितला के बाद ऊ अपना बाप बेन के कइल हर पाप अपना माथे गछत विंध्य पर्वत पर जाके रहे लगलें। फेर उनकर वंशज लोग निषाद कुल-वंश के कहाए लागल। ओही निषाद कुल के रहलें हिरण्यधनु। जेकर पालित पुत्र बन गइल रहलें मधुरा के राजा शूरसेन के पुत्र देवश्रवा के बेटा शत्रुघ्न।हिरण्यधनु के पत्नी सुलेखा शत्रुघ्न के बहुत प्यार - दुलार करत रहली। उनकर कुल छोह एके शत्रुघ्न पर लव्य रहे मतलब प्यार - दुलार भरल रहे। एह से उहाँ उनकर नाम एकलव्य हो गइल रहे।

पिता हिरण्यधनु से धनुर्विद्या सिखला के बाद एकलव्य एह विद्या में आउर पारंगत होखे के चाहत रहलें। उनका पिता से ज्ञात भइल की आज धनुर्विद्या के ज्ञाता आचार्य द्रोण से बड़ केहू नइखे। फेर एकलव्य पिता के आज्ञा से प्रतिज्ञाबद्ध होके आचार्य द्रोण किहां पहुंचलें तब तक ऊ हस्तिनापुर राज्य के राजकुमार लोग के गुरु हो के चल गइल रहस। एकरा बावजूद ऊ हस्तिनापुर राज्य के अधीन आचार्य द्रोण के गुरुकुल में पहुंच गइलन। आचार्य बालक एकलव्य से उनकर परिचय पुछलें - ' तूं केकर पुत्र हउअ आ धनुर्विद्या के विषय में का का जानत बाड़ऽ। ' एह पर एकलव्य आदर सहित निवेदन के मुद्रा में कहलें - ' हे आचार्य, हम मगध नरेश जरासंध के सेनापति आ श्रृंगवेरपुर के राजा हिरण्यधनु के पुत्र हईं। हमार अब तक के धनुर्विद्या अपना पिता हिरण्यधनु से मिलल बा। आगे हमार इच्छा बा कि हम संसार के सबसे श्रेष्ठ धनुर्धर बनीं। आज संसार में रउरा से बढ़के धनुर्विद्या के आचार्य केहू दोसर नइखे। एह से हमरा के आपन शिष्य बनालीं। '

आचार्य द्रोण एकलव्य के प्रतिभा आ धनुर्विद्या के प्रति अनुराग देखके बहुत अभिभूत भइलें। केहू समर्थ गुरु का अपना खातिर सुयोग्य शिष्य के चाह रहेला। बाकिर ऊ मजबूर रहस। ऊ एकलव्य से कहलें - ' अब हम अपना स्वतंत्र गुरुकुल अथवा आश्रम के आचार्य नइखीं रह गइल। अब हम महात्मा भीष्म के इच्छा के अधीन होके हस्तिनापुर के राजकुमारन के ही धनुर्विद्या आ युद्धकला के शिक्षा दे सकेनीं। हम तोहरा के स्नेहाशीष के सिवा आउर कुछ नइखीं दे सकत। तूं सुयोग्य धनुषधारी पिता के पुत्र आ शिष्य बाड़ऽ। धनुर्विद्या के क्षेत्र में बाण संधान के कुछ अइसन अजगुत विधि पर काम करऽ जवन अब तक केहू धनुर्धर ना कइले होखे। ' आचार्य द्रोण के वचन सुनके एकलव्य कुछ हतोत्साहित होइयो के बोललें - ' अब हम त रउरा के मने मन आपन गुरु गछ लेले बानीं। जदि कहीं एकान्त में अभ्यासो करब त गुरु रूप में मन में राउरे छवि रही। अइसे हम शुरू से बाण - संधान के दरम्यान प्रायः अपना तर्जनी आ अनामिका के ही प्रयोग करिले। पिता के बार - बार चेतवला के बावजूद ना जाने काहे हमरा इहे ठीक लागेला। ' गुरु के आज्ञा से उनकर शिष्य लोग आश्रम खातिर बन में लकड़ी ले आवे गइल रहे।

सांझ होखे का पहिले एकलव्य आश्रम से बाहर आ गइलें। एकरा बाद उहाँ से कुछेक दूर निर्जन बन के कुछ हिस्सा साफ करके अपना ला एगो कुटिया बनाके धनुर्विद्या के अभ्यास आरंभ कर दिहलें। कुछ समय बाद आचार्य द्रोण अपना राजकुमार शिष्यन के सङ्गे ओही निर्जन बन में बिचरत चलल जात रहलें। सङ्गे - सङ्गे एगो कुत्तो चलत रहे। एही बीच कुत्ता के कुछ आभासल आ ऊ आगे - आगे दउड़े लागल। जब एकलव्य के नजर ओह कुत्ता पर पड़ल त ऊ भूक - भूक के ध्यान भंग ना करे, एह ख्याल से ओकरा मुंह में अस्त्रलाघव बान - संधान के विधि से सात तो बान मार के ओकर मुंह भर दिहलें। कुत्ता लौट के आचार्य द्रोण आ राजकुमार लोग के पास पहुंच के एह चीज से अवगत करवलस। अइसन अनूठा बान - संधान जवना से मुंह घवाहिल ना भइल रहे, देखके अर्जुन सहित द्रोण आदि दंग रह गइलें। अर्जुन का लागल ई जे भी होखे अद्भुत धनुर्धर बा। एह विद्या के ज्ञान त हमरो पाले नइखे। आचार्य द्रोण का भी लागल कि जदि केहू एतना संतुलित धनुर्धर बा तब अर्जुन सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर कइसे बन सकेलें। दुर्योधन मने मन खुश भइल कि केहू अइसन त बा जे अर्जुनो से बड़ धनुर्धर बा। फेर सभे कुत्ता के पीछे - पीछे एकलव्य के कुटिया पर पहुंचल। द्रोण एकलव्य के पहचनलें कि ना पहचनलें, बाकिर एकलव्य अपना मानस गुरु के पांव छू के अलग ठार हो गइल। द्रोण पुछलें - '

तूं के हउअ आ तोहार गुरु के ह? ' एह पर एकलव्य आपन परिचय देत आचार्य द्रोण के ही गुरु बतावत पहिले के सब प्रसंग सुना गइलें। आचार्य द्रोण एकलव्य के प्रतिभा आ गुरु के प्रति भक्ति देखके अभिभूत रहलें। ई दृश्य देखके अर्जुनो अचंभा में पड़ल रहलें। एतने में आचार्य द्रोण का अपना प्रिय शिष्य अर्जुन के सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर बनावे के इच्छा मन पड़ल आ ऊ कुछ देर सोच में पड़ गइलें। फेर उनका एकलव्य द्वारा अपना विषय में बतावल बात मन पड़ गइल आ ऊ बोललें - ' जब तूं हमरे के गुरु मानके धनुर्विद्या के अभ्यास कइले बाड़ऽ आ बहुत सिद्ध धनुर्धर होइयो गइल बाड़ऽ त गुरु के दक्षिणा त देवे के पड़ी। ' ई सुनके एकलव्य बोललें - ' गुरुदेव, अपने के जे आदेश होखे हम प्रस्तुत बानीं। ' एकलव्य के वचन दिहला के बाद आचार्य द्रोण बोललें - ' त ठीक बा। तूं आज हमरा के वचन द कि कवनो युद्ध में बान - संधान के दरम्यान अपना अंगूठा के प्रयोग ना करबऽ आ कबो अइसन अवसर आवे जब हस्तिनापुर राज्य परिवार के विरुद्ध युद्ध करेके पड़े त ओह युद्ध के हिस्सा ना बनबऽ। '

दक्षिणा रूप में आचार्य द्रोण के माँगल दूनों वचन के माथ नवाके स्वीकार करत एकलव्य खुद के धन्य-भागी मानत रहलें आ लजाइल आचार्य द्रोण अपना ओह अतुलनीय शिष्य के आशीषत वापस हो गइलें।

जब एकलव्य वापस अपना राजधानी श्रृंगवेरपुर पहुँचलें त पिता हिरण्यधनु का खुशी के ठिकाना ना रहल।

कुछ अंतराल के बाद एकलव्य के विवाह सुनीता नाम के एगो निषाद सुन्दरी से हो गइल। एक दिन मगध के राजा जरासंध के बुलावा पर हिरण्यधनु एकलव्य के सङ्गे जरासंध के दरबार में पहुंचलें। उहाँ कृष्ण का मथुरा पर चढ़ाई के तइयारी होत रहे। एकलव्य का अपना प्रतिभा के देखावे के अच्छा अवसर मिलल आ ऊ जरासंध का विशाल सेना के अंग होके मथुरा पर चढ़ चललें। मथुरा के गुप्तचर से एकलव्य के विषय में जब कृष्ण के जानकारी मिलल त ऊ अवसर पाके एकांत में एकलव्य के बतवलें - हे एकलव्य, तूं हमार चचेरा छोट भाई हउअ। हम तोहरा से युद्ध नइखीं लड़े के चाहत। ' फेर ऊ एकलव्य से आपन पारिवारिक सम्बन्ध समुझावत युद्ध से दूर रहे के सलाह दिहलें। एह पर एकलव्य कृष्ण के ताना देत कहलें - ' ठीक बा कि हम तोहार भाई - कुटुम्ब बानीं। बाकिर तूं कब अपना कुटुम्ब के खेयाल कइले बाड़ऽ। अपना मामा कंस के त बकसबे ना कइलऽ त फेर हमरा मन के कमजोर काहे कर रहल बाड़ऽ। अब परिणाम जे होखे, लड़ाई से पीछे पांव करके हम महाराज जरासंध आ पिता हिरण्यधनु के सङ्गे घात ना कर सकीं। '

आगे ओह युद्ध में जरासंध बुरी तरह से पराजित होके वापस हो गइलें आ एकलव्य मगध होत पिता सङ्गे अपना राजधानी श्रृंगवेरपुर लौट गइलें। पिता के मृत्यु के बाद एकलव्य श्रृंगवेरपुर में राजा भइलें आ उनका भीतर कृष्ण आ बलराम के प्रसिद्धि के प्रति ईर्ष्या के भावना बढ़त गइल। जब पुंड्र के राजा पौंड्रक, जे खुद के वासुदेव बतावत कृष्ण - बलराम के मारे के उद्देश्य से द्वारिका पर चढ़ाई करे जात रहे तब ओकरा जानकारी मिलल कि श्रृंगवेरपुर के राजा एकलव्य के मन में भी कृष्ण - बलराम के प्रति बैर भाव बा । फेर ऊ कृष्ण - बलराम के विरुद्ध लड़ाई में साथ देवे खातिर एकलव्य के नेवता भेजलस । जवना के स्वीकार करत एकलव्य पौंड्रक के सङ्गे द्वारिका पर चढ़ाई कर दिहलें। ओह चढ़ाई में पौंड्रक मारल गइलें आ बलराम के हाथे एकलव्यो घवाहिल होके दोसरा द्वीप के ओर अपना सेना सहित निकल गइलें।

प्रो. जयकान्त सिंह ' जय'

एकलव्य के वसुदेव के चचेरा भाई देवश्रवा के पुत्र बतावत हरिवंश में लिखल बा -

' अश्मक्यां प्राप्तवान् पुत्रमनाधृष्टिर्यस्विनम्।

निवृतशत्रुं शत्रुघ्न देवाश्रवा व्यजायत।।

देवाश्रवा प्रजातस्तु नैषादिर्य: प्रतिश्रुत:।

एकलव्यो महाराज निषादै: परिवद्धित: ।। '

अर्थात् - वसुदेव जी के तीसरका भाई अनाधृष्टि अश्मकी से यशस्वी नाम के पुत्र पैदा कइले आ दोसर भाई देवश्रवा शत्रुअन के हरावे वाला शत्रुघ्न नाम के पुत्र उत्पन्न कइलें। कवनो कारन से बालपन में ही तेयाग दिहला के चलते एह देवश्रवा के पुत्र के निषाद लोग पाल - पोस के सेयान कइल। एही से ऊ निषादवंशी एकलव्य के नाम से प्रसिद्ध भइलें।

(' धनुर्धर एकलव्य ' के ई कथा महाभारत, विष्णु पुराण, हरिवंश पुराण आ श्रीमद्भागवत में वर्णित एकलव्य विषयक एक - एक संदर्भन के सहारे लिखल गइल बा।)

◆ ◆ ◆

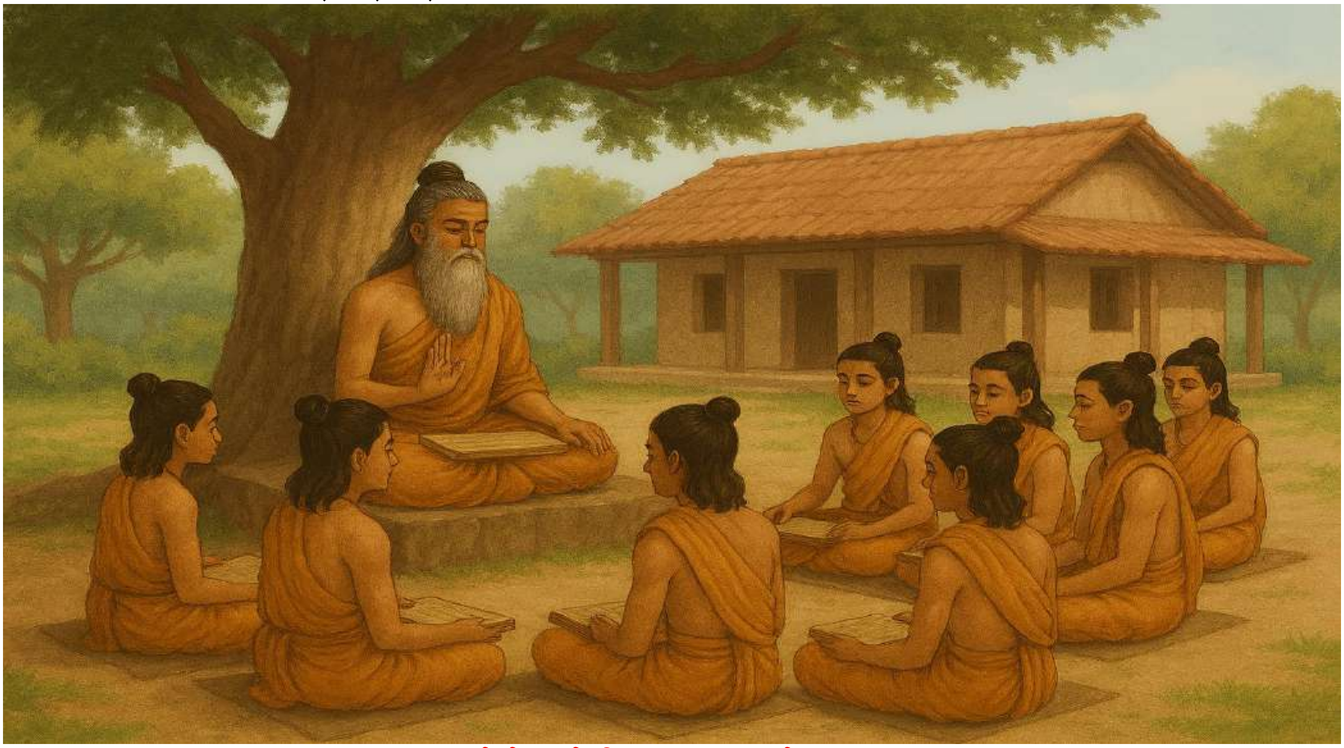

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

मनवाँ के मार के

सूपे से साजन के सुधिया फटकि के
बढ़नी से बिरह बहार के,
धनि रहि जात मनवाँ के मार के।

गोल तवा रोटी चूल्हा पर
जिनिगी नाचे गोल।
घुमि घुमि आवे एक्के ठइयाँ
लोग कहे बकलोल।
बनि भाप उड़ि जात आशा के अदहन
जुगवे कतनो सम्हार के
धनि रहि जात मनवाँ के मार के।

बाबू बूढ़ बयस के लाठी
बबुनी करी अँजोर
सपना आँचर खूँट बान्हि के
पोंछे नैना कोर
झंझट के बर्तन टन टन बाजेला
पीरा बढ़ावे कपार के
धनि रहि जात मनवाँ के मार के।

एगो छूटल दूसर पवली
ई चिरई खरदोन
तिरिन जोरि के छवली छाजन
बखरा आइल कोन
बीचे सजना के नान्ह दुलरुआ के
साथे सजी परिवार के
धनि रहि जात मनवाँ के मार के।

दुर्गा सीता राधा लछिमी
बनि के रहली रोज
सबके जेवन दिहली पुरहर
अपना के भल ओज
उड़ली ना कबहूँ खुले नभ में खुलि के
देखली ना ए संसार के
धनि रहि जात मनवाँ के मार के।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
प्रधान सम्पादक – 'सिरिजन'

अवकिल जी के"लकीर"

श्री रामयश "अवकिल" जी के नया कहानी - संग्रह लकीर देखि के पहिले लागल कि ई झारखंड, जमशेदपुर से गंगा प्रसाद अरुण के संपादन में प्रकाशित होखे वाली "लकीर " पत्रिका के अंक हऽ। बाकी भीतरी देखते एगो अईसन प्रयास लउकल जवन सैकड़ों बरीस से गरीब, वंचित, दलित लोग के जीवन में पसरल अन्हरिया के हटा के ओकरा के बदलल, अंजोरिया के ओरे ले जाए वाला एगो बेजोड़ कहानी- संग्रह बा लकीर। सभ कहानी दलित- विमर्श के कहानी मानल जइहन स हालांकि कुछ विद्वान लोग के कहनाम बा कि अच्छा साहित्य के घेरा में बान्हल ठीक ना होखे।

संग्रह के पनरहों कहानी- सूझ-बूझ, नेवर, उल्लंघन, ई भरम कब टूटी, कोरहाग, संगोरल सपना, जिद, मलिकार, लकीर, कारवां, टुअर, भूख, शनिचरी, हिंजड़ा आ भनक में लेखक दलित समाज के बीच पइसल गरीबी, सामंती बरियारी आ अत्याचार के बीच संघर्षरत, आगे बढ़े वाली जवन मानसिकता के चित्र उड़ेहले बानी तवन प्रशंसनीय बा। सूझ-बूझ कहानी में हरिजन लोग के छटपटाहट एकदम स्पष्ट बा कि अब उ दाल ना गली। नेवर में गरीब पिछड़ा के शिक्षा से दूर राखके आपन हुकुम चलावत रहे के जहां चित्रण बा तहंवे लाख-बाधा के बादो आगे बढ़े के कोशिश बा। उल्लंघन कहानी में समाज में व्याप्त दहेज - प्रथा प करारी चोट बा। एह में बाप-मतारी से बेफांट होके लइका के तिलक चढ़वावे के जिकिर बा जवन आज के समाज में फैलल दहेज-प्रथा प तगड़ा चोट बा। एकरे त आज जरूरत बा। ई भरम कब टूटी में छुआ-छूत प चोट बा। ई कहानी देखावतिया कि सभकर खून खूने होला। पार्वती के जान जाए के नउबत रहे बाकिर हरिजन नारायण खून देलें तबे बचली। कोरहाग कहानी में विधवा-विआह के स्वीकार करे के ज़िद बा आ मयभा मतारी के सौतेला लड़िकन प अत्याचार बा। विधवा त अंत में बरिआर धोखा देली आ ऊ अपना मरद के तलाक देके तीसर बिआह क लेली। ई कहानी छल-प्रपंच के कहानी बा।

संगोरल सपना गरीब के फर्श से अर्श तक जाए के कथा बा। ई कहानी आदमीयता के कहानी

बा, संघर्ष के कहानी बा बाकि एह में लेखक बड़ा जल्दीबाजी में लखार होत बानी। अतना सपाटबयानी अटपटाह लागता...।

जिद कहानी में स्त्री के बांझपन, विधवा भइला प शुभ काम से अलगा राखे के कुप्रथा पर चोट बा। दुख बा कि ई कुप्रथा आजो जारी बा।

मलिकार में सामंती बरियारी के जीयत-जागत चित्र बा। गरीब के इज्जत प हाथ डाले के आपन अधिकार समझे वाला के दंडित करे के चित्र उरेहल गइल बा।

लकीर में जाति-प्रथा प चोट बा। एहमें आनर-किलिंग के दृश्य सिनेमा अस चलत लउकता जवन आजुओ हो रहल बा।

कारवां में दास-माफिया के कारगुजारी के जवन जिकिर बा ऊ आजो बिहार में चलता आ एकदम प्रासंगिक बा।

टुअर कहानी अवसरवादिता तथा स्वारथ के कहानी बा जवना में नयकी-पीढ़ी खाली आपन स्वार्थ साधे में लागल बा। ओकरा परिवार से कवनो मतलब नइखे...।

भूख में दलित जाति के आगे बढ़े से रोकल आ ओकर प्रतिशोध बा...।

शनीचरी में मुसहर जाति के लइकी के संघर्ष आ संघर्ष के आगे जीत दर्ज बा।

हिंजड़ा कहानी में हिंजड़ा समुदाय के जिनिगी में व्याप्त दरद, भेदभाव आ सामाजिक हिनाई बा।

भनक में वैश्या-जीवन के दरद, भूख आ ओहसे निपटे के संघर्ष बा।

एह कहानी संग्रह में सारा कथानक सामाजिक कुप्रथा, भेदभाव, छुआछूत के समस्या आदि से भरल बा। परिवेश एहतरे रचाइल बा कि बुझाता कि ई त बगले के (कथा) परिवेश बा। संघर्ष त डेगे-डेग बा। भाषा ठेठ बा। शैली में तनी-मनी सपाटबयानी आ जल्दीबाजी बा लेखक के कहानी के कलेवर कुछ अवरू बड़ राखे के चाहत रहे। बहुत जल्दी में निष्कर्ष प पहुंच जातानी। शीर्षक के दिशाई देखल जाउ त शीर्षक एकदम चुभत,भक देना कहानी के मरम समझावे वाला बन पड़ल बा। एह में देखल,भोगल यथार्थ के चित्रण बा। मलिकार कहानी वाला जुग अब गइल। अतना बेंवत आज केहू के नइखे। शनीचरी कहानी आज के जरूरत बा। मुशहर समाज आजो निशा में लिप्त आ शिक्षा में सबसे पीछे बा। संगोरल सपना भी बहुत जल्दी मुकाम प पहुंच जाता। थोड़ा विस्तार देल चाहत रहे।

कुल मिलाके लेखक के ई कहानी संग्रह समाज में व्याप्त अन्हरिया के हटाके अंजोरिया फैलावे वाला प्रकाश-स्तंभ बा। ई लेखनी के ई प्रयास जारी रहे के चाहीं।

◆ ◆ ◆

अजय कुमार
आरा, भोजपुर

होली

होली के पावन त्योहार
देखऽ घर- घर आइल बा
धूमधाम बा गली - गली में
मस्ती मौज समाइल बा
अवसर ई अब कब आई
रही भाग में के नय भाई
इधर - उधर ताकल छोड़ीं
बखत बड़ी उत्साइल बा.. होली.।
लाल पीयर करिया हरियर
सब रंग के बा लउकत लोग
हलवा पूरी ठेकवा पुआ
रंग छप्पन के बनल बा भोग
मुँह मारके मन मोटाव
चलऽ चलऽ सब एक हो जाव
मेल मिलाप के दिन बा आज
सबके मन हरसाइल बा.. होली .. ।
राधा - किसना संगे संघतिया
धमार मिलके मचावत बा
का मथुरा का वृन्दावन बा
कासी गोकुल नाचत बा
कर लऽ तू भी हँसी ठिठोली
अन्लेबा होली खुसी के झोली
रंग लऽ सभे के एगो रंग में
बहार रंग के छाइल बा.. होली..।
हाथ से अवसर नय खे जाई
आवऽ सभे कोय नाची गाई स
ढोल ढोलक झाल नगाड़ा
चलऽ चलऽ जा मिलके बजाई सऽ
आज बची नय कोय सतरंग से
बरसावऽ रंग अबीर गुलाल हो
गाँव गली हर नगर सहर के
मन सभे के हरियाइल बा.. होली

◆ ◆ ◆

गोवर्धनसिंह फ़ौदार
'सच्चिदानन्द'
मॉरीशस

फागुनी बयरिया

फागुनी बयरिया लचकि झूमे डरिया-
मंद मंद महकेले अमवा मोजरिया।
सुघर लागेला-
मोरा खेतवा सीवनवा् सुघर लागेला-
सरसो सरस रस-तीसी अलबेलिया-
चनवाँ रहर रस चूसे रे तितिलिया।
सुघर लागेला
फूल फूलेली केरइया सुघर लागेला-
महुआ क डरिया भरल रस बेरिया-
भँवरा उड़ेला रस कली किलकेरिया।
सुघर लागेला-
पात पीपर पकड़िया सुघर लागेला-
अमवाँ के बगिया में कूके कोइलरिया-
नवा नवा पात लाल लाल लागल लरिया।
सुघर लागेला-
रस टपके बउरवा- सुघर लागेला-
चिरइन क गीतिया मधुर भोरहटिया-
उड़ि उड़ि चूसे रस रसगर खेतिया।
सुघर लागेला-
साँझे बाँस झुरमुटिया सुघर लागेला-
सहजन सफेद फूल फूलें सब डरिया-
फेरि देला भँवरा जो महके नजरिया।
सुघर लागेला-
जइसे रतिया अँजोरिया सुघर लागेला-
खेतवा भरल झूमे गेहुँआ क बलिया-
अनिवन फूल फूले घास पात कलिया।
सुघर लागेला-
इन्द्रधनुषी सीवनवाँ सुघर लागेला-
सहज सयानी मधुमासी ऋतु रतिया-
बहकेला मन मोर रति राग बतिया।
सुघर लागेला-
रस भरल फगुनवाँ सुघर लागेला-
दुलहिन धरती सजल बा अकसवा-
पियरी पहिनि उगे पीयर प्रकशवा।
सुघर लागेला-
ऋतुराज मधुमसवा-सुघर लागेला-

राकेश कुमार पांडेय

◆ ◆ ◆

चइत महीनवां

चइत महीनवां चइती गावति,बिरहि आगि झझिकावति हो।

बिरहिन झंखति मनसेधू ना,कुंहुकति लोर चुआवति हो।

बंसवरिया में कोइलरि डाहति,डंहकि-डंहकि सुलुगावति हो।

बिपति क मारलि अधिये रतिया,सिंहकति बोलि सुनावति हो।

कन्त भइल परदेसी जबसे,बहुते याद सतावति हो।

जागति रतिया करवट बदलत,पपिया मोंहि डहुरावति हो।

बड़ा उदासल राति चनरमा,देहियें आग लगावति हो।

बिरहि बान बेधत बा छतिया,सेजिया बस तलिफावति हो।

चइति दुपहरी झंखत बीतिहें,गवना बड़ा सतावति हो।

भट्ठा छोड़ि के आवा रजऊ,सिंहकति राति बितावति हो।

चढ़ल उमिरिया जरते छतिया,बाउर मन धधिकावति हो।

पानी-पानी पसिजत देहियां,अंगुरी बस पुटिकावति हो।।

कवन सिंगार झरोखवे झांकी,काजर लोर चुआवति हो।

मातल देहियां सरकति अंचरा,ननदी देखि रिगावति हो।

बजत मोबाइल माहुर लागे,बहुते याद रोआवति हो।

अगर नअइबा नइहर जाइब,रहबा रोज बोलावति हो।

चनरवती बा आछर-गूजर,कटिया मरद करावति हो।

संघवे गवने आइल ऊहो,बोझा खोलि धरावति हो।

चटक चुनरिया पियरी पहिने,अल्ता रोज लगावति हो।

किसिम-किसिम क बुन्ना साटे,अंचरा चलत उड़ावति हो।

गोड़रंगना क लाल महावर,छमकति गोड़ बजावति हो।

चुंहुकति राति-दोपहरी कुलुचति,चटकति रोज सुनावति हो।

बनल जोगिनियाँ जागीं हमहीं,चइता रोग बढ़ावति हो।

सोक्कन काका खरिहनवें में,डहुरि-डहुरि धनि गावति हो।।

◆ ◆ ◆

फगुआ गीत गवाइल हो।

झाल मृदङ्ग ना ढोल मजीरा,हुड़ुक बजत सुनाइल हो।
कहीं नाच ना होत लवंडा,फगुआ गीत गवाइल हो।
बीत गइल मय फागुनअसहीं,जवन जमाना आइल हो।
झिलमिटवा बो हरदम खाली,चैटिंग में अंझुराइल हो।
इंस्टाग्राम पर फोटू डालत,गावत नाच भीराइल हो।
बार कटवले ठड़ी में बोले,चोली खोंसि मोबाइल हो।
तर-तिउहार उछाह न कउनों,गउवां सुन्न बुझाइल हो।
आवा देखा गंवई नवका,जहवां प्रीति पराइल हो।

घर में लइका दुअरा चउवा,घरवा बुझा भराइल हो।
लेकिन इहे न लउके कतहूँ,दुअरे गेट तनाइल हो।
खेदिके गइया बरध न चरनी,कुक्कुर नसल बन्हाइल हो।
ख़लीहर फेकना जोखना झिंगुरा,खाली तास फेंटाइल हो।
मुफुत क राशन बइठल घोंटत,जवने बचल बिचाइल हो।
सांझ क दारू गांजा चीलम,पीयत जहैं भेंटाइल हो।
रगरा-झगरा रढ़िये सगरो,जतिये-जाति बंटाइल हो।
इरखा टीस में सुलुगत अन्हें,अन्हें मूँह फूलाइल हो।

सबही बन्न बा अपने घर में,मरघट गांव जनाइल हो।
पटरी ना त बोला-चाली,परेम-पियार हेराइल हो।
कतनों हेरलीं इहे नदारत,जाने कहां लुकाइल हो।
झिंगनी भउजी मूंह फूलउले,धोतियो कहाँ रँगाइल हो।
भूत-परेत क झगरो ना अब,झुठहीं मूँह झुराइल हो।
बहत पनारा डुबल डहरिया,रोकलस रार रोपाइल हो।
पटत ना कतहूँ डर-दयाद में,अंगने भीत जोराइल हो।
जवन जनाना कहेले खाली,ऊहे बात मनाइल हो।

भयबद्दी बा जबसे भागल,तबे से डी जे आइल हो।
रङ्ग गुलाल अबीर कहीं ना,होलिको कहाँ फूँकाइल हो।

फूहर गीत बजत बा खाली,अंगुरी कान ठूँसाइल हो।
बेटी-बहिन क लाज न कउनो,सगरो हया पराइल हो।
कहाँ जोगीरा छेदिया गावे,बइठल चिलम पियाइल हो।
नशा उतरते चट्टी चंहुपे,दारू जहां किनाइल हो।
बड़हर रोगवा फइलत सगरो,ठीका खूब खोलाइल हो।
जवन मांग जनता के ऊहे,रजओ देत बुझाइल हो।

गयल कमाये झम्मना डिल्ली,बाबू से अलिगाइल हो।
जबसे भइल अमिरिती फरिका,चंहकत बोल सुनाइल हो।
नई-नवेली गौने आइल,पुरहर गोर भराइल हो।
घूंघुट काढ़े उल्टा पल्ला,अबहीं लोच-लोचाइल हो।
झलके लक-लक गाढ़े लाली,काजर चोंक कढ़ाइल हो।
चम-चम बुन्ना लाले सेन्हुर,लमहर केश ढोंपाइल हो।
भरल बा चूड़ी अल्ता अंगुरी,पोरे-पोर ललाइल हो।
लाल महावर मेंहदी छागल,रूपवे रूप लजाइल हो।

लप-लप-लपकत नरगद जइसे,पतरे ओठ रसाइल हो।
उखिया जइसन रसगर पातर,लचकत पाछ भराइल हो।
नयन-अयन धनि गोल चनरमा,पूनमी लाज लजाइल हो।
लाल बसंती पतई जइसे,चुनरी झलक देखाइल हो।
अली-कली मतवाला भंवरा,खोजत खिलल सोखाइल हो।
कवन रूप रस भाखीं अइसन,फांकी फांक फराइल हो।
परस कान्ह में रहि-रहि सरके,अंचरा बोझ बन्हाइल हो।
देखिके अइसन रूप सुहावन,फगुआ गीत भुलाइल हो।

राकेश कुमार पांडेय

◆ ◆ ◆

नवा बरिस

हिंदू सम्वत बीतत भईया,होलिकी अखिरी रात।
नवा बरिस त चइत महीना,सुखद सुहानी प्रात।
घर समाज आ गांव देश क,जेतना दुःख क बात।
जोरि-बटोरि के फूंकल जाई,आवत होलिकी रात।
कुशल-क्षेम मनई जीवन में,धुरहड्डी शुरुआत।
नवा बरिस अभिनदंन देखा,फगुआ रङ्ग बरसात।
पवन सुगन्धित पतई ललकी,दिशि-दिशि नवल सुहात।
टेसू देखा पाकड़ पीपर,सहजन गन्ध मोहात।

अरे!बसंती बउर आम क,महुआ रस टपकात।
बउराइल भँवरा क टोली,सेमल पर मंडरात।
कली कामिनी कुसुम अनंदित,चूसे कहां अघात।
सरस राग रस डूबल देखा, घुम्मत बा छिछियात।
नया राग लय कोयल गावत,नाचत मोर लजात।
गौरइया मैना बुलबुल आ,सुग्गा टेर सुनात।
बंसवारी बन मुर्गी चेंचा,बकुला उड़त देखात।
नवा चनरमा रात नवेली,स्वागत सजे बुझात।

बड़ा पबित्तर फागुन देखा,अंतिम मास कहात।
जौ केराय आ चन्ना हाबुस,भूंजल खांय अघात।
चुटुक लगेला नून आ मरिचा,होरहा फूँकि के खात।
कचरस पीयत दही डालि के,फगुनहटा अलिसात।
फगुआ गावत ढोल मजीरा,सर्रर बोल सुनात।
ससुरारी में सरहज सढूंइन,फेंकत रङ्ग सुहात।
भले दांत ना मुंह में समधी,समधिन देखि सिहात।
हमरो भउजी बड़ी रंगीली,इनरी जवन कहात।।

इनरउती बा छैल-छबीली,भरल देंह सोहरात।
चढ़ते फागुन गवने आइल,पुरहर भरल बुझात।
लमहर काजर कोर निकासे,लाली गाढ़े पात।
पुनवासी क चान अँजोरिया,झलकत जूरा रात।
लक-लक लाली लाल ललाई,पोरे-पोर देखात।
भरल-पुरल रस मातल बड़हर,अंचरा भरल सुहात।
घूघुट काढ़ि के लमहर देखा,झलकत रूप मोहात।
छटक के धई पोते ले रङ्गवा,भसुरो कहाँ परात।

◆◆◆

राकेश कुमार पांडेय
गाजीपुर,उत्तर प्रदेश

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

आजादी

अइसे थोरे मिलल अजादी...
बहुत लोग देहलें कुर्बानी,
देहलें आपन भरल जवानी,
अँगरेजन से लोहा लिहलें,
तब जाके रूकल मनमानी,
अइसे थोरे मिलल ....
देस के चिंता हरदम कइलें,
सुभइत अन्न कबो ना खइलें,
देस के खातिर हँसते हँसते,
फाँसी के फंदा चढ़ गइलें,
अइसे थोरे मिलल ....
केतने गोद भइल बा सूना,
केतने घर के गइल नमूना,
बहुत सुहागिन भइली विधवा,
टुटल पहाड़ भइल दुःख दूना,
अइसे थोरे मिलल ....
अँगरेजन के कुछ ना बुझलें,
जहवें पवलें उहवें जुझलें,
भारत माता के आजादी,
आपन बड़का फर्ज समुझलें,
अइसे थोरे मिलल ....
भगत सिंह के के ना जाने,
के ना बिस्मिल के पहचाने,
राजगुरू सुखदेव सभे के,
पूजीं हम भगवान समाने,
अइसे थोरे मिलल ....

आईं हमनीं माथ झुकाईं,
भारत माँ के कर्ज चुकाईं,
लोकतंत्र के मजबूती में,
आपन आपन फर्ज निभाईं,
अइसे थोरे मिलल ....

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
ग्राम+ पोस्ट- रोआरी
जिला- पश्चिम चम्पारण

पूजा घर

मनोहर दुनो हाथ जोड़ के भगवान से कहलें - "प्रभु हमरा के एगो बड़हन मकान दिहीं ताकि हम रउरा खातिर अलग से पूजा घर बना के राउर पूजा कर सकीं।"

"हम तहार ई काम नइखीं कर सकत"- भगवान कहलें ।

"काहें प्रभु?"- मनोहर अचकचा के पुछलें।

"अभी तू त हमरा के हरदम अपना आँखि के सोझा राखेलऽ। भोरे, साँझ के हमार पूजा करेलऽ। हमरा आगा माथ नवावेलऽ।हम जे तहरा के बड़हन मकान दे देबि त तू खाली भोर आ साँझ के हमार पूजा करबऽ। हमरा आगा हर समय माथ ना नवइबऽ। आउर समय हमरा के अपना आँखि से दूर रखबऽ।"- भगवान जबाब दिहलें।

"लागऽता कि भगवानो कलजुगी हो गइल बाड़ेन।"

हरदम साथ रहला के लोभी हो गइल बाड़न।"

मनोहर मने मन सोचलें।

◆◆◆

मनोकामना सिंह

जमशेदपुर, झारखंड

1. हहरा के बहेला

हहरा के बहेला चइत में बयरिया
कवना कोना में लुकइले सांवरिया
बिहँसे ला हमरो बदनवा
परनवा नाही अइले।

भक-भक भभकेला पछुआ के झोंका
हियरा के बुझे वाला आइल नाही सोखा
बितियो गइल बा फगुनवा
परनवा नाही अइले।

करवट बदलत बिति जाला मोर रतिया
मति कादो मरले बिया कवनो सवतिया
बउराइल बाटे मोर मनवा
परनवा नाही अइले।

रोइ-रोइ हियरा के पनिया सुखावल
कौने जनम के ई बदरवा बा छावल
सकुचात बाटे अब दरपनवा
परनवा नाही अइले।

हारि पाछि के अब त 'राम' गोहराईं
बिरहा के पीर के कवन बा दवाईं
जुड़इले ना विनायक ई नयनवा
परनवा नाही अइले।

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

◆ ◆ ◆

2. अइलें सजनवाँ

साँझीये से बिहँसे ला मनवा हो रामा,
बैरी पलँगवा
आधी रतिया के निनिया ना आवे हो रामा
बैरी पलँगवा

हहरा के बहे जब पछुआ के झोंका,
मोजरि के महँक से हिया भइल चोखा
काँट लेखा लागेला सेजरिया हो रामा
बैरी पलँगवा
साँझीये से बिहँसे ला मनवा हो रामा,
बैरी पलँगवा

अँखिया के लोरवा से लिखतानी पाती
धड़केला की ना तोहार हिया ए सँघाती
अइबऽ कबले हमरो पजरिया हो रामा
बैरी पलँगवा
साँझीये से बिहँसे ला मनवा हो रामा,
बैरी पलँगवा

सोरहो सिंगरवा मोर भइल बा बटोही
परदेस जाके काहे भइल तू निर्मोही
फड़फड़ाता मोर कोमल करेजवा हो रामा
बैरी पलँगवा
साँझीये से बिहँसे ला मनवा हो रामा,
बैरी पलँगवा

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

◆ ◆ ◆

3. चहकेला घरवा

चहकेला घरवा दुआरवा हो रामा
अइलें सजनवाँ

रचि रचि धनिया भोज बनवली
सोने के थाल में जेवना सजवली
जेवेलें बारहों बिजनवाँ हो रामा
अइलें सजनवाँ

बाल गोपाल संघे फुलवो फुलाइल
पेन्ही के पियारिया मन अगराइल
निरखे ले सइंया सेजरिया हो रामा
अइलें सजनवाँ

पोरे पोरे प्यार सजन बरिसावेलें
ललका गुलाब मोरे जुड़ा में लगावेलें
मारेले तिरछी नजरिया हो रामा
अइलें सजनवाँ

चहकेला घरवा दुआरवा हो रामा
अइलें सजनवाँ

◆ ◆ ◆

4. राम जी के जनम

राम जी के भइले जनमवा हो रामा
दशरथ के भवनवा

पंडितजी वेद मंत्र ऊँचारे
सखी सहेली फूल माला सवारे
चइत के शुभ महिनवा हो रामा
दशरथ के भवनवा

चारो भइया के चरण जब आइल
अवध भूमि इतिहास में लिखाइल
देखलस पूरा जमानवा हो रामा
दसरथ के भवनवा

पावन धरती अयोध्या नगरिया
रामजी के बनल भव्य मंदिरिया
खुशियाँ मनवेला जहाँनवा हो रामा
दशरथ के भवनवा

रघुवर के आजु भइल पगबन्दन
पूजा गणेश कइले अभिनंदन
दियना जरवले अंगनवा हो रामा
दशरथ के भवनवा

राम जी के भइले जनमवा हो रामा
दशरथ के भवनवा

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"
श्रीकरपुर,सिवान

एकांकी - पत्थर के जहान

स्थान --------- सोमेसर के घर समय - दिन

(सोमेसर गमछी रखत बाड़न कि परमेसर आवत बाड़न)

परमेसर ------- केने बाड़ऽ ए सोमेसर भाई ?

सोमेसर ------- आवऽ परमेसर भाई आवऽ, घरहीं में बानीं, कहऽ का कहताड़ऽ ? नहाए जात रहीं हो।

परमेसर ------ अब नहाहीं के न रह गइल बा, तोहरा । आदमी एगो बेटी के बिआह के बोझ उतार के नहाला,आ अब तूं भतीजा के बिआह के भार उतार के नहात बाड़ऽ।

सोमेसर ------ भतीजो के बिआह के भार पार क के औलाद ओला कहाए के नइखे, नसीब में।

परमेसर ------ कइसे कहइबऽ औलाद ओला, किस्मते जब बाउर बा त। जिन्दगी के तालाब में लगइलऽ सिंघाड़ा आ लाग गइल सेवार ।

सोमेसर ------ हं रमेसर भाई, इहे किस्मत के मार कहाला। अब अपना नसीबे के दोषे के रह गइल बा, हमरा हो।

परमेसर ------ दोष ना किस्मत के बा आ ना भगवान के। सब तिरकटई स्वार्थी लोग के स्वार्थ के बा, भाई। जहिया एगो बेटिहा दुआरे ना चढ़त रहे तहिया भतीजा आ भतीजा के बाप तोहार हथजोरी करत रहे कि बिआह ना होई त भारी शिकाइत होई, तूं त फुफा नू रहऽ हो, बचपने से पढ़इलऽ लिखइलऽ आ आपन सब लगा के बिआहो करा देलऽ, तनिको बुझाइल, ओह दूनों बाप बेटा के।

सोमेसर -------- ना कइसे बुझाइल हो, बुझाइल त तिरकटई बुझाइल, आ आगे दिन हमार कुंआ से गिरे बचे के आंख खुलल।

बिनोद --------- (चिट्ठा लिहले प्रवेश) तनी हमरो पर आंख खोलऽ ए भइया।

परमेसर -------- आरे घर में ताला बंद रहेला सोमेसर भाई के, आ तोरा पर आंख का खोले के बा रे। दू दिन सहर से अइला भइल इनिका आ बकाया के तगादा लेके आ गइले, मरदे।

बिनोद ---------- जवना घरी तालावा खुलत रहे तवना घरी के ह भइया। हम कवनो फालतू के चिट्ठा लेके थोरे आइल बानी।

परमेसर -------- बस कर भाई बुझ गइलीं, बात आगे कहबऽ त हमरा करेजा में दरद होखे लागी, अउरी सोमेसर भाई के होखी तवन त अलगे बा। बाकि भतीजे काहे ना बकाया कइले होखे आ साथ ना देलस त का, ई त बकाया देबे करिहें।

सोमेसर -------- केतना के बकाया बा बिनोद ?

बिनोद --------- तीन हजार पांच सौ भइया।

सोमेसर -------- पतेंगो भाई के गैस के एक हजार बाकी हईँ, उन्हुको मिला के तोहरा पे फोन पर डाल

देत हईं, हम। कवनो ऐतराज।
बिनोद --------- ना भइया ना, हमरा कवनो ऐतराज नइखे, आपन रख के उनुकर उनुका के दे देम।
परमेसर -------- बिनोद, सोमेसर भाई त सबकर गई तूर देलन, बाकि इनिका का मिलल रे , माटी के देवाल से पक्का के देवाल देखा देलन पर इनिका त चोट मिलल ? भतीजा आ भतीजा के बाप के देयानत कइसन रे, जवन एह इंसान के धोखा दे दिहलन। इंसान आदमी के अपने घर में आपन खाना बंद ? अपने घर में पिआज रोटी रे ?
बिनोद -------- हमरो सुनो में आइल ह कि ओकरा ससुर से सोमेसर भइया के बातचीत होत रहे आ पतोहिया अपना बाबूजी के हाथ से मोबाइल ले लिहलस आ ऊ ऊंची आवाज में बोले लागल। एकर मतलब का बा इनिका थरिया में पिआज रोटी ना परल रहे, ओह राति ? ओह राते ई उपासे ना सुतल रहन ? हद हो गइल भइया हद हो गइल। एह से स्पष्ट बा कि कवनो आदमी सार के लइका आ सार के तरजीह अब ना दिहें।
परमेसर -------- सोमेसर भाई जींदा दिल आदमी हवन, बिनोद।
बिनोद --------- कइसे ना हवन, सरपुत के ई बिआह के रिश्ता सोमेसर भइया आ भौजी मतलब दूनों बेकत के सहमति से भइल रहे, अब ऊ कहता कि फुआ हमरा के कुछ नइखे जानत, एह कारज में जवन कइलऽ तवन फुफा तू कइलऽ । आ ओकर बाबूजिओ इहे बात कहत बाड़न।
परमेसर ------- सोमेसर भाई दूनों बेटा बाप के राजनीति बुझ गइल बाड़न।
बिनोद --------- भला कइसे ना बुझिहें, आ कइसे ना अइसनन के घर डाढ़े से आपन घर-परिवार बचइहें ।
परमेसर -------- हमनी के गरीबी के चादर ओढ़ लिआई बाकि सराफत के बात लेके सरपुत आ सार के जगह ना दिआई, ना ढुके दिआई।
बिनोद -------- मूस आ मुसकइल के का भरोसा भइया।
सोमेसर ------- हमरा नियन आदमी के हहरत हियरा के बेचैनी बिनोद के बुझा गइल परमेसर भाई।
परमेसर ------- कइसे ना बुझाई सोमेसर भाई, पत्थर के जहान में हम, बिनोद आ तूं नइखीं जा नू, हमनी के ना केहू के धोखा देले बानी जा ना दिहब जा ।
बिनोद ------- आ गोपला ?
परमेसर ------ गोपला गरीब आदमी ह, बाल पर चाय के दोकान कइले बा, गांव में आवेओला सरपुत आ सार के चाय पीआ के भेज देला, हित के नाते पइसा ना लेला, उदार दिल के आदमी ह। आ हमनी के गांव के माटिए ओइसन बा। ओकरा चार गो बाल बच्चा हइस । ओकरा व्यवहार से ओकरो कवनो चीज के कमी ना होखे। पत्थर के जहान

में ओकरो इंसान मिल जालन।

सोमेसर ------- हमरा मिलल चोट के समय में तूं लोग दरद ना बुझाए देलऽ जा, ई कम बात नइखे परमेसर भाई।

परमेसर ------- तोहरा आदमीयत के हम परनाम करत बानी भाई।

सोमेसर ------- हमरा गांव के हीरा आदमी हव तूं लोग।

दृश्य परिवर्तन

लखन ------- (अपना बेटा से) रमेश, तूं आपन घर - परिवार सम्हारऽ, हमरा से अब तोहार आ तोहरा परिवार के भार बोझ ना चली।

रमेश ------- ना भार बोझ चली त हमरा हिस्सा के हमार खेत आ घर बांट द, हम आपन परिवार लेके अलग रह लिहब। तूं कइले का बाड़ऽ हो, हमार बिअहवो त हमार दोहरे केहू कइल।

लखन ------- रार बढ़ा के गांव के जन जनावऽ, तोहरा बिअहवा के बाद हम आपन बहिन आ बहनोई दूनों त्याग दिहलीं।

रमेश --------- अब इहे नू कहबऽ कि अपना बहिन - बहनोई से रिश्ता तूर के तोर परिवार गांवे ले अइलीं।

लखन ------- एगो हमरा कहे के आ अब खुद तुहीं कहऽ ताड़ऽ।

रमेश ------ कहब, काहे ना कहब, हमरा ना बुझाइल ओती घरी। तूं हमार मति मार देलऽ, आ दोसर बात तूं अपना दूगो रोटी समय पर मिले आ माई के गोड़ में तेल लागे के व्यवस्था कइलऽ, आउर का कइलऽ, इहे हमरा नइखे बुझात, आंय ?

लखन ------ तें अब हमार पानी लेत बाड़े।

सोमेसर ------(मोबाइल से) रमेश, अब अपना बाबूजी के त मान मर्यादा करऽ, तोहरा गांव से हमरा लागे मोबाइल आवता कि बाप बेटा में तकरार होता।

रमेश ------- ई हमार बाप ना पत्थर हवन पत्थर आ हमरा अब इहे बुझाता कि पत्थर के जहान का ह।

परदा गिरत बा। आज के नवजुवक के बापो महतारी कम नइखे दिग्भ्रमित करत, राहता कहां से देखाई।

सोमेसर ------ नवजुवक के आपन दायित्व नइखे का ?

रमेश ------ आज हमरा पास से आपन गलती महसूसे के अलावा कुछ नइखे रह गइल। हमरा जिनिगी के राहता में आगे रेंगनी बा त पीछे जटहिया के कांट। पुनम के अंजोरिया हेरा गइल हमार, हमरे से।

परदा गिरत बा।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

मुक्तक तीन गो

(1)

दारू से दरार फाटल, कबो ढिमिलास नली में
बेटा बेटी मारल फिरसँ बदकिस्मत के गली में
घर में मेहरी रोजे दिनवाँ आटा चाउर के हुकस
एतने के निशा बाटे रहस बोतल अनार कली में।

(2)

बेटा बइठल रोवे दुआरी ए बाबूजी मर जइबऽ
तनी सोचऽ हमनीं के साँसत में तू कर जइबऽ
गली गुजा में गिरबऽ जे तऽ कुकुरे पानी दिही
दाल रोटी सबका अंटे हमनीं के नून धर जइबऽ

(3)

फीस बाकी बा कब दिआई के आखिर ई दिही
तोहार बसतर फाटल मरदे त दोसर कइसे सिही
अइसने अइसने बापन से पूरा घर काएल बाटे
जहाँ खिसिआइल घरनी त बेलना से खबर लिही।

◆◆◆

विद्या शंकर विद्यार्थी
रामगढ़, झारखण्ड

भाई से अरदास

हमरा भोजपुरी लिखेला जनि अकछाईं भाई !

"तोहर लिखलका "कही ले अपने"हमारा कुछ ना बुझाई "

'बेतियाके धूमिल' कहे लागल बा लोगवा हमरा-

"चाहेम जे होई से सही , नियरा भा लमहरा "

जे पसीन पड़ेला हमरा, ओही प हमर इसारा ,

रउआ कहीले ठेंगा देखवल' कहवां हमर गुजारा ?

राउर सिकाइत, हम कमेंटवा करीले काहे ना ,

हमरा का दीकत बा, रउआ बुझीले काहे ना ?

टैगिआवे भा सझिआवेके हमरा कहां बा लूर ?

तेल जरेला नौ-नौ डिबिया टाइप कइल तो दूर ।

अवनलाइनमें चर-चर घंटा बाझल बड़ी फजीहत,

अइसे कवनो काम तो नइखे, बाकिर कहवां फुरसत ?

गंगानन्दन झा कलाधर

◆ ◆ ◆

गंगानन्दन झा कलाधर
बेतियाडीह

मझौआके बागड़

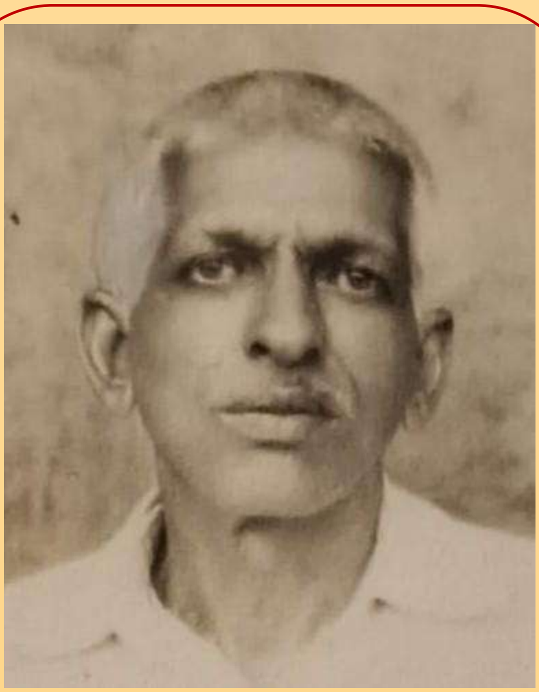

पंडित कालीकुमार मिश्र विशारद

सुनीं धियान दे के जो इच्छा होखे सीखेके,
बातिके बिचार करीं, कहत बानीं रउआके ;
झूठ-फूस, लबर-सटर बातिके लगाओल छोड़ीं,
निन्दा जनि करीं कब्बो, भुलाइयोके
गौंआके ;
ना त$ पाछे रोसमें दोस मत हमार देहब,
होस करीं, टोईं कान, चहेंटी जनि
कौआके ;
आनके भरोसा छोड़ीं, आस करीं बागड़ेके ,
आई कामे आखिर ई बागड़े मझौआके ।

दीन पर दया राखीं , कुबाच ना भाखीं कब्बो ,
राखीं ना मोह रउआ बिसरियोके
रोपैयाके ;
देहसे कमाईं खूब, नेह राखीं अकिलोसे,
दही-दूध चाखीं, करीं सेवा गैया मैयाके ;
खेतवामें कमाईं पूरा, अंजा उगाईं सभे ,
उपजा बढ़ाईं जा,बचाईं देस-नैयाके;
लइकन-लइकियनके पढ़ाईं, सोचीं देस-काल,
करीं ना खुसामद किनहुं बाबू भा भैयाके ।

◆◆◆

मंगरुआ

काहे पीटत बाड़े एतना ढोल मंगरुआ
बोल न जवन बोलबे खुलके बोल मंगरुआ

मुखिया जी के साथ चले से मिलिये जाई
दारू-सारू बिरियानी एगरोल मंगरुआ

सच्चाई कहला से गरदन काटल जाई
खुल्लम खुल्ला मत खोलल कर पोल मंगरुआ

महँगाई के एटम बमवा अइसन फूटल
लोगन के हालत बा डाँवा-डोल मंगरुआ

गली-गली में फिर नेताजी घूमत बाड़ें
वादा फिर से लेके कुछ अनमोल मंगरुआ

◆ ◆ ◆

राम नाथ बेख़बर

भोजपुरी

भोजपुरी में आजकल बतिआवे लागल बा लोग,

कुशल क्षेम लिखि के पेठावे लागल बा लोग।

हिचक नइखे कहीं आपन भाषा बोले में,

अपना बोली के दम देखावे लागल बा लोग।

खुश बानीं हम आ खुश सारा जहान बा,

डेगे-डेग सबका के चलावे लागल बा लोग।

पेपर-पाती ,अखबार में कुल लिखि के ,

भोजपुरी के पेयार बढावे लागल बा लोग।

हम सोचि-सोचि के बहुत गदगद बानीं,

भोजपुरी में कहि-सुनि के हँसावे लागल बा लोग।

सनेश भेज के भा फोन करि के ,

एक दूसरे के समझे समझावे लागल बा लोग।

◆ ◆ ◆

गुड़िया शुक्ला
शिवराजपुर गोपालगंज

दिल की बात बता के देखीं

का खोये का पाये अबतक,
गुणा -भाग बइठा के देखीं l
अन्हरिया से बाहर आ के ,
दिल की बात बता के देखीं l

नव कोपल हर्षित होईहें,
जरा जीर्ण हटा के देखीं l
कुहरा -कुहरा छट जायेदीं,
सूरज क्षितिज उगा के देखीं l

दुनिया इ ह ईश्वर की लीला,
एकरो गला लगा के देखीं l
कुंज -कुंज सब कलरव सींचे,
सुर संग सुर मिला के देखीं l

कहें अपनी उनकी भी सुनें,
सही -गलत सुलझा के देखीं l
जीये के हक़ मिलल सभन के,
जिहीं अउर जीला के देखीं l

जान लुटौले बारें लोगन,
सुनर जगवा बना के देखीं l
असल कमाई मिली जरुरे ,
अपने भीतर जा के देखीं l

बाहर बावे खतरा बहुते,
थोड़ा गला लगा के देखीं l
राग -द्वेष सब पीछे छोड़,
आपन मैं पिघला के देखीं l

लड़ल चाहे जो खुद से लड़ ले,
खुद के साथी बना के देखीं l
बंधन काट जाती धरम के,
एक साथ में आ के देखीं l

◆ ◆ ◆

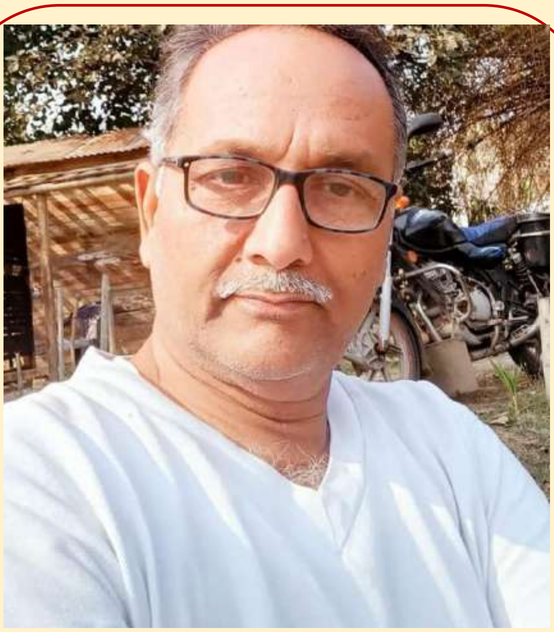

शिव शंकर सिंह सुमित

एगो सोहर

दुअरा प बाजेला बधइया
आंगन सहनइया नू हो -
ए ललना मोरा घरे
जनमे कन्हइया
हर्षित खूब मइया नू हो!

बाबा लूटावे अन-धन सोनवा
कि पापा धेनू गइया नू हो -
ए ललना दादी लुटावेली
चेट के रूपइया
बइठि अंगनइया नू हो!

आज के सुनर शुभ सुदिनवा
कि पवनीं ललनवा नू हो
ए ललना धन भाग
खुलल अँचरवा
महलिया उठे सोहर नू हो।

जुगे-जुग जिअसु मोर ललनवाँ
कि इहे बा सुमिरनवाँ नू हो
ए देवि माई बबुआ के
रखिहऽ आबाद
आशिष रहे तोहर नू हो।

◆ ◆ ◆

अजय सिंह 'सिसोदिया'
सिसवन (सीवान)

अब हमनीं के बारी बा

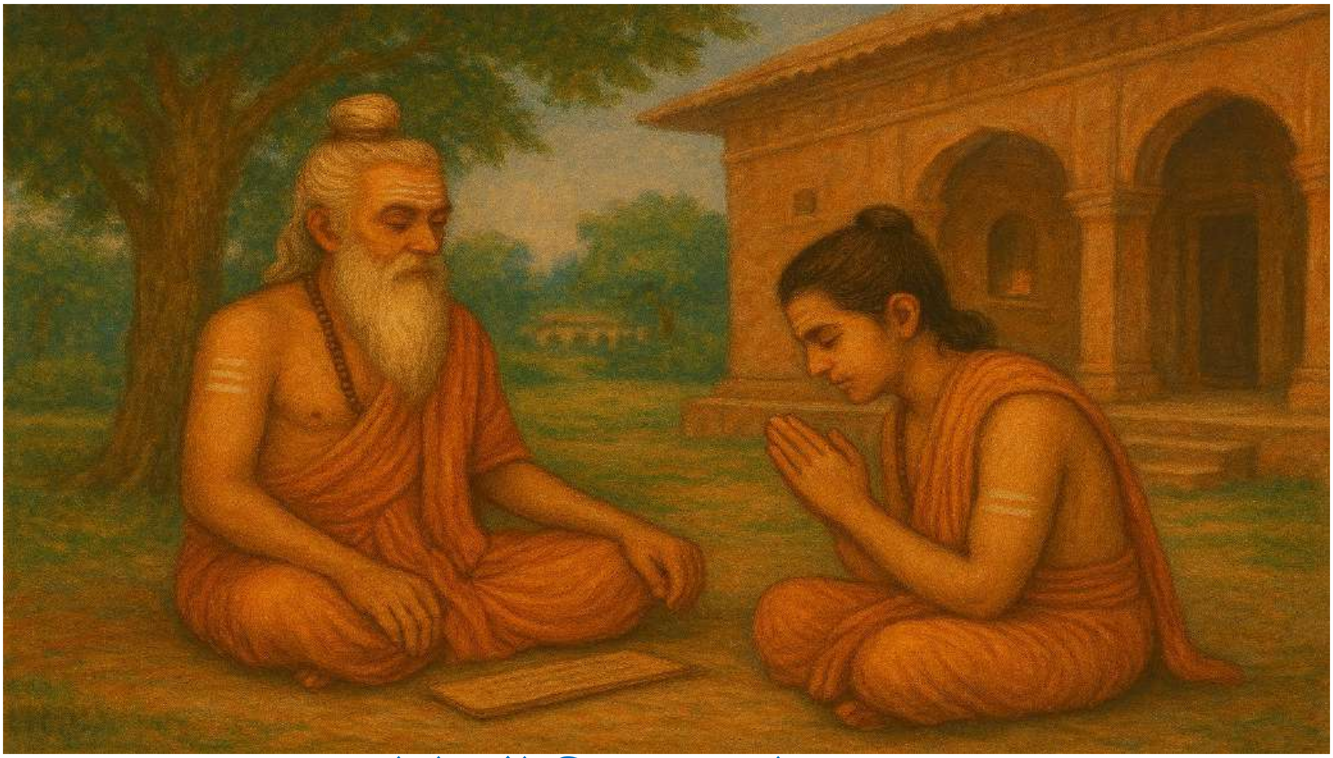

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

गुरू-चेला दुनू जना एके साथे रहत रहे लोग... गुरू जहाँ शांत, सरल आ मृदुल स्वभाव के रहलन तऽ चेला एक दम उनका उलट ! बात-बात में इनकर गुस्सा सातवाँ आसमान पर पहुँच जात रहे..आ केहू के बेमतलब भला-बुरा कह देत रहलन ! अइसन ना रहे कि ऊ अपना एह स्वभाव से संतुष्ट रहलन ! उनका भी आपन स्वभाव बढिया ना लागे एही से ऊ आपन स्वभाव बदले के निश्चय कइलन !

दुसरा दिन ऊ अपना गुरू के पास जा के कहलन 'गुरू जी, हम अपना व्यवहार से बहुत दुःखी बानीं। बात-बात मे गुस्सा आ जात बा बिना मतलब के। हम लोग से अझुरा जात बानीं, कवनो उपाय बताई जवना से हम अपना व्यवहार में बदलाव ला सकीं ! '

गुरू जी अपना चेला से कहनीं कि काल्ह आवऽ, तहार कुण्डली देख के हम ठीक से बताइब कि का दोष बा आ एकर निवारण के कवन उपाय बा '?

चेला गुरू जी के बात सुन के चल गइलन आ बिहान होखे के इंतजार करे लगलन ! रात भर उनका निन्द ना आइल ! इहे सोचत रह गइलन कि अब होई भिनुसार त तब होई भिनुसार। बाकिर कहल जाला कि इंतजार के रात बडी भारी होला, आज उनकरो रात कम भारी ना रहे ! खैर भइल भोर आ ऊ नहा-धोआ के गुरू जी के पास पहुँचलें !

गुरू जी उनकर कुंडली देखे लगलन आ देखते-देखते बहुत उदास हो गइलन। उनका आँख से आँसू टपके लागल ! अपना गुरू के अइसन हाल देख के चेला से रहल ना गइल ! ऊ आतुर होके पूछे लगलन कि 'का भइल गुरू जी कुछ त बताई? राउर ई अवस्था देख के हमार प्रान सुखल जात बा, का भइल जल्दी बताईं ? '

गुरू जी बड़ी भारी मन से कहे लगलन कि ' हम का तोहार कुंडली देखीं आ कवन उपाय बताई? तहार जीवन त अब मात्र साते दिन बचले बा !' गुरुजी के बात सुनके उनका जइसे काठ मार देले होखे !

कवनो इंसान के जब पता चलेला कि ऊ अब बस कुछ दिन के मेहमान बाड़न ! तब ओह इंसान

पर का बितेला आ ओकर का अवस्था होला ई ना लिखले लिखाई ना कहले कहाई !

चेला भारी मन से गुरू जी प्रणाम कइके चल देहलन ! आज के बाद उनका व्यवहार मे एगो आश्चर्यजनक बदलाव आ गइल ! अब ना ऊ केहु के बात के बुरा मानस ना केहू पर उनका खीस बरे ! जेकरा से भी ऊ गलत व्हार कइले रहलन सब के पास जा- जा के क्षमा माँगे लगलन ! अइसहीं सात दिन कब बीतल पते ना चलल !

आज उनका जीवन के आखिरी दिन रहे ! आज के दिन चेला एकदम शांत आ मृदुल स्वभाव वाला लागत रहलन.. आज उनका ललाट से एगो अलग प्रकार के तेज झलकत रहे !

ऊ सोचलन कि जब मउगत आवहीं के बा त काहें ना गुरू जी के शरण ने पहुँची, उनका गोदी मे मृत्यु वरण करब त हमके सदगति मिली ! इहे सोच के ऊ गुरू जी के कुटिया के तरफ प्रस्थान कइलन !

गुरू जी चेला के देख बड़ी खुश भइलन। उनका के गला से लगा लेहलन, गुरू के देख के अइसन लागल कि उहो अपना शिष्य से मिले बदे आतुर रहलन.. जवन आतुरता साफ लउकत रहे..!

गुरू जी चेला से पुछलन कि.. "ई बतावऽ एह सात दिन मे तहरा कव हाली गुस्सा आइल ह, तू केतना लोग के साथे बुरा व्यवहार कइलऽ".. चेला जवाव देहलन कि.. " गुरू जी एह सात दिन के जिनगी पर का गुमान करीं? हमार सात दिन त अपना गल्ती के प्रायश्चित में ही बीत गइल ह ..हम सब लोग से माफी मंगनी ह, केहु पर गुस्सा ना आइल ह"।

गुरू जी शांत मन से कुछ देर चुप रहला के बाद बोललन कि.. ' देखऽ सबके जिनिगी चार दिन के ही बा.. चार दिन त बेसी कह देनीं, चार पल बाद का होई केहू के पता नइखे। तबो अतना गुमान अतना द्वेष अतना गुस्सा काहे खातिर हो ?

हमनीं के मानव हईं सन। मानवता हमनीं के श्रृंगार ह। एह के त्याग के काहें अपना के भयावह वनावत बानीं सन' !

चेला गुरू जी के बात समझ गइल रहलन। उनका इहो समझ आ गइल रहे कि उनका भलाई खातिर गुरू जी झूठ बोलले रहीं.. ऊ गुरू जी चरण में गिर के रोए जात रहलन..उनका आँख से झर-झर लोर बहत रहे.... बाकी बचल-खुचल मन के मइल भी आज धोआ गइल.. अब ऊ एकदम निर्मल आ पवित्र बन गइल रहलन ..।

अब हमनीं के बारी बा..

◆ ◆ ◆

अजय सिंह 'सिसोदिया'
सिसवन (सीवान)

रीसि बहल छोह में

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

मुरली बाबा बड़े खुशदिल आदमी रहले। परिवारो खुशहाल रहे। दू गो बेटा एगो बेटी। उधापन कS के सबके पढ़ा-लिखा के बियाह-दान कS के निश्चिन्त हो गइले। अब तS बेटो लोग थोर भा ढेर कमाए लागल। बेटियो अपनी घरे जा के सुखी हो गइल। लेकिन अब जब बेटा लोग के परिवार बढ़ल तS ऊ लोग आपन चेते लागल। बाप महतारी से केहू का मतलबे ना। दुनू जने में दांजा हिसी लागि गइल कि ऊ जब ना दीहें तS हम काहें देब? मुरली बाबा स्थिति सम्हारे के भरसक प्रयास कइले। लेकिन जेतने ऊ सम्हारे के प्रयास कइले स्थिति ओतने हाथ से निकलत चलि गइल।

बेटा लोग बाप-महतारी से दूरी बनावे लागल, दूनू जने आपन-आपन परिवार लेके बाहर चलि गइल लोग। उमिरी के पैंसठ बरिस पार करत-करत तS मुरली बाबा एकदम अकेला हो गइले। घर में खाली बूढ़ा बूढ़ी रहि गइले। अब तS घर में उदासी एतना कि बुझइबे ना करे कि घर में केहू बा। भले लइका लोग पराया हो गइल लेकिन खून के अपनापन कइसे मिटी। नाती कुलिनी के देखे के मन करे, खेलावे के मन करे तS मुरली बाबा तड़पसु। साल में एक बेर कबो केहू आवे तS दू चार दिन खातिर घर गुलजार होखे। नाती कुलिनी की साथे खेलसु खेलवासु। लेकिन फेरु जब चलि जाउ लोग तS उहे दसा, घर में उदासी छा जाउ। नाती कुलिनी खातिर रोवसु। लेकिन बेटा लोग पर उनकी आंसू के कौनो प्रभाव ना।

ई कुलि स्थिति पर मुरली बाबा का बेटा लोग से एतना तकलीफ कि संवाद भी लगभग खतम हो गइल। अब त उनकी झोरी में बेटा लोग के उलाहना छोड़ि के दूसर कुछ रहबे ना कइल। डेढ़ बरिस पर बड़कू आइल रहले, घरे। लेकिन उहो अकेले। बेटा के देखि के महतारी कुन्ती के जमीन पर गोड़ ना। दउरि-दउरि के उनकी तिमारदारी में लागल रहली। मुरली बाबा घरे ना रहले, खेत में गइल रहले। लगभग दस बजे खेत में से काम कS के अइले। अबे कुदारी कान्हही पर रहे, तले पत्नी कुन्ती मचलत भीतर से निकलली अउरी कहली कि, "बड़कू आइल बाड़े।" सुनि के मुरली बाबा का भी

खुशी के ठेकान ना। लेकिन आपनी भावना के दबावत कुदारी कान्ह से उतारत धीरे से पूछले

"कब अइले हं?"

"रउरा जइसे खेत में गउईं, तइसे अउवें। राति भर गाड़ी में के जागल बाड़े। आँखि झंपत रहल हS, आवते नहा खा के सूति गइले हंS ।"

सुनि के मुरलीबाबा की मन में भी अहलाद भरि उठल। लेकिन बाप के मर्यादा राखे के रहे। ढेर खुशी जतावल उनका ठीक ना लागल, एहीसे कुछ बोलि ना पवले। लेकिन मन में खेती के ले के जौन डर भइल रहे अकस्मात निकल गइल, "चलS, आ गइले तS अब खादर बीया कीना जाई। खेत बोआ दिहें।" मने मन संतोष के सांस लेत चुपचाप कुदारी भुंइया धइले अउरी हारि के दुआरे बइठि के सुस्ताए लगले। बेटा की अइला की खुशी पर बइठल बइठल मन उड़े लागल। तबले कुन्ती पानी अउरी हाथ में मीठा लिहले निकलली, तS धीरे से पूछले, "परिवारो आइल बा?"

"ना,, अकेले आइल बाड़े।"

"तनी नातियन के ना ले अइले हं ?"

"ना,, जल्दीबाजी में चलि अइले हंS। रिजर्वेशन ना मिलि पावल हS।"

"अइसन का जल्दीबाजी रहल हS ?"

"अब उहे नू जानS ताड़े। हम का जानS तानी। हमसे जौन कहले हंS, तौन कहि देहनी।" सुनि के मुरली बाबा के दिल तड़पि उठल। नाती कुलिनी खातिर मन बेचैन, हताश होके आँखि भरि आइल अउरी दस मिनट ले तड़पत चुप रहले। बाद में फेरू कहे लगले,

"डेढ़ बरिस हो गइल ओकनी के देखले। ई डेढ़ बरिस बुझाता कि डेढ़ युग की बराबर बीतल बा। बुझाता कि कइसन भइल होइहे सन, केतहत भइल होइहे सन। बड़का तS ई कुआर आठ बरिस के हो गइल, अब कातिक अधिका जाता। केतहत भइल होई? छोटका सुरजा बदमाश रहे। पढ़े में तेज होई, बदमाश लइकन के दिमाग तेज होला। लेकिन ओकरा के सही से देखरेख के जरूरत रहे। सही से देखरेख हो जाई तS ऊ नीमन निकलि जाई, पढ़वइया। लेकिन जो कुसंगत में चलि गइल तS बदमाश बनि जाई, गोली बंदूक वाला। एहू लोग के पानी पीया दी।"

"आ कौन हमनी की लगे बा लोग कि देखरेख कइल जाई? ओ लोग की करतब से पढ़वइया होखे चाहे बदमाश, ऊ लोग जानो, हमनीका का कइल जाई ?" कुन्ती के बाति मुरली का ठीके लागल, चुप होके नातिन कुलिनी की सोच डूबि गइले। तले कुन्तियो उनकी लगे बइठि के कहली।

"चलीं, दुपहर भइल, नहाईं खाईं। कहीं रहो लोग निरोग रहो लोग। हमनी का एइसे नू गरज बा।" लेकिन मुरली चुपचाप सोच में डूबल रहले। अन्त में जब कुन्ती दबाव देत कहली तS एगो लमहर सांस छोड़त कहे लगले।

"सोचल एको बाति ना रहल।"

"तS अइसन बाति सोची ले काहें, जौन रहबे ना करे।"

"तS का सोचीं ? तूँ ही बतावS ना।"

"चलीं नहाई खाईं। कुछ जनि सोचीं।"

"कइसे ना सोची हो? बुढ़ापा लइकने की सहारे कटेला। बहरे से अइला पर जब नाती चिल्लात "बाबाजी आ गइले-बाबाजी आ गइले" करत दउरेले सन तS बुझाला कि सारा दुनिया बाबा की अंकवारी में समा गइल। जब घेरि के पाकिट टकटोरे लागे ले सन, "बाबाजी हमरा खातिर का ले आइल बानी" तS बुझाला कि दुनिया के सारा खुशी पाकेट में समा गइल। ऊ आनन्द, दिव्य। सचहू उमिरि बढ़ि जाला। लेकिन इहां तS बुढ़ापा में जिनगिये छिना गइल। दिन ब दिन जिनगी भारी होत जाता।" मुरली के बाति सुनत कुंतियो ढबढ़िया गइली अउरी आँखि पोंछत कहे लगली,

"आ छोड़ी, चलीं, नहाईं खाईं। सोचले का होखे के बा? हम मेहरारू हईं,, हमरा रउरा से ढेर नू बुझाला। घर बुझाला कि काटे दउरSता। लेकिन का करीं? जौन अपनी हाथ में नइखे, ओइपर जान देहले का होई? रउरा तS आपन टाइम खेती-बारी चाहे बर-बाजार में घूमि के काटि लीले। लेकिन हमार समय कवनेंगा कटेला, कबो सोचीले? छोड़ीं, चलीं, खराई हो जाई।"

"हं चल !" कहत मुरली बाबा उठले, अउरी उदास मन से नहइले खइले! फेरु आके दुआरे ओसारा में बइठले। नाती कुलिनी की ना अइला के दुःख तS मन में रहबे कइल लेकिन बेटा की अइला के खुशी भी कम ना रहे। बुझाउ कि आजु उनके दाहिन बांहि आ गइल बा। अब उनके सगरी फंसल काम हो जाई। बबुनिया किहाँ जाए के बा, ओहुजा घूमि अइहें। तनि हमार आंखियो देखा दिहें। खेतो बोवा दिहें। अब उनका मेहनत ना करे के पड़ी, आराम से सब काम हो जाई। खूब निश्चिंत रहले। जाके असोरा में बइठल खुशी में उतरात रहले, तले कुन्तीयो आ के बइठि गइली।

"सुतले बाड़े हो, अबे?

"हंS। उंघी पूरा हो जाइ तS अपने उठिहें।"

"ओ हो, हम जगावे के नइखी कहत।"

"तS गाभी का बोलSतानी ?"

"ई गाभी हS ?" कहि के उठि के जा के खरिका ले आ के दाँत खोदत फेरु चौकी पर बइठि गइले। कुछ देर ले चुप रहले। लेकिन कुछुए देर बाद फेरु भावना के ज्वार हिलोर मारे लागल। "सही में हम, धोबिया की तरे अभागा आदमी बानी, जौन पानी में खाड़ होके पियासे मरत रहे। सब भरल बा, दू गो बेटा, दू गो पतोह, तीन गो नाती, दू गो नातिन, लेकिन ओही तरे, कि नाव के अन्हारी बारी,, हूम करे के पल्लो ना। समय पर केहू साथे नइखे।"

"तS के नइखे रउरी साथे ?"

"तS के बा, हमरी साथे। नजर उठा के देखS तS! बस हमनिए न बानी जा। बिहाने के बाबू आइल बाड़े, लेकिन ए बेरा ले उनके गोर करिया कुछू ना देखनी।"

"सूतल बाड़े तS कवनेंगा देखब ?"

"ओ हो आजु नू सूतल बाड़े। कहिया हमसे बतियावे ले? ई भइले चाहें ऊ, कहियो एक्को छन हमरी लगे बइठेला लोग? आजु दस बरिस से ऊपर हो गइल, ओ लोग का हमरा के कुछ कहले भा पूछले। हालि चाल तS बाद के बाति बा। आखिर ए लोग के हम का बिगाड़ि लेले बानी? आवेला ला लोग तS गोड़ लागेला लोग तS देखी ले, ना तS जात में गोड़ लागे ला लोग तब देखी ले। हमरो बुझाला कि बेटा हS लोग, आके तनी हमरी लगे बइठित लोग, दुःख सुख बतियाइत लोग। कुछ आपन कहित लोग, कुछ हमार सुनित लोग।"

तS का बइठो लोग! तनी ए से में राउर तुक बिचिल जाला। नीमनो बाति कही लोग तS डांफे लागीले। रउरा तनिको ई ना बुझाला कि बाप के जूता जब बेटा की गोड़ में आवे लागल तS ऊ बेटा- बेटा ना, भाई हो गइल। अब ओकरा से शान नेवर कS के बतियावे के चाहीं।"

"तS हम का करी ले, ओ लोग के? ओ लोग की करनी पर मन जब उद्विन होला तS बोलहीं के पड़ेला। ऊ लोग हमार दुश्मन ना नू हS? बेटा हS लोग। चाही ले कि आपन जिम्मेदारी बुझित लोग। प्रेम से रहित लोग, एकता में बहुत बड़हन ताकत होला। एक पइसा कमा के ऊ दिते, एक पइसा कमा के ई दिते तS दू पइसा में घर के कौनो काम हो जाइत। घरे आइत लोग तS घर के बनल बिगड़ल देखि के संइहार दित लोग। हमसे पूछित लोग कि का हालि बा? का करे के बा? का बनल? का बिगड़ल?बस एतने खातिर नू बोली ले।"

"तS बोलले सगरी हो जाला ?"

ना ! मन के भड़ास निकलि जाला तS दिमाग तनी हलुक हो जाला। ओहू में ऊ लोग हमरी लगे बइठबे कहाँ करेला कि ओ लोग से कुछू कही ले। तहरे से कही ले। अब तूँ ओ लोग से कवनेंगा कहेलू, ई तूँ जानS ताड़ू।"

"हमरी भरोसे काहें रहीले? रउरा बाप हईं, रउरा खुदे ए लोग से बतियावे के चाहीं।"

हम का बतियाईं? बतियावे चलीं अउरी पलटि के जवाब दे देउ लोग तS का होई?

"ठीक बा, हमसे बताईं कि का करे के बा? उठेले तS हम उनसे कहि देब।"

"तूँ नइखू जानत? पिछला साल के खादर बीया के दाम दमड़ी सेठ के अबो बाकिए बा, बेयालिस सौ। सामने पड़ि जाले तS लाजे जीउ काठ हो जाला कि मांगि मत देसु। अबे ऊ बाकिए बा तले फेरु कपार पर खेती आ गइल। कहाँ से करीं। आइल बाड़े तS इनसे कहि दS कि दू बोरा खादर अउरी दू बोरा बीया कीनि के कम से कम बड़का खेतवा बोआ देसु।"

ठीक बा टेंसन मति लीं, उठेले तS हम उनसे कहStानी।" सुनि के मुरली का तिहा हो गइल कि अब खेत बोआ जाई। निश्चिंत हो गइले। लेकिन तीन बजल त फेरू कुदारी लेके कुन्ती के हांक लगवले। कुन्ती निकलली,

"बाबू अबे सुतले बाड़े का ?"

"हंS ।"

"ठीक बा! उठेले तS कहिहS, कि आजुए कीनि ले आवसु। परसो बोआ दियाई।" कहत कुदारी कान्ह पर धइले अउरी खेत में चलि दिहले।

लेकिन शाम के आवते कुन्ती से पूछले, "कहलू हS?"

"अबे ना। अबे लगे बइठबे कहाँ कइले हं। सूतल सूतल रहले हं, उठि के मुंह धोवले हं अउरी गाड़ी ले के चलि देले हं। आवS ताड़े तS कही ले।" सुनि के मुरली का तनी दुःख भइल अउरी कुन्ती से कहे लगले।

"वाह! वाह रे बेटा। सूति के उठल अउरी चलि गइल। बिहाने के आइल बा, ए बेरा ले बाप के तनी गोड़ो ना लगलस। महतारी से हालि-चाल ना कइलस। ठीक बा, जब ए लोग का हमरा से गरज नइखे, तS हमरा ए लोग से कौन गरज बा! तूँ गंगा पार हम दहवा पार।" सुनि के कुन्ती बुझि गइली कि इहाँ का रिसिया गइनी। एही से समझावत कहली।

"इहे नू रउरा में कमी बा। तनी देर में गरम हो जाइले। अरे, आवS ताड़े। अबे गइल नइखें, आव ताड़े तS कही ले।"

"तूँ का कहबू अउरी का करबू। एही चक्कर में आजु के दिन निकलि गइल। कहत रहनी हं, कि परसो सोमार हS बोआ देबि।"

"ओ हो, तS परसो नू सोमार हS? काल्हि आ जाई खादर बीया। रउरा तनिको टेंशन मति लीं।"

"ठीक बा! उहो देखि ले तानी।" कहत मुरली रोस से भरल चुप हो गइले। लेकिन मन चिंतित हो गइल कि का जाने का होई। अगर ना दीहें तS कइसे खेती होई। सेठवा तS बाकी दी ना। अगर ई खादर बीया कीनि दिते तS खाली जोताई के व्यवस्था करे के पड़ित।

सांझि के बाबू अब आवेले - अब आवेले खोजत खोजत राति हो गइल, रसोईयो बनि गइल, लेकिन बाबू अइले ना। देखत देखत मुरली खा लिहले। लेकिन कुन्ती बेटा के बाट जोहत बइठल रहली। बार बार मुरली उनसे तगादा करसु कि आवSताड़े तS उनसे जरूर कहिहS। ना दीहें तS कौनो व्यवस्था नू करे के पड़ी। अउरी हर बार कुन्ती उनके संतोष दियावसु कि "अरे काहें ना दीहें। आवS ताड़े तS कहत नू बानी।"

रात के दस बजे मोटर सायकिल के आवाज जब सुनाइल तS कुन्ती उठि के दुआरे झंकली। बड़कुए हउवें, देखि के मन निश्चिन्त भइल। मुरलियो बाबा उठि के बिछावना पर बइठि गइले। बाबू अइले, बाबूजी के गोड़ लगले अउरी चुपचाप घर में ढूकि गइले।

घर में ढुकते महतारी से कहले, "हम खा के आइल बानी। खाएब ना।"

"लेकिन रसोई तहरो बनल बा, जियान होई? तहरा बतावे के नू चाहीं।"

"लेकिन तहरो पूछे के नू चाहीं। एक बेर फोन कS लेहले रहितू।" सुनि के कुन्ती निरुत्तर हो गइली अउरी बाबू जाके अपनी घर में सूति गइले।

ई कुलि देखि के मुरली बाबा का रीस एतना कि पूरा जिनगी लउक गइल। हताश होके मने मन कहे लगले, "ओह, बेटा आइल बा, लेकिन ओकरा बाप माई की लगे तनी बइठे के भी टाइम नइखे। खड़ा-खड़ा भी ना नू पूछलस कि बाबूजी तोहार का हालि बा। अइसन औलान की सहारे अब ई जिनगी कइसे कटी, भगवाने जानS ताड़े। असल गाढ़ में जिनगी अब ढूकSता। बुढ़ापा एतना निर्मम होई, कबो ना सोचले रहनी। अच्छा,, तूँ हूँ दूगो पोसS ताड़ा।" कहत सूति गइले। बिहाने उठले, तS उठते कुन्ती से पूछले,

"बाति भउवे उनसे?"

"ना! आवते सूति गउवें।"

"तब रहे दS खेत ना बोआई?"

"ना बोआई तS हम का करीं? रउरा काहे नइखीं बतियावत उनसे? सबका हमरे पर तमखा देखावे के बा?" कुन्तियो रिसिया गइली।

"हमरा का घटल बा कि उनसे बतियाएब रे? ऊ लोग अपनी तमखा में बा, तS हम ओ लोग के बाप हईं। खर्चा चली त चली, ना चली त खेत बेंचि के खाएब। लेकिन हमार समस्या तूँ बाड़ू। तूँ अगर ना रहितू नू, तS ए लोग के देखा दितीं।"

"का देखा दितीं ? का बिगाड़ लेब ओ लोग के? अपना के रोइतीं तीन गीत गइतीं।"

"ठीक बा एगो काम करS। इनकी साथे तूँ जा, तब हम देखा दे तानी।"

"काहें जाईं? उहे मांग टीक के ले आइल बाड़े हमरा के? मांग टीक के ले आइल बानी रउरा, तS हमार खर्चा तS रउरे चलावे के पड़ी। रो के चलाईं तS, चाहें गा के चलाईं तS।" सुनि के मुरली बाबा कुदारी ले के खेत में चलि गइले।

जब खेत में से दुपहरिया में लौटले तS पता चलल कि बाबू कौनो संघतिया की बियाह खातिर आइल बाड़े अउरी नहा धोआ के उहें गइले हां। अब लौटिहें तS बात होई। जानि के मुरली बाबा आग बबूला हो उठले, "माने काल्हियो खेत ना बोआई।" कहत आँखि गुंड़ेर के जब कुन्ती की ओर तकले तS कुन्ती सहम गइली अउरी समझावत लगली कहे,

"आरे, काल्हि ना बोआई तS परसो बोआई। एक दिन में बालि ना नू फूटि जाई।" सुनते मुरली रिसिया गइले,

"चुप!" खेत ना बोआई, जनि बोआउ,, हमरा ए बाति के तनिको गम नइखे। खेती कS के पेट ना भरी, तS खेत बेंचि के खाएब। लेकिन खाएब, मुएब ना नू। दुःख ए बाति के बा कि दू दिन में बेटा का माई बाप की लगे तनी बइठे के भी समय ना मिलल। परिवार खाली धन खाए खातिर ना नू होला। प्रेम से परिवार होला। आजु उनका अगर हमनी से प्रेम रहित तS आके हमनी की लगे बइठते, दुःख सुख बतियइते। तहरा नू ई कुलि बाति ओ लोग के समझावे के चाहीं। लेकिन तूँ हूं ओही रंग में रंगाइल बाड़ू।" सुनि के कुन्तियो चिढ गइली,

रउरा तS हर बाति हमरे पर गिरावे के आदत बा। लेकिन रउरा ई ना नू बुझाला, कि हमरा केतना सुने अउरी केतना सहे के पड़ेला। एने आईले तS राउर बाति, ओने जाइले तS ओ लोग के बाति। राउर बाति ओ लोग से, ओ लोग के बाति रउरा से केतना लुकवावे छिपावे के पड़ेला कि प्रेम बनल रहो। तबो केनहो से जस ना। रउरा कही ले तूँही बिगाड़Sताड़ू ऊ लोग कहेला तूँही चढ़ावSताड़ू। सही में महतारी भइल बहुत बाउर कार बा।"

"कौन जस तूँ खोजS ताड़ू? इहे नू तहार जस बा कि आजु हम परिवार में अकेला हो गइल बानी। केहू एतनो पूछे वाला नइखे कि हमरो कुछ दुःख-सुख बा कि नाहीं। हम ओ लोग से अतर्धन नइखी नू मांगत? बस एगो बाप भइला के अधिकार मांगतानी।"

"कौन अतरधन ओ लोग से मागब? ओ लोग से काहें अपेक्षा राखS तानी रउरा ? कुछ पूछी लोग तS उलटे बोली ले। बूढ़ भइनी, शान नेवर कS के रहे के चाहीं।"

"हं, हम कोंका हईं, ओ लोग के खा घारी ले। शान अब नेवर तS ना होई। जे जौन करी तौन कहबे करेब। बस एतने नू बाति बा कि तूँ हमार दुःख कहियो ना बुझलू।"

दूनू जाने में घंटन ले बोल ठोल होत रहि गइल। लेकिन मरद-मेहरारू के झगड़ा कहिया अंजाम ले पहुँचल बा, कि ई पहुंची? दूनू जने झूठे शान तूरल लोग, एक दूसरा के खूब दोष निहारल लोग, गर्जल लोग, तड़पल लोग, ओकरी बाद गमा गइल लोग। बाबू अतवारे के गइल, ना अतवार के अइले ना सोमार के। मंगर के दुपहरिया में अइले अउरी आवते लगले तैयार होखे कि हम जा तानी।

देखि के कुन्ती हताश हो गइली। उनहू का लइकन की निगाह में आपन मोल लउकि गइल अउरी रोवाइन मुंह बनवले बाबू की सामने जा के खाड़ भइली,

"हो,, चार दिन भइल तहरा अइले। लेकिन एको मिनट खातिर तहरा बाप महतारी की लगे बइठे के फुरसत ना मिलल। ना कौनो हाल चाल पूछलS, ना आपन कहलS।अउरी चलि देहलS? बाप की लगे एको छन खातिर जाके कुछ कहलS ?"

"का जाईं, जाईं तS उल्टे बोलिहें ?"

"ना,, तहके उल्टा ना बोलेले, बल्कि तूँ उनके बुझि ना पावेलS! तहसे बहुत प्यार करेले, एही से तहरा पर अधिकार देखावेले। ऊ बाप हवँ बेटा, तहरी हर समस्या के समाधान। तूँ जाने लS, कि तहरा लोगन खातिर केतना बेचैन रहेले? एक दिन भी फोन ना आवे, तS बेचैन हो जाले। मिनट

मिनट पर पूछे लागेले, "कौनो जना के फोन आइल हS हो?" फोन आवेला तS कान लगा के सुने ले, कि के का कहSता। लेकिन बाप हवँ, बड़प्पन के मर्यादा राखेले। जबले तूँ खुदे उनका से बतियावे के ना कहबS तबले ऊ तहरा से ना बतियइहें। लेकिन तूँ याद करS तS "डेढ़ बरिस में एक्को बेर उनका से बतियवले बाड़S?"

"का बतियाई उनसे ?"

"कुछू बतियाव! तहरा लोगन की ना बतियवले ऊ टूटि गइल बाड़े, बेटा। एकदम अकेला हो गइल बाड़े। तहरा लोगें अकेला कS देले बाड़S उनके। दिनरात नाती नतिनी खातिर हहरेले। आँखि से ना, ह्रदय से रोवेले, लोर पी के तड़पेले। बाप के दुःख तहरा नइखे नू बुझात, चलि जइहें तहिया बुझाई। जा उनसे बतियावS।

"हम ना जाएब माई। जाएब त खादर बीया के दाम मंगिहें। ना देब त उल्टा सीधा बोलिहें। हमरी लगे खाली तीन हजार रुपए बा। का उनके देबि अउरी का किराया के राखब? ले जा तूंही उनके दे दS। खादर बीया किनि लिहें।"

"हम काहें ले लीं। ले जा उनके दS।" माई की ढकेलला पर डेरात बाप की लगे गइले। बाप रोस से भरल दुआरे बइठल रहले। सामने जाके उनकी आगे खड़ा भइले। देखते मुरली बाबा दुःख से भरल नजर से उनके देखले, जइसे कुछ पूछत होखें। बाबू उनसे नजर ना मिला पावले। नजर झुका लेहले। पाकिट से रुपया निकालि के आगे बढ़ावत कहले,

"हई तीनिये हजार बा, अउरी बाकी भेज देब।" मुरली बाबा हाथ में रुपया लेत रोस से भरल उनकी ओर तकले।

"कइसन रुपया ह ?"

"खादर बीया कीनि लीह।

" किराया-भाड़ा के रुपया बा?"

"ना ! एगो संघतिया से मंगले बानी ।"

"काहे खातिर दूसरा से मंगबS। लS ले जा, आपन काम चलाव। हमार गरज चलि जाई।" कहत मुरली बाबा रुपया उनकी ओर बढ़ा दिहले। बाप के उदारता देखि के बाबू की आँख में आंसू आ गइल, अउरी उनसे लिपटि के रोवे लगले।

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल "बाबा"
भठहीं बुजुर्ग कुशीनगर उ0प्र0

ए बबुआ ई सोना माटी

माथ लगा के चन्नन अइसे
ए बबुआ ई सोना माटी
बीज लक्ष्य के जम के साध ऽ
दुनिया देखी हिम्मत खांटी ।

कदम बढ़ाव धीर धरऽ तू
धीरे धीरे सब हो जाई
तोहरे साथे बरम बाबा
तोहरे साथे काली माई

खटिया जस जो होई दुनिया
याद रखऽ कि तूंही पाटी
दुनिया देखी हिम्मत खांटी.......

मेहनत रथवा कबो न रोकिहऽ
इनके उनके जिन तू तकिहऽ
साध साध के शब्द खरचीहऽ
आला बाला मत तू बकिहऽ

याद रखऽ कि करम के खेती
जे जो बोई ऊहे काटी
दुनिया देखी हिम्मत खांटी....

तू ओह धरती से बाड़ऽ कि
जेह पर गोरख गाथा गइलें
वीर कुंवर के चौड़ी छाती
जियक् कबीरा अलख जगइलें

जेकरे टिकुली में हो लासा
ऊहे त माथे पर साटी
दुनिया देखी हिम्मत खाँटी।

✍ आकृति विज्ञा 'अर्पण

◆ ◆ ◆

बेटी सोहर

अखियां त लागे जइसे सेमर
होठवा गुलाब नीयन हो
आहो हमरो जे होती एक बिटिया
सोहर हम गवती नु हो.....

अन धन बाग ब ग इचा
जोहे एक चिर ई नु हो
आहो एक रे चिरइया धनि अ इती
सोहर हम गवती नु हो।

अन धन नेगवा लुटवती
लोरिया सुनवती नु हो
आहो घरवा के सरग बनवती
सोहर हम गवती नु हो।

दुई कुल के धीयवा अजोरिया
जनम सधावेली हो
आहो हमहू के पार लगवती
सोहर हम गवती नु हो

✍ आकृति विज्ञा 'अर्पण

◆ ◆ ◆

चैती

बहुरे ना दुख के ई दिनवा
बेदरदी न अइले
बेदरदी न अइले निरमोही न अइले
कुहुके ला मोर परनवा
बेदरदी न अइले।

पीरितिया के पेड़ सूखल बिन पानी
टप टप चूएला नेहिया के छानी
ताड़े लगल असमनवा
बेदरदी न अइलेआकृति विज्ञा 'अर्पण' ।
कुहुके ला मोर परनवा
बेदरदी न अइले।

हिया के दुखाइल केसे बताईं
दरद क बिखिया केतना छुपाईं
सून लागे बाग बगनवा
बेदरदी न अइले
कुहुके ला मोर परनवा
बेदरदी न अइले।

◆ ◆ ◆

आकृति विज्ञा 'अर्पण'

"ना भीख चाहीं ना कर्जा, चाहीं भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा।"

आजकाल भोजपुरी के जवना मंच पर रउआ जायेब, भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के बात जरूर उठी। हो सकेला ई बात सुन के रउआ मन में ई विचार उठे कि एह तरह से खाली चिल्लइला से का होई? काहेना भोजपुरी के ही एतना समृद्ध क देहल जाव कि खुद-ब-खुद सरकार भोजपुरी के संविधान के आठवीं अनुसूची में ओकरा के शामिल करे पर मजबूर हो जाव। बाकिर एह भ्रम में रहला के जरूरत नइखे। एगो कहावत है कि बच्चा के बिना रोअले ओकर माइओ ओकरा के दूध ना पिआवे, त का भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा सरकार का ओर से चुपचाप थरिया में परोस के अपने सभन के आगे रख देहल जाई? हालाँकि इहो जरूरी बा कि एक ओर जहाँ भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा दिलावे के प्रयत्न कइल जा रहल बा, उहईं दोसरा ओर भोजपुरी के कमजोर पक्ष के मजबूती प्रदान करे के जुगत भी करे के चाहीं। एगो विवेकी प्राणी भइला के नाते, ई केहू के समझत देर ना लागी कि भोजपुरी के पद्य पक्ष पर बहुत काम भइल बा आ लगातार काम हो रहल बा। बाकिर एकर गद्य पक्ष अभी भी बहुत कमज़ोर बा।

सातवीं शती में भोजपुरी भाषा अभी आपन आकार लेहल शुरू ही कइले रहे, ओही घड़ी संस्कृत के महाकवि दण्डी गद्य के कवियन के कसौटी मानत लिखले रहलें-

"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।"

कहे के अर्थ ई कि भोजपुरी के हक़ में इहे सबसे अच्छा रही कि एकरा गद्य पर मेहनत कइल जाव आ ओकरा के एतना प्रौढ़ आ स्तरीय बना देहल जाव कि कवनों समृद्ध भाषा के गद्य से ऊ होड़ लेबे में सक्षम हो सके।

उज्जैन भारत के एगो प्राचीन नगर ह। जहाँ के महाकाल मंदिर विश्व प्रसिद्ध मंदिर त हइये ह, साथ

ही उहाँ के राजा विक्रमादित्य भी काफी प्रसिद्ध रहलें। भारत के शायदे कवनों अइसन सयान होइहें, जे विक्रमादित्य से जुड़ल कहानी अपना बचपन में ना सुनले होखस।

एही उज्जैन से मध्यकाल में भोजवंशी परमाल राजा बिहार के बक्सर के निकट आपन राजधानी बनवलन, जेकर नाम रखाइल 'भोजपुर'। राजा भोज द्वारा बसवला के कारण, ऊ जगह भोजपुर कहाये लागल आ उहाँ के भाषा हो गइल भोजपुरी।

मानल ई जाला कि भोजपुरी के उत्पत्ति सातवीं शताब्दी में मागधी प्राकृत से भइल रहे। हालाँकि आचार्य हवलदार त्रिपाठी 'सह्रदय' अपना अन्वेषण के बाद एह निष्कर्ष पर पहुँचलन कि भोजपुरी संस्कृत से ही निकलल बा। उनकर कोष- ग्रंथ 'व्युत्पत्ति मूलक भोजपुरी की धातु और क्रियाएँ' के अध्ययन से ई बात स्पष्ट हो जाता कि 761 पदन के मूल धातु के वैज्ञानिक निर्माण-प्रक्रिया में पाणिनि सूत्र के अक्षरश: पालन भइल बा। एह ग्रंथ के विशेषता ई बा कि एह में भोजपुरी भाषा के धातु आ क्रिया के व्युत्पत्ति के स्रोत संस्कृत भाषा आ ओकर मानक व्याकरण से लेहल गइल बा।

भोजपुरी भाषा के साहित्यिक रूप के विकास सातवीं शताब्दी से ही शुरू हो गइल रहे। एकर प्राचीनतम साहित्यिक प्रभाव सिद्ध आ संत साहित्य में पावल जाला। सन् 769 के सरहपाद के रचना से ही एकर साहित्यिक रूप देखे के मिल जाला। बाकिर कबीर के भोजपुरी के प्रथम कवि के रूप में सम्मान देहल गइल बा।

बिहार के बक्सर-क्षेत्र के निकट जवना भोजपुरी के जन्म भइल रहे, ऊ आगे बढ़त गइल आ बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश में ही ना, बल्कि आज भारतभूमि के लाघत ई नेपाल, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, टोबैगो के साथ ही दक्षिण अफ्रीका, बंग्लादेश, कैरिबियाई देशन तक पहुँच गइल बा। भारत में ही एकरा के बोले वाला लोगन के संख्या लगभग छ: करोड़ हो गइल बा आ दुनिया में एकरा के बोले वाला लोगन के संख्या लगभग बीस से पच्चीस करोड़ तक हो गइल बा। एतना भइला के बावजूद भोजपुरी के भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में अभी भी शामिल नइखे कइल गइल। जवना के कारण एकरा आजो आधिकारिक दर्ज़ा प्राप्त नइखे। हालाँकि भोजपुरी के हिन्दी के एक प्रमुख बोली के रूप में दर्ज़ा प्राप्त बा। भाषाई दृष्टि से आज भोजपुरी के जवन स्थान प्राप्त बा, ऊ निम्नलिखित बिन्दुअन से स्पष्ट हो जाई-

1- आठवीं अनुसूची में शामिल नइखे: भोजपुरी 20-25 करोड़ लोगन द्वारा बोले जाये वाला भाषा ह। बाकिर अभी ले एकरा के भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में शामिल नइखे कइल गइल।

2- संवैधानिक दर्जा के माँग: "ना भीख चाहीं ना कर्जा, चाहीं भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा।" जइसन नारन के साथे भोजपुरी के 8 वीं अनुसूची में शामिल करेके माँग कइल जा रहल बा।

3- झारखंड में भोजपुरी के 2018 में ही द्वितीय भाषा के दर्ज़ा मिल गइल रहे।

4- अन्य देशन में भोजपुरी के स्थिति: नेपाल आ मॉरीशस के संसद द्वारा भोजपुरी के राष्ट्रीय भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त बा।

5- वैश्विक उपस्थिति: यूनेस्को की ओर से भोजपुरी के लोक गायन परम्परा के मान्यता प्राप्त बा।

6- आश्चर्य के बात ई बा कि भोजपुरी के उत्पत्ति हिन्दी के पहिले भइला के बावजूद, आजो एकरा के हिन्दी के एक उपभाषा के रूप में मानल जाला।

जइसा कि हमनी जानतानी कि वैश्विक स्तर पर भी

भोजपुरी आपन उपस्थिति दर्ज करा चुकल बिया आ एकरा लोक गायन परम्परा के यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त हो चुकल बा। बावजूद एकरा संवैधानिक दर्ज़ा नइखे मिलल। एह से भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा दिलावे खातिर निरन्तर प्रयास कइल जा रहल बा। भोजपुरी भाषा के हर मानक पर खड़ा अतरला के बावजूद एकरा अभी ले संवैधानिक दर्जा नइखे मिलल ई दुख के बात बा।

भारत के सांस्कृतिक विविधता में भोजपुरी भाषा एगो जीवंत प्रतीक के रूप में आपन उपस्थिति दर्ज करा रहल बिया। एकरा के खाली संवाद के माध्यम ना समझे के चाहीं। ई त भोजपुरी बोले वाला करोड़न लोग के परम्परा, अस्मिता आ ओकरा सामाजिक चेतना से जुड़ल भाषा ह। देश के कोना-कोना में रह रहल भोजपुरी भाषा-भाषी लोगन के ई माँग बा कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में स्थान मिले। एकरा खातिर भोजपुरिया समाज लोकतांत्रिक तरीका से संसद से लेकर सड़क ले एड़ी-चोटी के पसीना एक कइले बा। भोजपुरिया लोगन का ओर से ई स्वर बार-बार मुखर हो के उठेला कि जवना भाषा के लोकगीतन में एतना मिठास बाटे, लोक संस्कृति के एतना समृद्ध परम्परा बाटे आ अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भी जवना भाषा के पहचान स्थापित हो चुकल बा, ओह भाषा के अबतक संवैधानिक मान्यता काहे नइखे मिल पावल?

मशहूर भाषाविद् चोम्स्की के अनुसार- " भाषा हमारे अस्तित्व का मूल है। अपनी मातृभाषा में ही हम सबसे बेहतर सोच, समझ और अभिव्यक्त कर सकते हैं।" गाँधी जी भी मातृभाषा के पक्षधर रहलें। इहे सब सोच के करोड़ों भोजपुरिया एह आस में बा कि भोजपुरी के आज ना काल्ह संवैधानिक दर्जा मिलबे करी। बाकिर ई काम एतना आसान नइखे। एह शुभ कार्य में अड़ंगा लगावे वाला लोगन के भी कमी नइखे। ओह लोगन के कहनाम बा-

1- भोजपुरी हिन्दी के बोली ह: हालाँकि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भोजपुरी के उत्पत्ति हिन्दी से पहिले भइल रहे। बाकिर एकरा पर आरोप बा कि भोजपुरी भी ब्रजभाषा आ अवधी नाहिंन हिन्दी के अन्तर्गत ही आवेले। एह से एकरा के स्वतंत्र भाषा के बजाय हिन्दी के ही एक रूप मानल जाव।

2- राजनीति उपेक्षा के शिकार: पाँच दशक से भी अधिक से भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा दिलावे खातिर आन्दोलन कवनों ना कवनों रूप में चल रहल बा। बाकिर आज ले अगर भोजपुरी के संवैधानिक दर्जा नइखे मिलल त एकर मुख्यरूप से कारण राजनीतिक दृढ़ता में कमी ही कहल जाई।

3- लिपि के अभाव: भोजपुरी के ऐतिहासिक लिपि "कैथी" ह, लेकिन अब ई देवनागरी लिपि में लिखल जाला। जवना से एह पर आक्षेप लागेला कि एकरा से एकर स्वतंत्र पहचान कमज़ोर हो गइल बा। बाकिर ई कवनों अक्षम्य आरोप नइखे। संस्कृत भी त पहिले ब्राह्मी आ शारदा लिपि में लिखात रहे आ अब देवनागरी में लिखाये लागल। देवनागरी लिपि में सटीक उच्चारण, वैज्ञानिक संरचना जइसन कुछ अइसन अच्छाई बा कि एकरा में एगो-दूगो भाषा ना बल्कि कुल मिलाके 120 भाषा आ बोली लिखाला। अइसन में खाली भोजपुरी के ही काहे कटघरा में खड़ा कइल जाई? बंगला लिपि में भी अनेक भाषा लिखल जाला। मैथिली भी त बंगला लिपि में ही लिखल जाला, त मैथिली के काहे संवैधानिक दर्जा मिलल?

4- जनगणना में त्रुटि: भोजपुरी भाषा-भाषी लोग भी नासमझी में जनगणना के समय मातृभाषा के स्थान पर भोजपुरी के बदले हिन्दी बता देला। जवना का चलते भोजपुरी भाषा-भाषी लोगन के संख्या वास्तविक संख्या से बहुत कम हो जाला।

5- हिन्दी के उपभाषा: भारत सरकार के आधिकारिक रिकार्ड में भोजपुरी के स्वतंत्र भाषा ना मान के हिन्दी के एक बोली के रूप में वर्गीकृत कइल गइल बा।

6- भोजपुरी पर ई आरोप लगावल जाला कि एकरा में विकसित साहित्य के कमी बा। एही के आधार

बनाके भोजपुरी के बोली कहल जाला। हालाँकि इहे भोजपुरी नेपाल, फिजी आ मॉरीशस में संवैधानिक रूप से एगो मान्य भाषा बा। भारत के ही झारखंड राज्य में एकरा के द्वितीय राजकीय भाषा के दर्जा मिलल बा।

7- कुछ लोगन के ई भय बा कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल कइला से हिन्दी निर्बल हो जाई। एह में कुछ त अइसन रचनाकार भी एकर विरोध करे लें, जे स्वयं भोजपुरी के साथे हिन्दी में भी रचना करेलें। हालाँकि एह बात में कवनों सत्यता नइखे।

भाषा खाली केहू के अभिव्यक्ति के माध्यम ही ना होले, बल्कि ऊ ओह वर्ग के पहचान भी होले आ पहचान के सम्मान भी होले, आ केहू के पहचान के सम्मान देहल लोकतंत्र के बुनियादी कार्य ह। भोजपुरी भाषा-भाषी के ई बात समझ में नइखे आवत कि कवनों भी भाषा के संवृद्धि, बोले वाला लोगन के संख्या आ ओह भाषा के

सांस्कृतिक योगदान का पर्याप्त ना होला ओह भाषा के संवैधानिक दर्जा दिलावे खातिर कि भोजपुरी आज भी संवैधानिक भाषा के दर्जा पावे खातिर विकल बा।

आज जब हमनी के अपना आजादी के अमृत साल बना रहल बानी। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के भाव के साथ अपना देश के विविधता के सम्मान देबे का ओर अग्रसर बानीं। अइसन में सातवीं शती के एक प्राचीन आ देश-विदेश में फइलल भाषा के उपेक्षा कतई ना होखे के चाहीं।

अब प्रश्न ई उठता कि भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल कइला खातिर भोजपुरी के हित-मित्र एतना बेचैनी काहे बा? एकर स्पष्ट कारण बा। कवनों भाषा के आठवीं अनुसूची(अनुच्छेद 344 (1) आ 351) में शामिल भइला के अर्थ- ओकरा केन्द्र सरकार द्वारा आधिकारिक संवैधानिक मान्यता (Official States) प्रदान हो जाला, जे अभी भोजपुरी के प्राप्त नइखे।

कवनो भाषा के संवैधानिक मान्यता मिलते भाषा के विकास के कईगो दरवाज़ा खुल जाला। जवना के चलते भाषा के विकास में मदद मिलेला, साहित्य अकादमी पुरस्कार के मान्यता मिलेला, सरकारी परीक्षा में एकर उपयोग होला आ सबसे जरूरी बात ई कि एकरा प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा के रूप में शामिल भइला के विशेष अधिकार भी मिल जाला।

आठवीं अनुसूची में शामिल होखे के अर्थ आ महत्त्व-

1- संवैधानिक मान्यता: भाषा के अन्य संवैधानिक भाषा के सूची में शामिल कइल, ताकि ओकरो 'संवैधानिक भाषा' के दर्जा मिल सके।

2- विकास आ संरक्षण: आठवीं अनुसूची में शामिल भाषा के विकास, संरक्षण आ संवर्धन खातिर केन्द्र सरकार विशेष पहल भी करेले। अगर भोजपुरी ओह में शामिल हो जाई, त ऊ सुविधा भोजपुरी के भी मिली।

3- सरकारी परीक्षा: एह भाषा में (UPSC) जइसन केन्द्रीय परीक्षा में प्रश्न-पत्र चुने के विकल्प मिलेला।

4-साहित्यिक मान्यता: साहित्य अकादमी पुरस्कार में एह भाषा के साहित्यिक कृति के शामिल कइल जाला। जवना से रचनाकार के प्रतिष्ठा बढ़ेला त स्तरीय रचना करे के प्रतिस्पर्धा भी।

5- प्रशासनिक उपयोग: राज्य आ केन्द्र स्तर पर आधिकारिक संचार आ कार्य में एह भाषा के उपयोग कइल जा सकेला।

वर्तमान में, भारतीय संविधान के आठवीं अनुसूची में 22 गो भाषा शामिल बा। रउआ आश्चर्य होई ई जान के कि भारत में 1.35 करोड़ आ विश्व भर में 2.1 से लेके 3.5 करोड़ लोगन द्वारा बोले जाये वाला मैथिली भाषा के आ भारत में 29 लाख से अधिक आ विश्व भर में 1.7 करोड़ से 2 करोड़ के बीच बोले वाला लोगन के भाषा नेपाली के भी भारत में संवैधानिक दर्जा मिल चुकल बा। बाकिर भोजपुरी के लड़ाई अभी चलता। हम भोजपुरी भाषा-भाषी भोजपुरी के संवैधानिक भाषा के श्रेणी में देखे के चाहतानी सन। जवना दिने भोजपुरी भाषा भी एह में शामिल हो जाई, ओह दिन से भोजपुरी के संवैधानिक मान्यता प्राप्त हो जाई, राजभाषा के दर्ज़ा मिल जाई, शेड्यूल्ड में शामिल हो जाई आ भोजपुरी आधिकारिक क्षेत्रीय भाषा कहलाये लागी। ओह दिन के इंतज़ार बा।

(नोट- भोजपुरी बोले वाला लोगन के अनुमानिक डेटा एह से बा, काहेकि पाँच करोड़ आ बीस करोड़ के ई डेटा 2011के ह। एकरा साथ ही कुछ भोजपुरिया लोग बात के बारीक़ी के ना समझ पावेला आ आपन मातृभाषा हिन्दी बता देला)

◆ ◆ ◆

डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद

महातम माई क बोलीके

कउनो सनदरभका बेआखेया आचारजजी अइसन मनगर सुन्नर ढंगसे करीं उधारन सहित्ते जे हरमेसा खतिरा हियरासे बैठ जाय।

लाखो भाओ बनौले आपन बोलचाल के ढंगे बदलि देवे केहू एह बहाने, जे बाहर रहते-रहते आपन बोलिए बिसर गैल बा, हदासे बकार

निकली तो आपने जबानमें। उनके पढ़ावेके बिसये रहे गुलाब रायके निबंध "मातृभाषाका महत्व"।

अनसोहांतो अन्हरिया रातिमें पीठ प

एक जोरदार लट्ठ पड़ते मातर हर घड़ी मुंह टेढ़िआके खालिस रंगरेजी बघारेआला

बंगालीदादा "मां गो" चिचियइबे करिहैं आ "हम केह्ते हैं, तेरेको ,मेरेको " इसटाइलमें हिंदुस्तानी झारेआला मैथिलबाबू

" गै माय " बकते साबित कर दीहें कहां के रहनिहार बानीं।

अरुण भैया वनस्पति विज्ञानमें लेग्यूमिनोसी फैमिली पर शोध कार्य खातिर हवाई (जघे पर उच्चारन 'हवइई') टापू गइल रहलन । होनोलूलू के 'ईस्ट वेस्ट सेंटर' में भारतीय समुदाय के २५-३० शोधार्थी एकट्ठा भइलन त$ बुझाय जे एगो छोट-मोट भारते बस गइल होखे

छात्रावासमें । अलग-अलग राज्यके प्रतिनिधि प्रवासी चहुंपलासे

भैया के भोजपुरी बतियावे के ताव जागल । ए गो संघतिया बिहारीपना से नाक-भों सिकोड़त, अपना के दिल्लीवाला बतावत जादे अंगरेजिए, अइसे कबो-कबो दिल्लवी लहजामें

हिंदियो बोलेवाला पक्का बिहारी लागे । बाकिर भेद खुलिए गइल नू एक दिन । सांझिए खानी पार्क काओर टहले निकलल जमातमेंसे इहांका पिछुआइल रहनीं । बगलआला छरदेवाली से बाहर निकलल एगो कुक्कुर पिठिआइए दिहलक । परीकरमा चालू रहे । इनके श्रीमुख से निकलल उद्गार --

"ई सरवा बनरमुंहा सभे कुक्कुर राखेले सन काहे .... धुरे धुर.. पोसेके जब लूरे नइखे.. धुरें धुर् ..."

तालेक चहुंपिए जा तानी भैया ---

" अब ना बोला , छपरहिया बबुआ,

कइसन लागल होनोलूलू हो..."

◆ ◆ ◆

नक्कू मझव्वी

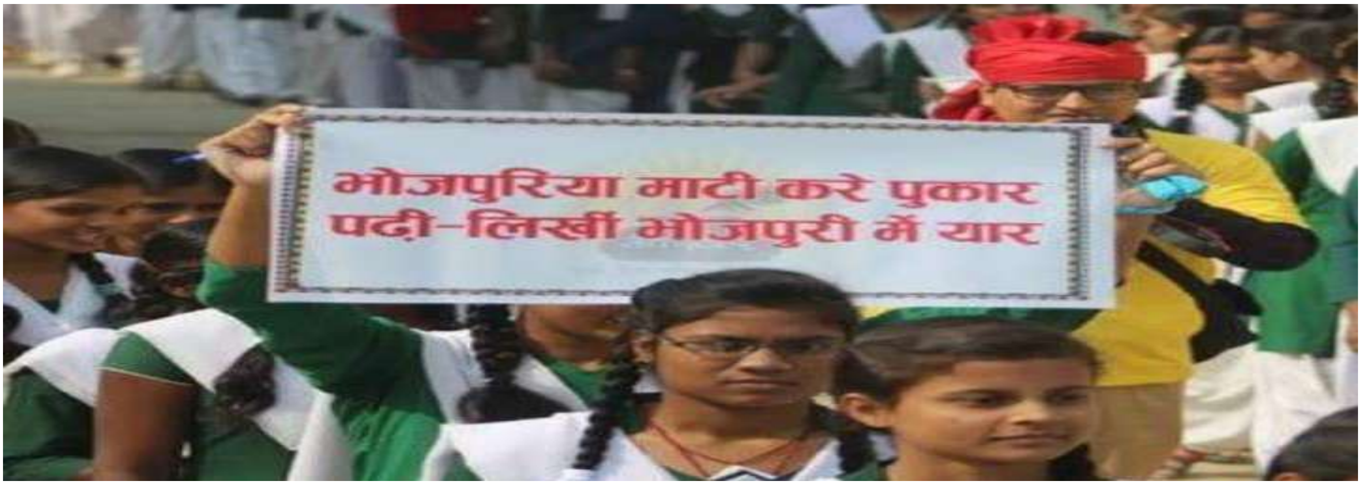

आजादी ?

आजादी-ओजादी कुछऊ ना !
मोनके भरम हऽ,
आपन-आपन करम हऽ,
जस करनी तस भोगहु ताता,
अब नू बुझाता!
झोंका गइल धूरा,
अंखिये चोन्हरिया गइल पूरा ।
खाली चउदे-पनरेके चक्कर,
आ की दू मूड़ीके टक्कर?
बेरा तऽ उहे अधरतिया ,
तब कइसे ओन्ने चउदे
आ एन्ने पनरेके बतिया ?
घड़ी एक्के ,तऽ कइसे
घड़ी-घड़ी के फरक ?
अजीब बतकुच्चन आ तरक !
आजादी थोड़के भइल !
अजबे पंचइती भइल !
पंचइतियो का ? बनरबाँट !
घइला ना डूबे
आ खड़ा नहाय हाथी,
अइसन औघट घाट !
बटवारा माने बेहुदई,
उपास पूड़ीके जलखई!
अइसन त ऽ ई भइल तमासा
नूनमें मिलल फुटल बतासा !
ओन्ने देखीं जा इम्तिहानके हाल ।
जवाब आ सवाल
एक से बढ़ एक कमाल !
बलू "हिस्ट्री ऑफ इंडियन इंडिपेंडेंस" में 'डिस्कस' ,
काहे ? 'कोसचनवे' जब
'आउट ऑफ सिलेबस' ;
" मूट पॉइंट्स ऑन फार्मेशन ऑफ़ पाकिस्तान"
इम्तिहनवे बाइकाट, बिदेआरथियनके
हंगामा, चाबस ! ◆ ◆ ◆

✍ नक्कू मझव्वी

गालिब के पढ़ते मातर

पढ़ते गालिब ई खियाल आइल
उल्था कइला के असर होखे तक

कुछ ना कुछ फेर-बदल हो जाई
बतिया गालिब के खबर होखे तक

ठीक बा सुनके ना भइल संतोख मीत लोगनसे चाहीं रद्दे अमल

बा गुजारिश , मिलो सही इस्लाह
शेरके असली बहर होखे तक

मान लेनीं जे महटियैबऽ ना तब्बो
राखि हो जाएम नू तोहके खबर होखे तक

गालिब अइतन आ सिखितन भोजपुरी,
बोलितन बतिया ई लहर होखे तक

मान गइनीं ना महटियैबऽ बाकिर
राखि हो जाइब नू तोहके खबर होखे तक

ठेंठ बानी सवाचेला   देहात
अतनो चलि जाइत शहर होखे तक

"ई तऽ मननीं ना तगाफुल करबऽ
हो जाइब खाक बाकिर तोरा खबर होखे तक"

◆ ◆ ◆

नक्कू मझव्वी

आपन करनी पार उतरनी

जिनगी भर बबुआ मैकॉले, मकले अउर मकवले,
माकते रहस मानस पुत्तर जातो जात
सिखवले।

घसकल अंगरेजवा, बाकिर रंग सियरासे का उतरी ?
चढ़ल कपारे अंगरेजिया, अंगरेजियत का बिसरी?

हउकी फुटबवल लील गइल छुद्दर जे किरकेट,
मरकज तालीमी गुरुकुल ना , बा कॉन्वेंटी जेल।

ऊंख पेराइत रोज फजीरे, होइत ना 'गुड़मंगनी' !

कवन दनाई 'मम्मी पापा' माई बाप के कहनीं ?

'पापम्' सबद नपुंसक से ' पापानि ' बहुवचन हो जाला,
ई चाहें ' पापाचारी ' सनछेपमें
 ' पापा ' हो जाला।

जइसे अब मॉडर्न ' मॉड ' भा पॉपुलर 'पॉप' कहाता ,
योगाभ्यास में मुंह दुखाता, 'योगा' कहल जाता।

' मां ,माई, अम्मा, ईया ' समबोधन के का कमी ?
चार हजार सालके सड़ल पिरामिडमें
 'ममी' ?

तान चमेटा माइ-बाप के बबुआ करस ' टा टा ' ?
'हेलो हाय ' के का मतलब ? ' हरि ओम् ' में कवन घाटा ?
बेद-पुरान तो कहते आइल , सबसे उप्पर 'ओम् '
'नासा ' तक रेकारड कइलख सुरुज देवमें 'ओम्'

 माइके बानी संबिधानका अंगना में मनजूर भइल,
अंगरेजियो पढ़ला लिखला पर बा तारीफ, सहूर भइल।

सरकारी अपसर रहितो आपन बिहारके बबुनी,
आइ ए एस मैथिलीमें कइलस सन् पनरेमें रजनी।

◆ ◆ ◆

नक्कू मझव्वी

भेलेनटाइन भोजपुरिया

कउना फेरामें फँसल बानीं, कुछऊ ना जी भेलेनटाइन,
खेला खाली अढ़ाई आखर, ओझा जइसन तइसन डाइन;
झूठ-मूठके टोना-टोटका, लबराईके ओझाइती,
चहुँपल जघे पे ममिला जब्बे होखेम हाजिर लाइन !
भरम मोनके करम आपन, जइसे कोविडमें कोरेनटाइन,
चक्करमें चउदेके ई तऽ दुनू सहोदरे भाई-बहिन।
तारिख एगोके चउदे तऽ दोसरोके चउदहे दिन,
भेलेन-कोरेन बा चउदे-चउदे दुन्नू टाइन-टाइन !
गइल बियाह गाछी पर समुझीं, हेलल भँइसिया पानीमें,
लिभ-इन-रीलेसन एहर, चालू ओहर भेलेनटाइन !
लोभमें लभ-मैरेजवाके ,बेर-कुबेर बरेकप होला,
डाइभोरसके चरचा तब सूनेला सगरे टोला।
एहीसे कहेले नक्कू बनल मत रहीं अपने भक्कू,
काहे बेसाहेब भेलेनटाइन, तीन सै पैंसठ परेमके दिन !
आवत फरौरी गजबे चढ़े काहे बेरामी पेयारके ?
आपन मरजादा बिसरीं जिन, लिही भम्होर बिलाँएती नागिन।
तउनो पर नाहिए मानब, रटना रटेब भेलेनटाइन,
सोचीं, सीखीं बिटियासे, जे भोजपुरिया गीतिगाइन ;
लोक-लाज आ लोक-संसकिरतीके जेकरा बा चाव,
बबी मनीसाका कोरामें सोनपरी-सन नातिन।
चउदे फरौरी नियराते मनसाएन ई दिनवाँ,
बाजो बधाव इहे नू हवे मय मङल सुभ जनमदिन

नक्कू मझव्वी

◆ ◆ ◆

सुन हो कन्हाई

उठाव ना कन्हाई गगरी बड़ी भारी!
दुनिया परल बा भरम के मझारी।

नन्हीं चुकी गोड़ हमर नन्हीं चुकी हाथ बा
अगड़ी पिछाड़ी कवनो संगी ना साथ बा
संझा होई त घरवा चहुँपेम अबेरी।
अंँखिया खोल ना कन्हाई!

चढ़ल जवानी हमार लचकत कमरिया
गरजे बदरिया आजु चमकत बिजुरिया
बजरी दुल्हवा हमके दी बड़ी गारी।
तनी जोगाव ना कन्हाई!

आइल बुढ़ारी त अंँखिया धुधुआई
देह के मोटरिया अब नाहीं ढोवाई
मउत सउतिया हमके घर से निकारी।
अब सम्हार ना कन्हाई!

मटिया के देह ह ई पानी परान बा
धरती अकासे में दुनिया हरान बा
तोहरा के छोड़ अउरी के सँवारी।
भरमाव जन कन्हाई!

◆ ◆ ◆

डॉ शिप्रा मिश्रा
प० चम्पारण, बिहार

गदबेरा

"का हो दीदिया! कइसन पतोह उतरले बाड़ू! लमघोड़ी.. तनिको बुझाता काले के पतोह हिया।"

"अब रहे द.. ढेर बोललू। तोहार पतोहिया कइसन बिया! खिड़लिच खनिया.. बुझाला कहियो अन्न से भेंटे नइखे भइल। दोसरा के केतना ताकेलू।"

दुनु जाने के झींक लगावल फुआ के तनिको सोहात ना रहे। सुनत- सुनत एके बेर बीखे धइली - "रे त तोनी के कवन सुभइत रहलु सन। चिल्होर खानी त रहलु सन। ए घरे लात धइलु सन त भाग चमक गइल।"

अब त ल ना.. मुँह फुल्ला-फुल्ली सुरु हो गइल। जग परोजन के घर आ एही में एकनी के कोहनाइल। अब के चुल्हानी जाता, के भात पसावता, के चाउर फटकता। एकनी के लीला देख के त बाई उपट जाता। फुआ के त सारा मलिकाव फेलिया गइल रहे।

अकेले का का करस। एने हजामिन के निमने लुगा चाहीं। अब जे आइल बा पहुनाई से नेवता में, उहे नु दियाई आकि अब इनका खातिर नौलख्खा किनाव-

"बढ़नी मारो..लेबु त ल, ना त उफर पर। हमरा ना जान्गर बा, ना एतना धन बा जे उझील दीं तोहरा के। "

"मलकिनी! निमन लुगा दीं। बेटी बियहे के बा। हम कहवाँ से करजा काढ़ीं? रउए लोगिन के नु असरा बा। कुछु मदद होखो पंच के।"

फुआ के जिनगी के कवनो ओर- छोर ना रहे। अभी अपना माई के गोदिये में रहली कि परदादा बियह देहलें। उनका सुध कन्यादान करे के रहे। पोती के जांघ पर बइठा के पबितर कन्यादान करे के रहे। कन्यादान क के अपने त गंगा नहा लेहलें बाकिर पोती के भाग डुबा देहलें। गवना के पहिलहीं फूफा के टीबी हो गईल। फुआ के हाथ- बांँह धरे वाला फूफा

फेर लवट के ना अइलें।

सात बरीस बाद फुआ के लोटा संघे गवना भइल बाकिर ससुरा में उनके कवनो मान- जान ना भइल। उनका देवरू के बियाह में भाई भार- भरहुत ले के गइल रहलें। फुआ के दुरदसा देखि के उनके करेजा फाट गइल। ओकनीं के एक कवर निरइठ अन खाए के ना द स फुआ के। फुआ से निमन त उहाँ के दाई- लवड़िन लउक सन। देवरू के बियाह निफरला पर भाई बिदा करा के संघे लेले अइलें। तब से उनका ससुरा से ना कवनो बोलावे अइलें सन, ना कहियो भाई उनका के भेजलें। फुआ जुगजुगान खतिरा इहवें रह गइली।

भाई- भउजाई जले जियलस लोग फुआ के तरहथिए पर रखलस लोग। बाकिर बरहमा के लिखल करम के मिटा सकता! पारा पारी दुनु जने मर बिला गइल लोग।

फुआ के लगे बड़ा गहना- बीखो रहे- हंँसुली, गोड़हरा, पहुँची, मोट-मोट गर के सीकड़, भारी कनफूल। गहना के एगो पेटिए रहे फुआ लगे। नइहर, ससुरा के ढेर गहना रहे उनका लगे। फुआ के गहना पहिने के बड़ी सौख रहे। कबो-कबो पहिनियो लेस। फुआ के पावजेब, बिछिया बड़ी भावे। कबो पहिन लेस त पुरनिया लोग मार- मार करे - "देख स रे! एकरा बिछिया पहिने के सवख लागल बा। केकरा पर बिछिया पहिनबे रे!"

बाकिर फुओ रहली पक्का करेजा वाली। भाई के कोठी, असबाब, बाल- बच्चा के जीनगी से बढ़ के मनली। ओकनी के माई से कम दुलार ना देहली। हजमिनिया जानत रहे कि फुआ के बोली बीख ह, बाकिर फुआ करेजा से मयगर हई।

अपना कोठरी के झरोखा से नएकी पतोहिया सब देखत सुनत रहे। खवासिन दुआरिये पर बइठल रहे-

"तनिका सुनी त! उनका के एगो लुगा दे दीं। हमरा नइहर से ढेर लुगा आइल बा।"

"ए बहुरिया! तू बीच में का परल बाड़ू। फुआ के मलिकाव ह, उनके के देखे द। फुआ के जब उपटेला, त केहु के मान में ना आवेली।"

हजामिन किहाँ लइका वाला अइलें सन। लड़की कलसा ले के ओकनीं के सोझा ठड़ा भइल। लड़की के चलवा के देखलें सन, बोलवा के देखलें सन, इस्लेट पर नाव गाँव लिखवइले सन।

ए बात के कुछ दिन बीत गइल रहे। घर के चरचा बहुरिया के कान में त परबे करे। एक दिन फुआ गंगा नहाए तिरवेनी गइल रहली। घर के खवासिन से हजामिन के बोलाहट भइल-

"राउर बेटी का करेली? पढ़ल- लिखल बाड़ी?"

"हँ! ए कनिया! मटरिक ले पढ़ले बिया। आगे पढ़े के कहेले बाकिर अब बियाह में पइसा झोंकीं आकि पढ़ाई में? पढ़ियो के त माटी झेंटी करहीं के बा।"

"हमरा लगे लेया के भेंट कराईं। हम बतियावतानी ओकरा से।"

इहो बात बितले महीना भर हो गइल। बियाह के दिनों तय भइल। बाकिर बहुरिया के मन में बड़ा खुदबुदी रहे। हजामिन के घर कवनो नगीचा त रहे ना। एक दिन गदबेरा में बहुरिया चहुँप गइली हजामिन किहाँ -

"क्या नाम है तुम्हारा?"

"अंजलि"

"अभी ब्याह क्यों कर रही हो? अभी तो तुम्हारी उमर भी नहीं हुई है।"

"का करें भउजी! हमारी बात सुनने वाला कोई नहीं।"

"मत करो बियाह..आगे पढ़ो।"

"हमारा बियाह तो एगो ओटो डराइबर से हो रहा है। उ पढ़लो लिखल नहीं है।"

बहुरिया लवट के घरे त आ गइली, बाकिर मन अथिर ना रहे। दिन रात सोच लागल रहे कि केहुतरे बियाह टर जाओ। बाकिर फुआ जी के आगे केहु के चले ना -

"का हो! अभिन चार दिन तोहरा अइले ना भइल, आ गोड़ बहरी निकले लागल। कवना घर के हऊ। एगो रहन नइखु सिखले।"

अभिन फुआ के बातो पूरा भइल ना रहे, तले खवासिन बीचे में बोल उठली-

"ए फुआ! जाए दीं। अभिन बहुरिया के बुधिए केतना बा।"

"का रे! तोर ई मजाल हो गइल, आकि फुआ के बात काटे लगले।"

फुआ के त एड़ी से कपार ले जरल रहे। खीसे धनकत रहली।

"ए बहुरिया! अब केतना दिन बइठल खइबु। रोपनी होता..मजूर लोग के पनपियाव बनावे के बा। जा चूल्हानी!"

बहुरिया बेचारी सहरुआ लड़की.. ई सब कहाँ देखले रहली.. रोपनी-सोहनी, माटी- झेंटी। तबो बेचारी बइठल पनपियाव बनवली। मने- मने खिसियातो रहली- अपने त चल गइलें नोकरी करे। आ हमरा के फुआ के कपारे फँसा देहलें। अबकी हमहूँ संगे चल जाएम। ना आपन सास बाड़ी, ना आपन ससुर। इहांँ केकरा खातिर रहेम। बहुरिया के लोर रोकले ना रोकाए।

खवासिन सब बूझत रहे, मने फुआ से अझुराए के मतलब रहे जवनो दु कौर खा के जियत रहे, ओहु पर आफत हो जाइत।

बिहान भइले नवकी बहुरिया पेटी-बाकस बान्ह के तइयार-

"हम इहवाँ ना रहेम..माई किहाँ जातानीं। एतना कार धंँधा हमरा से ना होई।"

फुआ के त बकारे बन हो गइल। अब इहो देखइब का हो दइब! घर के इजत बहरी जाव आ लोग बाग तमासा देखो एसे पहिले छन भर में फुआ नरम हो गइल रहली-

"देख बहुरिया! भाई-भउजाई के जाल सँभारत भुला गइल रहनी हँ कि इ हमार राजपाट ना ह। हम तोहार एगो खर जियान होखे नइखीं देहले, ना अपना जिनगी में जियान होखे देम। अब तू आ गइलु आपन जाल सँभार! अब ए जिनगी के गदबेरा में हम का मलिकाव करीं! आपन कुल- कापड़ सँम्हार! हम गंगासागर नहाए जाए के चाहतानीं।"

नवकी बहुरिया भी इज्जती घर के रहे। ओकरा बुझत देरी ना लागल कि ओकरा से बड़का भारी खसूर हो गइल बा। जुरते फुआ के गोड़ ध लेहलस-

"हमार बाबूजी रउरे के देख के बियहले बानीं। हमरा के छमा करीं। आपन कान ध के, किरिया खा के कहतानीं फेन अइसन खसूर ना होई। ए कुल- खनदान के पुरनिया रउरे बानीं। अपना सरन में ले लीं..कर जोरतानी।"

खवासिन आ बाकी दाई- लवड़िन के त ठकुआ मार देले रहे। फुआ के मन के कवनो दुख- तकलीफ बरदास्त से बहरी रहे। आज ले अइसन कहियो ना भइल रहे-

" जाए दीं फुआ! मतारी बरोबर बानीं। सब त रउरे कुल पलिवार ह। आज ले निबहनी, आगहुँ निबाह दीं। रउरा से हमनी के जियतानीं। हमनी के टुअर हो जाएम सन। छमा करीं छमा करीं! हमनी के अरदास बा..दसो नोंह जोरतानीं"

तनी देर बाद फुआ अथिर भइली। घर के हँसी- खुसी फेन से लवट आइल। फुआ धीरे- धीरे बड़ी सानत से घर के जाल, पथार से अपना के अलगा क लेहली। अब घर के सारा जाल बहुरिया देखे लगली।

ए बीचे एगो अउरी निमन बात भइल। दान-दहेज के लफड़ा से अंजलिया के बियाह कट गइल। अब अंजलिया फुआ के सेवा टहल में रहेले। उनके लगे सूतेले, उनकर कार सँभारेले। बहुरिया ओकर आगे पढ़े के इंतजाम बात क देले बाड़ी। जिनगी के गदबेरा में फुआ के अब कवनो चिन्ता फिकिर नइखे। बहुरिया फुआ के हर खातिर बात करे के एके गोड़ पर तइयार रहेली। फुआ भाई-भउजाई के करजा त ए जनम में ना उतार सकली, मने अगिला जनम में उतार सकस एकरा फिकिर में जरूर रहे लगली। बहुरिया के अपना गहना के पेटी के संघे जिनगी के सारा भार सउँप के फुआ निहचिन्त हो के भजन-किरतन में रम गइली।

◆ ◆ ◆

डॉ शिप्रा मिश्रा
प० चम्पारण, बिहार

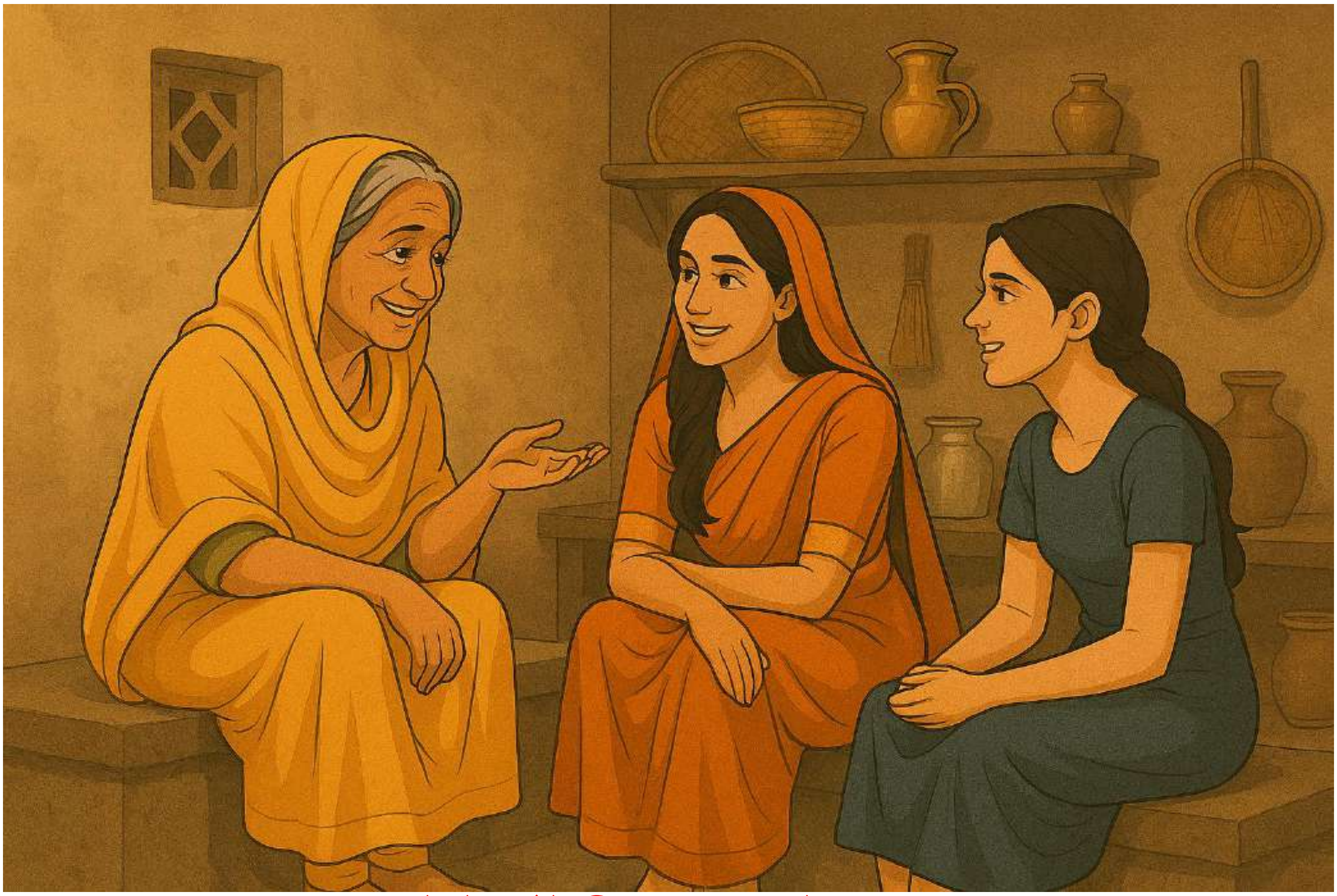

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

एगो देह

सामने रहलू तू अचके खुलि गइल

आँख तहरा रूप-जल से-धुलि गइल

दूनो आँख अइसन लागल कि

पियासो पियासल होखे

जइसे नदी के कछार पर

असरा लगवले एगो- संन्यासी

चान लेखा मोती सहेज के

राखल देह कहे,

ल ई सुधा पियऽ

जइसे कस्तूरी के गंध-

मिल गइल एकाएक।

◆ ◆ ◆

डा राजेन्द्र भारती
संपादक_
दीया बाती ई पत्रिका

घेंट में कुछ बा

घेंट में कुछ बा पेट में कुछ।
राम पढे इस्लेट में कुछ।

कागज पर बा गान्ही ,भीम।
लउकत बाटे डेट में कुछ।

देस भगत भा राष्ट्र सखा।
उद्यमी बाडें टेट में कुछ।

पूस आ माघ में गुटिआइल।
नतिआ फागुन - जेठ में कुछ।

सेतिए - - गइलें - - जरदगव।
निकलल खग आखेट में कुछ।

जइसन करनी उ भरनी हयात।
सरग नर्क बा ठेठ में कुछ।

◆ ◆ ◆

हिया के दियना

हिया के दीअना बुताए ना कहीं।
गँवे गँवे जरे धधाए ना कहीं।

समय के चाक घुमरी लाए ना कहीं।
कि अरजलो तुहर बिलाए ना कहीं।

कि तीर , तेग रन कराए ना कहीं।
कि धर के एकता फफाए ना कहीं।

कि ढेर जोगी मठ उजारबो करे।
कि सीध गउ लुगा चबाए ना कहीं।

अगरबती लहस के लूती जन बने।
हयात आजु नीन आए ना कहीं।

◆ ◆ ◆

डॉ उदय हयात

आज कऽ हाल

दुतल्ला तीनतल्ला बनावल कई बिगहा में घर जाता
नया रंग में,नया ढंग में ,सभे सुविधा से भर जाता।
बड़ा अभिमान होला देखि के आपन कमाई के
महल खड़हर भइल, ई देखि लोचन लोर भर जाता ।।

रहे रुनझुन ,खनक छनछन ,कहानी हो गइल बा अब
गली, आंगन, दुआरा, झाड़, झाला घूर बाटे सब।
इहाँ आकाश छूए में ,सभे अझुरा गइल एतना कि
देवकुर सून ताकऽता खुली ताला इहाँ फिर कब ।।
टुकुर टूटल कुकुर के काग चिरई अब न आवत बा
भरोसा भीखमंगन के दुआरे ना बोलावत बा ।
भवद्दी,नेवता,नाता पुरनका छूट सब जाता जहाँ जनमल,
पलल, खेलल, बढ़ल, ओहके भुलावत बा ।।
गढ़ल रहे पहिलका लोगवा ,थोरही पढ़े पावे
बनावे बसे खातिर गाँव में, धन शहर से लावे।
घेराइल बा अब एतना मोह-लालच में सभे मनई
उजरि के गाँव से जाके शहर के बात बतियावे ।।

लड़िकवन के पढावे-बढ़ावे सब शहर भागत
बाऊ! माई-बाप के केतना बुझी केहू न आंकत बा ।
शहर के बात बाउर बा, शहर के मन में माहुर बा
किकुर जाता उहाँ के हवा में परिवार लागत बा ।।
शहर में सउख बा खाली, खरच से कम कमाई बा
बची ना गाँव तब, जीये बदे पइसा चबाई का?
न मन के मन भरे पावल,ए दुनिया में केहू अबले
जो चाहीं, संग सबका गाँव में रहि धन उगाई बा।।

मकानन पर पता लीखल रही, तब लोग पहचानी
घरे-गाँवे-जवारे लोग खलसा नाँव से जानी।
परी आफत- विपत, तब बे बोलवले आन आवेला
मरम ई, गाँव के गहिर, शहर के लोग ना मानी।।

शहर के संगमरमर से, निमनका 'रेही' गाँवे कऽ
लिफाफा लकलकाता लाल लउके लोग नावे कऽ।
शहर में जान बा, पहिचान, परिचय प्रीति पइसा से
न जानी शहर में केहू के केहू लोग ठाँवे कऽ।।

इहे हालत रही त, फिर न कवनो गाँव बचि पाई
पुरनका रीति मिटि जाई, सभे संस्कृति दरच जाई।
बुढ़ापा में भइल दोंहपच बहुत लाचार कइ देला
छुछुंदर-साँप के गति जी रहल बा बाप आ माई।।
~ 'रेहि'✍

◆ ◆ ◆

डॉ विवेकानंद तिवारी 'रेहि'
बलिया

महंगाई

दुआरी दानव खड़ा भइल, सुरसा जस मुह चिहारि।

बाजारी महंगी मांग ठेठावे, फाग आठान पड़ल दुआरि।

बुतुरुआ नधियाइल अंगना, महतारी अँउजाइ धुनस कपारि।

नूने सतुई सानि सानि के ,कसहू बितत तीज तेवहारि।

खुशहाली में आग लगाई केभइल राजावा डीला खाड़ि।

मंतरी-संतरी सभ हाथ सेंक लोगन दुअरा जरत चिलारि।

लोभन के कर मिराई के, योजनन के रस्सी तेयारि।

महंगाई हमजोली बन के ठठाली आपन दांत चिहारि।

उमेश कुमार राय
जमुआँव,भोजपुर

◆ ◆ ◆

अनमोल नारी शक्ति

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

एगो सुनर आ सुव्यवस्थित परिवार में सुसंस्कार के गाछि पनपेला जवना से परिवार में सुख-सवृद्धि आ शांति के फल परिपक्व होला जवन मकान के सुव्यवस्थित घर में बदलेला आ तब एगो साधारन घर भी स्वर्ग बन जाला आ स्नेह-पेयार के बरसात होला ना त अलिशान महल पेयार- स्नेह आ शांति के अभाव में काटे धावेला जवन जीते -जी नरक के एहसास करावेला। एही से कहल जाला कि इहवे स्वर्ग आ नरक बा। सुव्यवस्थित परिवार के संरचना कइल आज के जुग में ठटे बात नइखे एकरा खातिर घर के मालिक के बहुत तेयाग आ तपसेया करे के पड़ेला। सभ बड़-छोट प निष्पक्ष रूप से बराबर धेयान देवे के पड़ेला। परिवारिक संरचना के सुदृढ बनावे में नारी शक्ति के अहम भूमिका होखेला। नारी के बहुत रुप होखेला। ई मतारी, बहीन, बेटी, पतोह, आजी, दादी, नानी, नातिनी आदि सम्बन्ध के बखूबी सवारेली। नारी घर के खराब वातावरन के सवारि के स्वर्ग जस बनावे के सामर्थ रखेली ना त अपना प आ जास त महाभारत करा के बड़-बड़ महारथिन के भी विनाश करा सकेली। इहे देश प आफत आइल त लक्ष्मी बाई भी बन के देश के आन बचवली। ई परिवार खातिर अतना गिहथिन होला लोग कि लुगरी गांथ के घर सवार लेली । एही से नारी घर के लक्ष्मी कहल जाली। कुंवारे से बढ़िया घर-वर खातिर नारी सोमवारी-व्रत करे शुरु करेली फिरु आपन बेटा खातिर जिउतिया , आपन सवांग खातिर तीजव्रत , भाई खातिर भइया-दूज, घर में बरकत खातिर तरह-तरह के पूजा पाठ करेली । अगर सही मायने में देखल जाए त सनातनी परम्परा के ध्वज वाहक भी बाड़ी काहें कि विश्व के कवनो कोना में रहेली त आपन धरम आ परम्परा के श्रध्दा ने निभावेली।अपन परिवार के आगे बढ़ावे खातिर हर तरह के अधामत करेली । अपना खातिर कवनो अधामत ना करेली। तबहूँ पुरुष प्रधान समाज में इनका हक के अनुरुप आदर ना मिलेला। हद त तब होला जब होत फजिरे से घरूआरी में लागेली आ खाना-खाए के समय प कवनो आगन्तुक आ जालें त आपन खाना खिला के अपने उपासे रह जाली बाकिर केहू के भनको ना लागे देली एहि से नारी अन्नपूर्णा भी कहाली। प्राचीन ग्रंथन में नारी के बहुत सम्मानीय स्थान

दिहल गइल बा। नारी बिना धरती प मानव जाति के कल्पना भी ना हो सकेला। ई मानव जाति जनमदाता हइ। एही से प्राचीन ग्रंथन में नारी के बहुत सम्मान दिहल गइल बा। इनकर पूजा करेके बात कहल बा। प्राचीन ग्रंथ में लिखल बा कि -" यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता "अर्थात -जहवाँ नारी के वंदनीय मानल जाला उहवाँ देवता के वास होखेला। हमार मतलब बा कि जवना घर-परिवार में नारी के सम्मान देल जाला उहवाँ शांति आ सद्भाव रहेला जवना से सुख आ समृद्धि आवेला। समृद्धि से कृति बनेला जवना से चिरकालिक सामाजिक प्रतिष्ठा बनेला काहे कि ग्रंथन में लिखल बा-" कृति यस्य सः जीवति। अर्थात जेकर कृति होखेला ओकरा मरला के बादो ओकर नाम जीवित रहेला। पुरुष प्रधान समाज बना के नारी प ढेरो कुरीति थोपल गइल जवन ऊ शिक्षा के अभाव के कारण रहल। आज जब समाज अपना के शिक्षित कहे लागल त समाज में नारी के समाजिक, आर्थिक, वैचारिक स्वतंत्रता प्रदान करके पुरुष लोगन के बराबर अधिकार मिलल। नारी प थोपल समाजिक कुप्रथा के सरकार कानून बना के नष्ट करत बा। नारी के सम्पति के समान आधिकार मिलल। तीन तलाक, हलाला हटल। नौकरी में आरक्षण मिलल। शिक्षण के क्षेत्र में प्रोत्साहन खातिर आर्थिक मदद मिल रहल बा। नारी भी हर मुकाम प अपना के श्रेष्ठ सावित कर रहल बाड़ी। आईएएस, IPS , सेना आ राज्य पुलिस बल में बड़े-बड़े पोस्ट प बिराजमान हो के नारी गौरव बढ़ा रहल बाड़ी। हाल ही में ऑपरेशन सिन्दूर में अहम भूमिका निभा के देश के गौरव बढवली। ई लेखक, कवि, मोटिवेट, गायिका, नेता सभे भूमिका में सफल बाड़ी। देश के सर्वोच्च पद प्रधान मंत्री आ राष्ट्रपति के पद के भी शोभा बढ़वले बाड़ी। तबो महादेवी वर्मा नारी के अबला काहे बतवली हमरा मगज में आज तक ई बात ना अमाइल। रानी लक्ष्मी बाई त बहुत बड़हन योद्धा रहली जवन अंग्रेजन के खूबे पछड़ले रहली। इनकर अपना जबाना में कइगो रण डंका बजवली तबो महदेवी वर्मा नारी के अबला का देख के बतवली , ई बात आज तक हमरा मगज में ना अमाइल।

◆ ◆ ◆

उमेश कुमार राय
जमुआँव,भोजपुर

सास-पतोह (लघुकथा)

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

मरऽ बहरवनी, एकर माटी लागो! मटिया लगना रमजिउआ हमरे बबुआ खातिर कहिया से बहेंगवा बेटी रखले रहल ह। जब से आइल , गाछी प के चढ़ल मन भुँइया लोटे लागल। बड़ी चढ़-मढ़ के बारात दुआरे लगा के खूबे धरछना से पतोह उतरनीं बाकिर उहो करकसे मिलल। हमरा घर प कवना डाइन के नजर पड़ल कि सभ सुख-शान्ति बिला गइल। ई हमरा भर-घर के साँसत में डलले बिया। कहवाँ गइलन बबुआ ! तोर लोला थूरतन तब बुझाई । उहो मेहरी के गुलामे भइल बा। हे भगवान ! कसहूँ हमरा घर के बचा ल -- तमतमाइल एकसुरिए रमुना अपना पतोह के उघटा-पुरान कइ के लम्हर साँस लेहली आ बुदबुदइली कि एकरा के बोलत-बोलत हमार मन झेवान हो गइल बाकिर एकरा प तनिको असर नइखे। देखीं ए माँ जी ! बड़-बड़ लोग सास के परिभाषित कइले बाड़न कि जे पतोह के हर साँस लेवे में साँसत महसूस करा देली उहे असली सास होखेली। रउआ हमार असली सास बानीं । काहें नधियाइल बानीं, रउंआ मुँह-हाथ धो के कुछू खा लीं। खाएक तेयार बा।खाइब ना तले रउआ चिड़चिड़ापन धइले रही--पिंकी अपना सास के छोह से कहली। पिंकी अपना सास के कवनो बात के दुख ना मानेली। ई शिक्षित पतोह रही एह से कबो सास-पतोह के झामाकूटी ना होत रहे। जब रमुना नधियास त पिंकी गऊ जस शांत हो जास। एहसे रमुनो ढेर देर तक ना गुस्साइल रह पावस। ऊ खुदे नरमिया जास आ फेरू सास-पतोह से माई-धिया बन जास। ई अइसन कबो-कबो होत रहे ना त ई माई-धिया बनके रहस। रमुनिया काहें खिसियात बाड़िस ? तोर त पतोह हीरा बाड़ी। कबहूँ तोरा के जवाब ना देवे ली। हमार पतोह के देखऽ। नइहर से खूबे सामान ले आइल बाकिर कवनो लूर-सहूर ना ले आइल। महीना में दस दिन अलगे बनावेली। खूब नइहर-ससुरा एक होला आ मान-मनउवल होला तब कुछ दिन ठीक रहेली। हमरा कवनो परिवार से भर मुँह बातो ना करेली। लोक-लाज के कारण ढोआत बाड़ी।--धनेसरी आपन दुख रोवली। पिंकी के रमुना पसंद करके आपन पतोह बनवले रही। रमुना आपन बहिन किहे छठ पर्व खातिर गइल रही। पिंकी के बात- व्यवहार रमुना के निमन लागल । ई ऊच्च शिक्षा पवले रही बाकिर इनकर हाव-भाव साधारण रहे । बहिन से आपन पतोह बनावे के कहली त इनकर बहिन कहली कि ई गरीब घर के हई । पिंकी के घर वाला तोहरा बरोबरा के नइखन त लेन-देन तोहरा लाएक ना कर पइहन। तब रमुना कहली कि हमरा के दहेज ना सहूरदार आ सुनर पतोह चाहीं।अगल-बगल में दहेजुआ पतोह बाड़ी लोग अलगाउज कर के फजिहतियाव कइले बाड़ी। हमरा दहेज ना , रहनदार पतोह चाही। पिंकी लाज रखले बाड़ी। पतोह बन के अइली तब से कबहूँ उलट के जवाब ना देली। रमुना कतनो खिसियाली आ गरियावेली बाकिर पिंकी के एक मुस्कान इनकरा के मनावे खातिर काफी होला।

✍️ उमेश कुमार राय

◆◆◆

बात मोहब्बत के हउवे

मन के बात हवे ई कुछ ना कुछ त फरका हो जाई

बाक़ी आँखिन देखि कहीं तऽ बहुते कड़वा हो जाई

तू बीतल कल के साज हवऽ, जा ना अब तू दूरे जा

साथे रहला से हमार दुःख अउरो गहरा हो जाई

बात कमी खोजे पर जब सोझा आइल बा,, तब सुनि लऽ

हम चुप बानीं, तू कुछऊ कहि लऽ, सब सच्चा हो जाई

केहू ना संतोष दिहल जब रोवत पपनी काँट भइल,

ए हो अब चुप हो जा, कुछ दिन में सब अच्छा हो जाई

लाख सवाल करऽ तू बाकिर राखऽ ख्याल वक़ारे के

ना तऽ अइसन कइला से भर उमर के झगड़ा हो जाई

बात मोहब्बत के हउवे त रुसल - फुलल मनावल ठीक

अइसे में फरिया के, केकर कइसन फैदा हो जाई

◆ ◆ ◆

दीपक सिंह

बज्जिका मातृभाषी डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के भोजपुरी साहित्यिक सफर

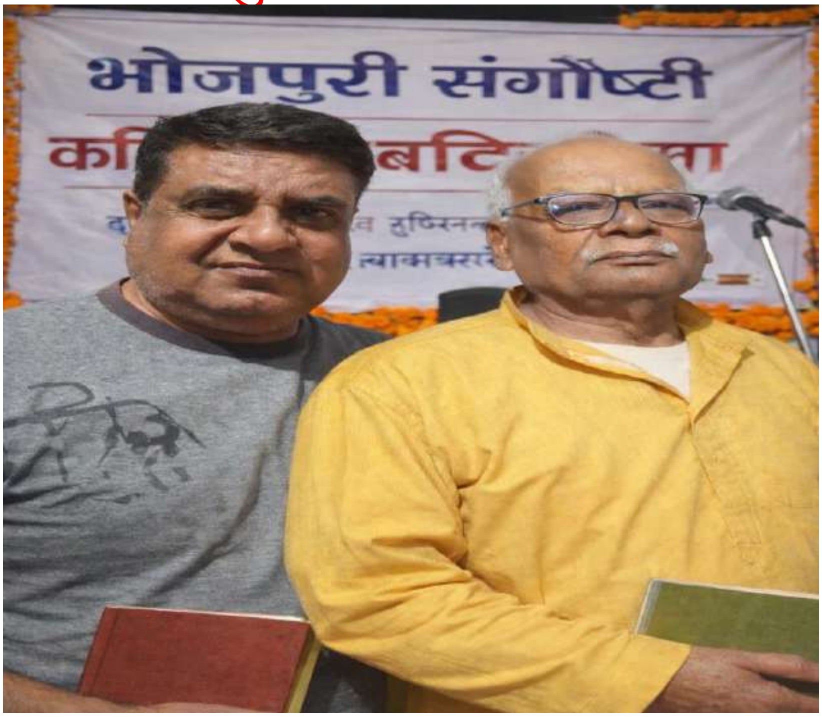

भोजपुरी भाषा भारतीय लोकसंस्कृति के ओह सशक्त अभिव्यक्ति ह, जवना में जनजीवन के स्मृति, संघर्ष, संवेदना आ सांस्कृतिक चेतना आजो सुरक्षित बा। आज के समय में, जब भोजपुरी के अधिकतर लोग खाली मनोरंजन तक सिमटा के देखत बाड़े, अइसन दौर में जवन साहित्यकार एह भाषा के शास्त्रीय, अकादमिक आ वैचारिक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलवले बाड़े, ओह में डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के स्थान बहुते महत्त्वपूर्ण आ सर्वोत्तम बा।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के जन्म 22 दिसंबर 1954 के बिहार के मुजफ्फरपुर जनपद के ग्राम खुरसेदा (धर्मपुर), पोस्ट अहियापुर में भइल। उनकर मातृभाषा बज्जिका रहल, बाकिर जवन निष्ठा आ आत्मीयता से उहाँ भोजपुरी भाषा के अपनवले, ऊ उहाँ के भाषिक दृष्टि के व्यापकता के साफ प्रमाण बा। बज्जिका मातृभाषी होखे के बावजूद भोजपुरी खातिर जीवन भर के समर्पण ई बतावता कि उहाँ खातिर भाषा खाली क्षेत्रीय पहचान ना, बल्कि सांस्कृतिक जिम्मेदारी रहल।

उहाँ हिंदी विषय में एम.ए. आ पी-एच.डी. के उपाधि हासिल कइनी। उहाँ के शोध-विषय रहल 'भोजपुरी प्रबंध-काव्य : वस्तु आ शिल्प', जवन भोजपुरी साहित्य के शास्त्रीय आलोचना के नजर से परखें वाला एगो महत्त्वपूर्ण अकादमिक प्रयास मानल जाला। भोजपुरी के विधागत प्रबंध-काव्य पर ई पहिला शोध रहल, एह चलते उहाँ प्रबंध-काव्य खातिर एगो शोध-सरिणी के भी निर्माण कइनी।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी बा। उहाँ कवि, आलोचक, शिक्षक, संपादक आ पाठ्यक्रम-निर्माता के रूप में समान अधिकार रखत बाड़े। बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय के अंतर्गत श्यामनंदन सहाय महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर में भोजपुरी विभाग में उहाँ दस बरिस से जादे समय तक अवैतनिक अध्यापन कइनी। सरकारी सेवा में रहत घरी भी भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर उनकर निरंतर सक्रियता आ प्रतिबद्धता उहाँ के विशिष्ट बनावेला—ई समर्पण सचमुच सराहे जोग बा।

उहाँ के रचनात्मक आ आलोचनात्मक कृतियाँ भोजपुरी साहित्य के बहुते महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हा। 'दू-रंग' (काव्य-संकलन), 'अचके कहा गइल' (ग़ज़ल-संग्रह), 'भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छंद' (काव्य-शास्त्र), 'महावीर जी सदा सहाय' (गाथा काव्य), 'खरकत जमीन बजरत आसमान' (कविता संग्रह) आ 'कसौटी पर भोजपुरी कविता', 'भोजपुरी साहित्य : परम्परा आ परख' तथा 'भोजपुरी साहित्य : समय के साखी' (आलोचना-समीक्षा) जइसन कृतियाँ उहाँ के सृजनात्मक वैभव आ आलोचनात्मक दृष्टि के मजबूत प्रमाण हा। 'भोजपुरी काव्य में अलंकार-रस-छंद' के विश्वविद्यालयी पाठ्यक्रम में शामिल होखल उहाँ के अकादमिक योगदान के प्रामाणिक मान्यता बा। एह के अलावा उहाँ 'भोजपुरी कविता के इतिहास' नाम से एगो शोधपूर्ण ग्रंथ भी लिखले बाड़े।

डॉ. मिश्र के आलोचनात्मक लेखन भोजपुरी साहित्य के वैचारिक आ सैद्धांतिक आधार देला। इग्नू, राज्य शिक्षा शोध आ प्रशिक्षण परिषद, बिहार आ नालंदा खुला विश्वविद्यालय जइसन संस्थान खातिर भोजपुरी पाठ्यक्रम निर्माण, प्रमाण-पत्र आ आधार पाठ्यक्रम लेखन, साथे राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के तहत लोकसाहित्य आधारित सामग्री निर्माण में उहाँ के योगदान बहुते महत्त्वपूर्ण रहल बा।

संपादन के क्षेत्र में भी डॉ. मिश्र के काम व्यापक आ उल्लेखनीय बा। 'भोजपुरी-हिन्दी कोश', 'बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य-संग्रह', 'भोजपुरी प्रतिभाएँ', 'आचार्य हरेराम त्रिपाठी चेतन : इन्द्रधनुषी काव्य व्यक्तित्व' जइसन ग्रंथन के संपादन आ 'हिमेशिया टाइम्स', 'कोइल', 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'भोजपुरी परिवार' जइसन पत्रिकन से उनकर दीर्घकालीन जुड़ाव भोजपुरी पत्रकारिता के वैचारिक मजबूती देले बा।

अनेक साहित्यिक आ सांस्कृतिक संस्थानन में संगठनात्मक जिम्मेदारी निभावत उहाँ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद, भोजपुरी अकादमी जइसन मंचन के सक्रिय आ प्रभावशाली बनवले बाड़े। आकाशवाणी पटना आ दूरदर्शन मुजफ्फरपुर से उहाँ के कविता आ वार्ता के प्रसारण भोजपुरी के बौद्धिक छवि के व्यापक जनसमुदाय तक पहुँचवले बा।

उहाँ के असाधारण स्मरणशक्ति, गहन संदर्भ-ज्ञान आ भोजपुरी साहित्य पर व्यापक अधिकार के चलते साहित्यिक दुनिया में लोग स्नेह से उहाँ के 'भोजपुरी के विकिपीडिया' कहेला। ई उपाधि कवनो औपचारिक सम्मान से जादे, उनकर लगातार अध्ययन, शोध आ निष्ठावान साधना के स्वाभाविक स्वीकारोक्ति हा।

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र के 'भोजपुरी शिरोमणि', 'डॉ. प्रभुनाथ सिंह स्मृति सम्मान', 'नागार्जुन सम्मान', 'डॉ. निर्भीक स्मृति सम्मान', 'श्रीराम तिवारी कौस्तुभमणि सम्मान', 'लोकगायक शर्मानंद देहाती सम्मान' सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान मिल चुकल बा। ई सम्मान खाली उनकर व्यक्तित्व के ना, बल्कि भोजपुरी भाषा आ साहित्य के गरिमा के भी रेखांकित करेला।

निष्कर्ष में कहल जा सकेला कि डॉ. ब्रजभूषण मिश्र भोजपुरी साहित्य के ओह विशिष्ट साधकन में बाड़े, जे रचना, आलोचना, शिक्षण, संपादन, संगठन आ भाषा-नीति—हर स्तर पर भोजपुरी के समृद्ध कइले बाड़े। बज्जिका मातृभाषी होखे के बावजूद भोजपुरी खातिर जीवन भर के समर्पण उहाँ के एगो जीवंत भाषिक सेतु आ सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित करेला।

◆ ◆ ◆

दिनेश प्रसाद सिन्हा

हम रह गइनीं

अगोरिया में मन हमार बाझल रह गइल।
बगिया उजड़ गइल अगोरते हम रह गइनीं
गोदी के धन खातिर छछनते हम रह गइनीं
केहु त समुझित हमरी देहिया के पीड़ा हो
सबसे निहोरा सबदिन करते हम रह गइनीं।

सोनइल फुलाइल बा रहरी ढेंराइल बा
खेतवा के आरी आरी धारी दियाइल बा
सबदिन हम गाँव से लजाते जे रह गइनीं
तोहरा के पूजनीं कहाँ फूल लोढ़ते हम रह गइनीं।

मातल देहिया उमकल बहकल मनवा
केहू नाहीं मानेला हमरो कहनवा।
अंगना में कउवा उचलावते हम रह गइनीं
जिनगी के रहिया में भुलाइले हम रह गइनीं।

गाँव दुनिया के कइसन हाल बदल गइल
हाट बजार में मन के भाव बदल गइल
केहू ना चिन्हाय केहू से सुरते बदल गइल
नीमन बाउर आदमी के चाल बदल गइल।

केहू ना केहू के अब हाल चाल पूछेला
घटला पर दोसरा से पँइचो ना मांगेला
सुबहे के घाम जइसन अंगना में पसारल बानीं
जिनगी भर पथार जइसन सुखते हम रह गइनीं।

◆ ◆ ◆

कुमार जीवन सिंह

ग्रामीण समाज मे स्नेह सुरेंद्र गिरी के "कहाँ गइल ऊ दिन"

सुरेंद्र गिरी (वि.स.२०१७) नेपाली, भोजपुरी आ हिन्दी में समान अधिकार से कलम चलावेवाला एक साहित्यकार हई। सुरेंद्र गिरी, एगो व्यक्ति जे हिंदी आ भोजपुरी साहित्य में अलग–अलग विधा में बहुत योगदान दिहलन, जे मानव के जीवन खातिर कला के माध्यम से समाज में देखावे के कोशिश कइलन। "कहाँ गइल ऊ दिन" एगो भावुक और मार्मिक कथा हवे जे परिवार, दुख, आ संघर्ष के जिनगी के सच्चाई के बतावेला। कहानी में एगो बेटा के दुख दिखावल गइल बा, जे दस साल पहिले भउजी के खो दिहलस। भउजी ओकरा खातिर ना खाली परिवार के आधार रहल, बल्कि प्रेम, सुरक्षा आ संस्कार के स्रोत भी रहलि। भउजी के दिहल गहना, उनका आदेस आ स्नेह आज भी बेटा के मन में जिन्दा बा। कहानी में गरीबी, परिवार के टूटल, आ जीवन के कठिनाईयन के चित्रण बा, जे गांव के संदर्भ में बड़ा संवेदनशील रूप से उकेरल गइल बा। एह कहानी के लोककथा के नजरिया से देखल जाय त ई पारंपरिक ग्रामीण जीवन के संघर्ष और सामाजिक संबंधन के बयान ह। कथा मे में भउजी के भूमिका परिवार के संरक्षक और नेतृत्व जेइसन बा, जे लोककथा में मातृत्व और स्नेह के प्रतीक होला। कहानी में परिवार के टूटे, परेम के कमी, आ संघर्ष के बीच भी उम्मीद के किरन बरकरार राखल गइल बा, जे लोककथा के विशेषता ह।

ग्रामीण समाज के कठिनाईयन जइसे गरीबी, बाल मजदूरी, पारिवारिक जिम्मेदारी आ बलिदान के भी बड़ा सहजता से उजागर कइल गइल बा। लोककथा अक्सर सामाजिक मर्यादा, नैतिक शिक्षा, और जीवन के सिखावत बा। ई कहानी भी अलगे प्रकार के सीख देवे ला, जइसन कि परिवार के महत्ता, संघर्ष में धीरज, आ संबंध के पवित्रता। कवनो लोककथा के तर्ज पर, ई कहानी सांस्कृतिक, नैतिक, आ भावनात्मक संदर्भ से भरल बा।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण से ई कहानी समाज के वर्ग संघर्ष आ पूंजीवाद के असमानता के दरसावता। कहानी में भउजी आ घर के पुरनिया हालत गरीब लोगन के संघर्ष के झलक मिलेला। जवन पूंजी के

अधिहारिया, जैसे भइया, घर के टूटे–फूटे जिम्मेदारी छोड़ के योग आ सन्यास के रास्ता पकड़ गइल, उ वैसा लागेला जइसे ऊ अपन परिवार आ समाज के जिम्मेदारी छोड़ के खुद के फायदा देख रहल होखे। गरीब परिवार के दुःख, सामाजिक अन्याय आ संसाधन के असमान बँटवारा साफ देखाइल बा। बच्चा के पढ़ाई आ काम–धंधा के संघर्ष से पता चलेला कि गरबी में परिवार मजबूरी से कइसन जूझत बा।

मार्क्सवादी नजरिया कहेला कि पूंजीवाद में अमीर अउर गरीब के बीच गहिरा असमानता बढ़ेला, जे कहानी में भरपूर बा। भउजी के असमय मृत्यु आ परिवार के टूट–फूट सामाजिक व्यवस्था के दोष देखावेला। आर्थिक तंगी, मजदूर वर्ग के दुर्दशा आ वर्गीय भेदभाव कहानी के मूल विषय बा, जे मार्क्सवादी सोच के अनुरूप बा। एह कहानी में देखावल गइल बा कि कइसे पूंजीवादी समाज में गरीब आ समाज के कमजोर लोगन के मार्मिक स्थिति होखेला।

नारीवादी से कहानी महिला पात्रन के दुःख, स्वतंत्रता के अभाव, अउरी समाज के लैंगिक असमानता पर जोर देला। भउजी के भूमिका सिर्फ परिवार के पालन–पोषण कइल ना, बल्कि उ एगो मजबूत स्त्री के रुप में देखावल गइल बा जे परिवार के लिए लड़ाली कर रहल रहली। भउजी के सामाजिक सम्मान टूटला, उनका असमय मृत्यु, आ परिवार में उनका योगदान के अनदेखी, ई सब दर्शावेला कि कैसे समाज महिला के अधिकार आ स्थान के नजरअंदाज करेला। कहानी में महिलन के शोषण, घरेलू मुद्दा, आ आर्थिक निर्भरता के मुद्दा भी साफ झलकता। भउजी के गहना जे एगो तरह के सुरक्षा के प्रतीक रहल, ओकरा के पढ़ाई में लगावे के निर्देश, ई दिखावेला कि सावधानी पूर्वक समाज में महिलन के भूमिका और उनके भविष्य के सुरक्षा के प्राथमिकता के जरूरत बा।

कहानी घरे के टूटे–फूटे, परिवारिक दुख, आ मार्मिक भावनाओं के दरसावेला। भउजी के असमय मृत्यु आ बेटा के अकेलापन, लउकावे ला कइसे परिवार के स्नेह आ प्रेम इंसान के जिनगी में सबसे जरूरी होला। राष्ट्रीयता के हिसाब से ई कहानी ग्रामीण भारत के पारंपरिक परिवार आ संस्कृति के विस्तार से पेश करेला। परिवार, गाँव, आ संस्कृति से जुड़ाव एह कथा के मुख्य हिस्सा बा। संवेदना से कथा एगो मार्मिक कहानी बा जे परिवार के प्रेम और संघर्ष के भावनात्मक पक्ष पर जोर देला। जबकि राष्ट्रीयता के नजरिया से ई कहानी भारतीय ग्रामीण जीवन, सामाजिक संस्कार, आ परिवारिक रिश्तन के आभाष करावेला। दुनो नजरिया से ई कहानी हमरा के अपने जड़, संस्कार आ समाज से जोड़े के ताकत देला, साथे ही बदलाव आ चुनौती के समझ भी बढ़ावेला। एह कहानी से हमनी के शिक्षा मिलेला कि संवेदनशीलता आ राष्ट्रीय भावना एक संग होखे के चाहीं जेकरा से हमनी के जीवन में प्रेम, सम्मान, आ विकास के रास्ता खोल सके। कहानी सामाजिक असमानता, परिवारिक टूट–फूट, लैंगिक भेदभाव आ आर्थिक संघर्ष के मार्मिक चित्रण ह। मार्क्सवादी सोच कहेली कि समाज में वर्गीय विडंबना आ पूंजीवादी अन्याय के कारण परिवार टूटता आ कमजोर होत बा। जबकि नारीवादी सोच आउरतियन के संघर्ष, सामाजिक अपमान आ स्वतंत्रता के कमी पर जोर देत बा। ई कहानी से मानल जा सकेला कि सामाजिक, आर्थिक आ लैंगिक मुद्दन के नजरअंदाज कइले सवाल के समाधान नइखे हो सकत, आ एह खातिर व्यापक विचार अउरी बदलाव जरूरी बा।

◆ ◆ ◆

प्रकाश कट्टारी

बन्जरिया बारा नेपाल

बेबी सिटिंग

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

ओह दिन पार्क में गजब के चहल-पहल रहे। अन्हार फटे से पहिले ही सुरुज देव जइसे देह जरावे वाला आग बरसावत रहलन। भोरे-भिनसहरे के टहलाई कइला के बाद, जशोदा सीमेंट वाली बेंच प बइठल रहली।

हाथ में एगो छोटकी तौलिया रहे, जेकरा से माथा के पसीना पोंछत-पोंछत ओकर नजर पार्क में खेलत लईकन अउर मेहरारू लोगन प जा टिकल।

पांख नियन हलुक, आ खिलखिला के हँसत मेहरारू कुल टहरत रहली... आ एक ओर ई, जशोदा, आपन भारी भरकम देह आ ओहू से बेसी भारी मन लेके बइठल रहे।

घुटना के दरद ओकरा के भीतर-भीतर अधमरा करत रहे। डॉक्टर त एकदम साफ कह देले रहन कि,

“रवा कम से कम पच्चीस किलो वजन कम करि, ना त ई घोंटना जबाव दे दी। फिर चले के सोचबो मत करब।”

जशोदा जानत रहे कि ओकरा देह के ई बोझ खाली चरबी के ना रहे। ई त ओकर बीतल क दो बरिस के जिम्मेवारी के बोझा रहे।

सास के बेमारी, ननद लोगन के बियाह-गौना, देवर के घर बसावल, लईकन के पढ़ाई-लिखाई... आ एह सब के ऊपर ओकरा मरद के ऊ तीत बोली,

“हम कमा तानी, त तनि हिसाब से खरच करऽ।

हमार कमाई खा-खा के हाथी नियन मोटाइल जात बाड़ू।”

ऊ शब्द आजो ओकरा करेजा में फाँस नियन गड़ल रहे। मन करे कि कवनो अइसन रस्ता मिले कि ई देह के साथे-साथे मन के बोझ भी उतर जाय।

एगो अंजान औरत आ गजबे के प्रस्ताव!!

ओही दिन पार्क के एगो कोना में ओकर नजर एगो विदेशी मेहरारू पर पड़ल। ऊ देख के अचरज में पड़ गइल कि ऊ मेहरारू एकदम साफ़-सुंदर हिंदी बोलत रहे। गजब के तेज रहे ओकरा चेहरा पर, बाकिर आँखिन में कवनो गहिर दरद लुकाइल रहे।

बातें-बात में पता चलल कि ओकर दू गो जुड़वाँ

बेटी बाड़ी सँ, आ ओकरा रोज सुबेरे एक घंटा खातिर कवनो 'बेबी सिटिंग' करे वाला के जरूरत बा, ताकि ऊ शांति से पूजा-आरती क सके।

जशोदा के मन के मुरचाइल आ बंद पड़ल केवाड़ी खुल गइल। ओकरा मन में एगो विचार कौंधल,

"अगर हम ई लईकन के वॉकर (प्रैम) में लेके टहरा दींहल करी, त हमार टहलाई भी हो जाई... आ दू गो पइसा भी हाथ में आई।

हमार आपन पइसा... जेकरा पर केहू के हक ना होई, जेकरा खातिर केहू के ताना ना सुने के पड़ी।"

अगिला दिन जशोदा हिम्मत जुटा के ओह मेहरारू से मिलल आ आपन मन के बात, उनकरा सोंझा रखलस। विदेशी मेहरारू मुसकुराइल आ कहलस,

"हम तोहरा के रोज के तीन हजार रुपया देब।"

जशोदा के अपना कान प जइसे बिस्वास ना भइल। तीन हजार! एक दिन के? ई त कवनो सपना नियन रहे।

अब जशोदा के रूटीन बदल गइल रहे। ऊ रोज पार्क में आवे, ऊ विदेशी मेहरारू ओकरा हाथ में एगो बड़का प्रैम (बच्चा घुमावे वाला गाड़ी) थमा देवे, जेकरा ऊपर मलमल के पातर चादर ढंकल रहे।

जशोदा ओही गाड़ी के धकेलत पूरा पार्क के चक्कर लगावे। लोग देखस, आपस में कानाफूसी करस, बाकिर उनकरा के अब कवनो डर ना रहे। ओकरा गोड़ में अब गजब के फुरती अमा गइल रहे।

तीन महीना बीत गइल। देह से चरबी छँटे लागल रहे, आ मन के उदासी भी।

ऊ प्रैम धकेलत घरी ओकरा के अइसन लागे जइसे भीतर दू गो नन्हा जान सुतल बाड़ी सँ।

कबो-कबो प्रैम के भीतर से दूध के बोतल के खड़कला के आवाज आवे, त कबो हल्का-हल्का साँस लेवे के आहट। जशोदा के मन करे कि जाली हटा के देखती, बाकिर ऊ विदेशी मेहरारू कहले रहे कि, लईकी लोग सुतल बाड़ी, चादर मत हटइहऽ, ना त नजर लग जाई, आ रोवे लगिहे लोग त चुप करावल मोसकिल हो जाइ।"

जशोदा आपन ई काम केहू के ना बतावे। ओकर मरद फौज में रहन, श्रीनगर में तैनात। समाज में 'बेबी सिटिंग' के नीक काम ना मानल जाय, खास कर के ऊ घर में जहाँ मर्यादा के बड़का-बड़का बात होखेला।

ऊ चुपचाप आपन कमाई बैंक के खाता में जमा करत गइल। ओकर आत्मविश्वास अब हिलोरा मारत रहे।

तले एगो भयानक सच आ सन्नाटा!!

अचानक ओकरा मरद के छुट्टी प आवे के खबर मिलल। कुछ घरी त ओकरा के भक्क मार देले रहें,

बाकिर फेर उ अपना के अस्थिर क के समुझवली। पूरा परिवार संगे जशोदा के कुछ दिन खातिर गाँव जाय के पड़ल।

आ जब ऊ पंद्रह दिन बाद लवट के अइली। त फेर पुरान रूटीन में आवे खातिर उ अगिला दिन भोरे में पार्क में पहुँचली, त ऊ विदेशी मेहरारू ओहिजा ना रहे।

ओकर फोन भी बंद बतावे लागल।

बेचैनी में जशोदा अगल-बगल के लोगन से पुछलस। आखिर में ऊ उनकर पड़ोसिन, मिश्राइन जी के पास पहुँचल।

"अरे मिश्राइन जी, ऊ सोझा वाला फ्लैट में जे विदेशी मैडम रहत रहली, ऊ कहाँ गइली? दू दिन से लउकत नईखी?"

मिश्राइन चश्मा नाक से उठाके माथा प टिकावत कहली,

"अरे जशोदा, तूँ कहवां रहलू , कि तहरा पता नइखें ? ऊ लोग त हफ्ता दिन पहिले ही ई शहर छोड़ के चल गइल लोग।

बेचारी मैडम के दिमागी हालत ठीक ना नू रहे। उनका त कवनो लईका-बच्चा भी ना रहें, ऐही कुफुत अकबकाइल रहत रहली।"

इ बात सुनते जशोदा के करेजा जइसे धक से रह गइल।

“का कहत बानी रवा? लईका-फइका ना रहे? बाकिर हम त रोज उनकर दू गो जुड़वाँ बेटी के प्रैम में टहरावत रहनी!”

मिश्राइन लम्बा साँस भरत कहली,

“अरे ना हो! उनकर दू गो बेटी त कई बरिस पहिले बिदेस में बेमारी से मु गइल रहली सँ। ओही सदमा में ऊ पागल नियन हो गइल रहली। ऊ त एगो खाली प्रैम (बच्चा घुमावें वाला गाड़ी) लेके घूमत रहली।

उनकर मरद उनका मन के हलुक करें खातिर इहाँ ले आइल रहलन, आ मंदिर-मंदिर घुमावस।

ऊ त प्रैम में पुतला रख के ओकरा के अपना बेटी मान लेले रहली।”

जशोदा के हाथ-गोड़ काँपे लागल। माथा चकरा गइल।

“अगर ओकरा में लईका ना रहे... त ऊ दूध के बोतल? ऊ गते-गते साँस लेवे के आवाज? ऊ पातर चादर के भीतर से आवे वाला महक?”

यशोदा के याद आइल कि कैसे ऊ रोज एक घंटा ओह गाड़ी के धकेलत रहे। ओकरा के लागल कि ऊ खाली एगो निर्जीव गाड़ी ना रहे। जइसे ओह माँ के ममता के तड़प आ यशोदा के आपन अधूरापन, दूनो मिल के एगो अइसन माया जाल रच देले रहे, जेकरा में सच आ झूठ के लकीर मिट गइल रहे।

जशोदा घरे लवटली आ अपना कमरा में चुपचाप बइठ गइली। ओकरा भीतर एगो अजब के शांति उतर आइल रहे।

ऊ सोचलस, शायद ऊ मेहरारू आपन मुअल बेटिन के आत्मा के रोज एक घंटा ओकरा जिम्मा सौंप देत रहे। आ ऊ... ऊ अपना टूटल आत्मसम्मान के बचावे खातिर, अपना भीतर के खालीपन के भरे खातिर, ओह अदृश्य बोझ के ढोवत रहे।

दू गो मेहरारू...

एगो, जे आपन संतान खो देले रहली।

दूसरकी, जे आपन स्वाभिमान' लुटा देले रहली।

ओह दिन के बाद जशोदा फेर कबो बेबी सिटिंग के काम ना कइली। बाकिर ऊ टहरल भी ना छोड़ली।

अब ऊ बिना कवनो प्रैम के चलत रहली। बिना कवनो साया के। बिना कवनो भारी मन के।

अब ऊ चलत रहली आपन गोड़ प,

आपन खातिर। आ आपन मरजी से।

◆ ◆ ◆

बिम्मी कुंवर

धुबरी, असम

वन्दे मातरम्

सरग से ऊँच माता भारत के भुइयाँ से
तोरा कोरा पलेला पिआर वन्दे मातरम्।
तोरे रस पनिया में सजेले गतरिया से
जनमेला सुघर विचार वन्दे मातरम्।।सोना-

चानी बाटे रामा तोरा धूरा-मटिया में
हीरा-मोती होखेला अँजोर वन्दे मातरम्।तोरा रे अँगनवाँ में सोहेला गगनवाँ से
ताकि-ताकि नाचे मन मोर वन्दे मातरम्।।

नाहीं हम हईं रामा बकरी-पठरुआ से
लेई भागी चोरवा सियार वन्दे मातरम्।
हम हईं तोर माता पूतवा सपूतवा से
हम हईं शेर बरियार वन्दे मातरम्।।

शान में रहीले हम, जान ना बुझीले हम
होला जब माता के हुँकार वन्दे मातरम्।रोखा-रोखी होला, तब सोखीले समुन्दरो के
नाग साथे करीं फुफुकार वन्दे मातरम्।।

तोरे हवे सीख माता शान्ति उपकरवा के
मनवा में राखीले संभार वन्दे मातरम्।बाकी केहू अँगुरी देखावे बदनेतिया से
तब हम बघवा-हुँड़ार वन्दे मातरम्।।

◆ ◆ ◆

पं० लक्ष्मण त्रिपाठी 'प्रवासी'
गोपालगंज (बिहार)

1. जिनिगी गँवाइल

जीवने में जिनिगी गँवाइल
लादे बूँट बबुरा बिलाइल॥

रूदा के पूजि, बान्हि फाँड़ खोटे गइनीं,
भरि फाँड़ खोट के सिवान धांग अइनीं,
उसरल सागवा फफाइल
जिया देखि सभके दगाइल।

खउलल बस, पानी, ना फूटल ई फोरा,
चाम उसिना के भइल ललका सिन्होरा,
अइसन माँग बहोराइल
गतर-गत बाई समाइल।

खेले ना, खेले दे, खेलिए बिगाड़े,
जीयतन के ठी दे मूरुदा उखाड़े,
घइल-धइल साग अउसाइल
लगल तउलाकस छाइल।

सभहीं कहेला, "इ तऽ हऽ जहर-माहुर,
कहवाँ से पा गइलू अइसन तूँ पाहुर,
फेंकऽ ना त धरती नसाइल
कमाई तोहार अइसन बसाइल।"

फेंकीं कि राखीं ई अरकी के सगिया,
कोखिया के आसा में सून भइल माँगिया,
कइल-धइल सउसे तँवाइल
चरे में देहि सोबरन चोँथाइल।

खेतवा के छाड़ि खाली जोतीला राढ़ी,
भइस बटइया दे पोसिला पाड़ी,
आह! -आल्हर तेहना छिनाइल
जिनिगी खरहटते तवाँइल।

जननी ना जिनिगी ह भइस पेन्हउआ,
रोटी लेके घूमबऽ त नोचि भागी कउआ,
धीम दुहतो खा जाई कोपिनाई
धोआइल भई फेनु अब लेटाइल।

डॉ० रामनारायण तिवारी

◆ ◆ ◆

2. जिनिगि जे रहल कचनार

जिनिगि जे रहल कचनार
जिनिगि जे रहल कचनार।
झरल काहे अचके में पाता?

पहिले बुझाइल पताए ला झरलसि,
पाछा से ज्ञान भइल दिअका खदरलसि,
डाइन मारि देलस सोरिये में बान
अड़ाई का ओढला ले छाता?

आदरा में बान पूजि कइनीं कमइया,
आधा मोआर भइल, आधा भइल पइया,
चितरे में फाटल दरार
सेवतिया में सुति गइल साता।

नौ-चास खेत जोति कतिकी उगवनीं,
कोठिला के आन साचे राकस पेठवनीं,
धऽ सोना पो कोइला बढ़ाव
अगोरही में लुटि गइल खाता।

उगते सुकउवा लागल भइल भिनुसहरा,
बाकी ई चान ऊपर रहे राहु कहरा,
लागे लगले अब होई अन्हार
भागे में भागी नून-खून नाता।

कतनो जुटाईं केहू जुटिए ना पाई
अंग-अंग टूट-टाटि जोड़ होई जाई
परी अब अंगने में डाँड़ि
मिलान हो के का करी खाता।

छोड़ला पो घर मिले जेठ दुपहरिया,
घरे घुमि अइला पो पूस भोरहरिया,
सभके बा ओठङ्गल केवार
घेरा के बइठे दरबे में हाता।

अस मन भइल मारि तुरि दिही पिंजड़ा
बाकी इयाद आवे, कही लोग हिंजड़ा
कान फूँकि-फूँकि दुहतानी नार
कबो तो लागि सँसिया के ताँता।

◆◆◆

डॉ० रामनारायण तिवारी
पी०जी० कॉलेज गाजीपुर,

अइलें पहुनवाँ मधुमास में

चलऽ सखी आरती उतारे
अइलें पहुनवाँ मधुमास में

स्वागत में खिल गइलें भाँति-भाँति के फूल
पछुआ बयरिया उड़ावे चंदनवर्णी धूल
चलऽ तनी तिलक लगावे अइलें पहुनवाँ मधुमास में

मधुकर उड़ि-उड़ि गावे सुनर गीत
दुश्मनो सब प्रेम पाके बन गइलें मीत
चलऽ तनी मिलजुल आवे अइलें पहुनवाँ मधुमास में।

बाग बगइचा नया रंग में रंगइलें
रास्ता-घाट सब साफ-सुनर हो गइलें
स्वागत में सब अखिया बिछावे अइलें पहुनवाँ मधुमास में।

कुहु-कुहु कोयल बोले पिहु-पिहु पपिहरा
ऋतुराज पहुनवाँ अइलें कोना-कोना हो गइलें सुनहरा
चलऽ दुर्लभ ठिठोली करि आवे अइलें पहुनवाँ मधुमास में।

◆ ◆ ◆

डॉ. मुकेश कुमार दुबे "दुर्लभ"
सिवान, बिहार

प्रेम अब कहाँ होला हो

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब दिल में मोल-भाव ना रहे,
जब रिश्ता तौलल ना जात रहे,
जब आँख के पानी
मोबाइल के स्क्रीन से महँग ना रहे।

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब बाबूजी कईयन कोस
पैदले चल के बेटी किहां
खिचड़ी पुगावे जात रहलन,
गरमी में पसीना,
बरसात में कीचड़,
जाड़ा में काँपत देह,
बाकिर ममता के आँच
कबहूँ ठंढा ना पड़त रहे।

ओह खिचड़ी में
सिरिफ दही-चिउरा ना रहे,
ओह में रहे
बाबूजी के साँस,
माई के आशीर्वाद,
आ बेटी के भविष्य के सपना।
आज त डब्बा में खाना आवेला,
बाकिर ओह स्वाद के
अब कौन पूछे वाला बा?

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब चिट्ठी आवे में
महीना लग जात रहे,
आ हर दिन के इंतजार
त्योहार बन जात रहे।
एक-एक अक्षर
सीना से लगाके पढ़ल जात रहे,
कागज के ओह टुकड़ा में
पूरा इंसान बसल रहे।

आज त सेकेंड में
हजार गो संदेश आवेला,
बाकिर दिल तक
कवनो ना पहुँचे।
ब्लू टिक देख के
रिश्ता नापल जात बा,
भावना के जगह
इमोजी हँसे लागल बा।

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब पड़ोस के दुख
अपना दुख खानी लागे,
जब बिना बोलले
आँसू के मतलब समझ में आवे।
आज त दीवार ऊँच हो गइल,
दरवाजा बंद,
आ दिल में ताला पड़ गइल।

ओह दिनन में
साँझ पड़ते
चौपाल सजत रहे,
बूढ़-बुज़ुर्ग के बात में
अनुभव के मिठास रहे।
आज त साँझ पड़ते
टीवी बोले,
फोन चमके,
आ आदमी चुप हो जाला।

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब खेत में काम करे वाला
धरती से बतियात रहे,
बीज बोके
भरोसा करत रहे।
आज त फसल भी
कागज पर उगेला,
आ भरोसा
कर्ज में दब गइल बा।

बाबूजी के जूता फाट जात रहे,
बाकिर बच्चन के किताब
नवका आवत रहे।
माई आपन भूख
पानी से बुझा लेत रहली
बाकिर लइकन के थाली
पूरा भर देत रहली।

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब शादी के मतलब
सात फेरा ना,
सात जन्म के जिम्मेदारी रहे।
आज त रिश्ता
स्टेटस बन गइल,
डिलीट करे में
एक सेकेंड लागेला।

पहिले गलती माफी बनत रहे,
आज गलती स्क्रीनशॉट बन जाला।
पहिले रूठल में
मनुहार रहे,
आज ब्लॉक कर देवे के
रिवाज चल गइल।

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब त्यौहार आवे
त पूरा गाँव जग जाला,
एक चूल्हा से
दस घर के खुशबू उठेला।
आज त हर घर में
अलग चूल्हा,
अलग दुनिया,
अलग अकेलापन बा।

बाबूजी अब ना रहलन,
माई के आँख
दरवाजा ताकेला।
बेटी शहर में
एसी कमरा में
बाबूजी के खिचड़ी
याद करतिया।
स्वाद अब भी बा,
बाकिर ओह हाथ के
गरमी कहाँ?

प्रेम अब कहाँ होला हो
प्रेम त पहिले होखत रहे।
जब इंसान
इंसान के काम आवत रहे।
आज त भीड़ में
सब अकेला बा,
सब व्यस्त बा,
सब मजबूर बा।

शायद प्रेम
भुलाइल ना ह,
बस हमनी के
फुर्सत भुला गइल बा।
फेर से अगर
पैदल चले के हिम्मत करीं,
फेर से अगर
केहु खातिर
थोड़ा दर्द सहीं,
त शायद प्रेम
फेर से मिल जाई।

प्रेम अब कहाँ होला हो?
प्रेम आज भी होला।
बस बाबूजी जइसन
दिल चाहीं,
आ खिचड़ी जइसन
सादा भावना।

◆ ◆ ◆

प्रिया मिश्र "मन्नु"

भोजपुरी समाज के बियाह के रस्म

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

आईं, आज जानल जाव भोजपुरी समाज के बियाह के रस्म आ ओकर वैज्ञानिक महत्व के बारे में।

सबसे पहिले बात करब हल्दी के रस्म के। ई ऊ रस्म हवे, जवना में कनिया आ बर के सरसों के उबटन आ हल्दी के पेस्ट बना के बियाह से पहिले शरीर पर लगावल जाला। हल्दी के रस्म बियाह के दिन सबेरे, वर आ कनिया के घर में चाहे बियाह होखे वाला स्थान पर आयोजित होला। कई जगह ई रस्म बियाह से एक दिन पहिले मनावल जाला।

बियाह से ठीक पहिले कनिया आ वर के हल्दी एहसे लगावल जाला ताकि उनकर चेहरा पर कवनो दाग-धब्बा ना रहे। साथे-साथ ई जोड़ा के चोट आ बीमारी से बचावे में भी मदद करेला। हमनी के अलग-अलग इलाका में बियाह के रस्म-रिवाज अलग होखेला, आ ई विविधता ही एकर सुंदरता हवे।

कई जगह त बियाह के रस्म महीना भर तक चलत रहेला, आ हर रस्म के आपन वैज्ञानिक आ धार्मिक महत्व होला। हल्दी के रस्म से वर आ कनिया के सुंदरता निखर जाला। सबसे रोचक बात ई बा कि ई रस्म खाली कनिया ना, बल्कि वर पर भी लागू होला।

मान्यता बा कि हल्दी के रस्म से वर आ कनिया के खराब नजर से बचाव होला। एह रस्म के बाद कई जगह वर आ कनिया के घर से बाहर निकलल भी मना रहेला। हल्दी के शुभ मानल जाला, एहसे बियाह से पहिले हल्दी लगा के नव दम्पति के सुखद वैवाहिक जीवन के शुभकामना दीहल जाला।

अलग-अलग जगह पर हल्दी लगावे के तरीका अलग होखेला। कुछ लोग हल्दी में चंदन, दूध आ गुलाब जल मिला के लगावेला। पिसल हल्दी के

गर्दन, हाथ, पैर आ चेहरा पर लगावल जाला। एह रस्म में परिवार के सभे सदस्य शामिल होखेला आ बारी-बारी से हल्दी लगावेला। औरत लोग मंगल गीत गावेली।

कहल जाला कि अगर वर या कनिया के हल्दी कवनो कुंवारा लइका या लइकी के लग जाए, त ओकर बियाह जल्दी हो जाला।

पुरान समय में आज जइसन ब्यूटी प्रोडक्ट ना रहे, एहसे लोग प्राकृतिक चीजन के इस्तेमाल करत रहे। शोध से पता चलता कि हल्दी में एंटीऑक्सीडेंट आ एंटिसेप्टिक गुण होला, जवन त्वचा के साफ, सुंदर आ स्वस्थ राखेला। हल्दी जख्म, कटाव आ जलन में भी उपयोगी होला। ई रस्म के एक अउर फायदा बा कि ई बर आ कनिया के घबराहट कम करेला। हल्दी के गुण तनाव आ सिरदर्द कम करे में भी सहायक होला।

अब बात करल जाव मेहंदी के रस्म के, जवन बियाह से पहिले के सबसे महत्वपूर्ण रस्मन में से एक हवे। हमनी के समाज में बियाह में परंपरा आ रिवाज के खास महत्व होला, आ ई मेहंदी के रस्म में साफ दिखाई देला। मेहंदी बियाह के एगो अभिन्न हिस्सा हवे। बिना मेहंदी के बियाह अधूरा मानल जाला, काहे कि ई स्त्री के सोलह श्रृंगार में से एगो प्रमुख श्रृंगार हवे।

मेहंदी के रस्म आमतौर पर बियाह से एक दिन पहिले मनावल जाला। मान्यता बा कि मेहंदी लगावे के बाद कनिया के घर से बाहर निकलल वर्जित हो जाला। ई रस्म मुख्य रूप से कनिया पक्ष द्वारा आयोजित होखेला आ ई कुछ खास लोगन के बीच निजी रूप में मनावल जाला। हालांकि कुछ लोग एकरा के बहुत धूमधाम से भी मनावेला।

मेहंदी के इतिहास बहुत पुरान बा। "मेहंदी" शब्द संस्कृत के "मेंधिका" से निकलल बा। मेहंदी के उपयोग प्राचीन समय से होत आ रहल बा, आ दुनिया भर में ई शुभ मानल जाला।

परंपरागत रूप से मेहंदी के पत्ता पीस के, नींबू के रस आ पानी मिला के रात भर रखल जाला, फेर दुसरका दिन एकरा के हाथ में लगावल जाला। कुछ लोग पैर में भी लगावेला, लेकिन कुछ परंपरा में पैर में मेहंदी लगावल वर्जित मानल जाला।

एह रस्म में आमतौर पर औरत लोग शामिल होखेला, आ पुरुष लोग के भागीदारी कम रहेला। लोग हल्का रंग के कपड़ा पहिरेला, आ जगह के फूल से सजावल जाला। ढोलक पर गीत गावल जाला।

मेहंदी के वैज्ञानिक महत्व भी बा। एकर ठंडा प्रकृति शरीर आ मन के शांत करे में मदद करेला। बियाह के समय के तनाव कम करे में ई बहुत उपयोगी होला।

अब बात करल जाव सबसे महत्वपूर्ण रस्म कन्यादान के।

हिंदू धर्म में बियाह के एगो पवित्र संस्कार मानल गइल बा, जवना में कई रस्म-रिवाज के पालन जरूरी होला। वरमाला, फेरा, सिंदूरदान, मंगलसूत्र के साथ-साथ कन्यादान के विशेष महत्व बा। कन्यादान के बिना बियाह के पूर्ण ना मानल जाला। कनिया के लक्ष्मी आ अन्नपूर्णा के रूप मानल जाला। जब पिता कन्यादान करेलें, त ऊ आपन बेटी के जिम्मेदारी वर के सौंप देलें आ ई कामना करेलें कि वर जीवन भर उनकर बेटी के सम्मान आ सुरक्षा करिहें।

पौराणिक मान्यता के अनुसार वर के विष्णु आ वधू के लक्ष्मी के रूप मानल जाला। कन्यादान के समय वर ई वचन देवेलें कि ऊ जीवन भर आपन पत्नी के साथ निभईहन। ई रस्म बहुत भावनात्मक होला, काहे कि माता-पिता अपना दिल के टुकड़ा के विदा करेलें। कन्यादान के बाद बेटी के नया घर ही ओकर असली घर बन जाला।

पौराणिक कथा के अनुसार दक्ष प्रजापति सबसे पहिले आपन बेटियन के विवाह कराके कन्यादान कईले रहलें। कन्यादान के विधि में कनिया आपन हाथ पिता के हाथ पर राखेली, आ वर नीचे से हाथ पकड़ेलन। फेर जल अर्पित कइल जाला, जवन कनिया के हाथ से होत वर के हाथ तक पहुँचे ला।

◆ ◆ ◆

प्रिया मिश्र "मन्नु"

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

एगो रहलन कवि जी

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

एगो गाँव रहल जेकर नाम रहे -अमवा घाट। शांत-सुकून से भरल, खेत-खरिहान, नदी-नाला, आ चिरई-चुरगुन के बोल से रजगज।ओही गाँव में रहलन– लोग त “कवि जी” उनका के कहत रहे बाकिर उनकर असली नाम रामेश्वर प्रसाद मिश्र रहल। उनकर कवितई अइसन रहे कि लोग उनकर असली नाम बिसार दिहले।

कवि जी कइसे कवि बनलन, ई कहानी बड़ा मजेदार बा।

कवि जी रोज बिहाने बिहाने नदी किनारे टहले जास। ओहि किनारे एगो पुरान पीपर के नीचे बइठ जात रहलन । उनके पास ना कागज रहत रहे, ना कलम—– बाकिर दिमाग में कविता उमड़ के आइए जात रहे। ओह घरी कवि जी खूब मगन होके कविता वाचन करस।बाकिर सुनवइया केहु ना रहे।कबो कबो लोग आवत जात उनका के बोलत सुने त कहे-पागल हउव का?अकेलहीं बुदबुदा ताड़।ऊ हँस के कहस- नवका कविता फुटल बा आईं बइठीं तो सुना देब। बाकिर भोरे भोर काम पर भागे वाला मनई के कविता सुने के कहाँ फुरसत।

एक दिन गाँव के स्कूल में "कविता प्रतियोगिता" रखल गइल। मास्टर साहेब कवि जी के नेवता पेठइलन——

“कवि जी! आके एह में आपन कविता सुनाईं।”

कवि जी त आ गइलन ।एक आदमी कहलन - आ इनका लगे ना काँपी बा ना डायरी ,का सुनइहें! कवि जी के कान तक ई बात पहुंच गइल । ऊ सकुचात बोललें——

“हमरा से कविता त कागज पर ना लिखाला बलुक दिमाग में बस आपे उतर जाला।”

इसकुल के लड़िका-लइकी सब त बड़ा उत्साहित रहलन । मंच त सजल रहल बस जइसहीं गाँव के लोग जुटान भइल त कवि जी मंच पर चढ़लन।

सबके मन में उत्सुकता रहे - कवि जी का सुनइहें?

कवि जी आँख मूँदलन, माथ पर हाथ फेरलन, आ गला खँखारलन।फिर अचानक गइलन—

“आकाश में उड़े एक चिरई,

साँझ भइल त लौटल मड़ई,

जेकरे दिल में प्रेम न बसल,

ओकरे खेत ना उगे फसल।”

सब लोग ताली पीट देलक, खूब ताली पिटाइल ।मास्टर साहेब पूछलें—

“कवि जी! ई कविता कहाँ से सूझेला ?”

कवि जी मुस्कुरा के बोललन—

“भइया, कविता हम ना बनावेनी... उ त आपन रास्ता खोज के हमरा दिमाग में खुदहीं आ जाले।”कवि जी गदगद हो गइले। आखिर आज उनकरा कविता के शाबासी मिलिए गइल।अबकी कवि जी के नाम गाँव से बहरी भी गइल।

एक दिन शहर से एगो बड़का लेखक गाँव के कार्यक्रम में कवि जी के कवितई के तारीफ सुन के अइलन। उ कवि जी के खोजत-खोजत पीपर गाछ के नीचे पहुँच गइलें। देखलें– कवि जी चुपचाप नदी देख के हँसत जात बाड़न।

ई देखके लेखक पूछलें—

“का कवि जी, कविता खाली हँसले से बन जाला का?”

कवि जी जवाब देलन—

“नदी जइसे आपन धार बहावत रहेला; ओसहीं हमारा मन कविता बहावत रहेला। हम त बस महसूस कर रहल बानी ,

ओकरे आनंद से मुख मुस्करा रहल बानी। ।”

जबाब सुन के लेखक प्रभावित हो के कहलें— राउर कविता छपी तबे नु सभका तक पहुंची आ राउर नाम होई।”

कवि जी हँसत बोललन—

“हमार कविता कागज पर कैदी बन के ना रह पाई। ई त-

हवा में उड़ेले,

नदी में बहेले,

गाँव में रहेले,

मनई के कहेले,

आ गाँवे के बोली-बानी में मिल जाले।”

लेखक खूब प्रभावित भइले बाकिर कवि जी कविता कागद पर उतरवावे खातिर तैयार ना भइले। हार पछता के लेखक लौट गइले।

धीरे-धीरे कवि जी के नाम दूर-दूर तक फइल गइल। अब लोग उनका के कहे लागल—“ मुखी कवि जी,जिनकर कविता कागज पर ना,दिल में छपेला।”

एक दिन फेर लेखक मुखी कवि जी से मिले खातिर गाँव अइलन। ऊ बड़ी मिन्नत कइलन कि कवि जी अपना साथे कुछ दिन उनका के राखस आ अपना नियन कविता लिखे के सिखावस काहे कि उ छंद में लिखे ना जानत रहलन बाकिर छंद उनका खूबे पसंद आवे। मुखी कवि मान मनौव्वल के बाद

उनका संगे रखे के तैयार हो गइले। धीरे धीरे दुनु जन आपन कविता के बखान एक दुसरा से करे लगले।तनिके समय में दोस्ती नजदीकी में बदल गइल रहे।एक दिन लेखक कहले कि हमर मेहरारू पहिले कविता छंद में सुनावत रहली ऊ ढेरे लिखले बाड़ी।जब खुश रहेली त गावत कय बार सुनले बानी। बड़ा नीक लागेला।बाकिर बाद में कहे लगली कि अब हमार मन इ कवितई से उचट गइल बा एहसे अब ना गावेली ना लिखेली। एगो कविता उहे लिखले बाड़ी बाकिर ओकरा के अधूरा छोड़ दिहले बाड़ी । हमरा ऊ बहुते पसंद बा। कय बार ओकरा के हम पुरावे के कोशिश कइनी बाकिर अंतरा पहिलका नियन जमल ना। हम त गद्य लिखे के ज्यादा पसंद करीले।पद पर हमार पकड़ कमजोर

बा।एही से जब रउआ लगे आइल बानी त सोचतानी रउआ एकरा के जरूर पूरा देब।रउआ के सुनाईं का! मुखी कहलन- सुनाईं! देखीं तनी।पूरे लायक होई त पूरा देब।लेखक जइसे कविता शुरू कइले मुखी के मुँह खुलले रह गइल। कविता खतम भइला पर लेखक कहले अगिला बंद बनाईं त।

मुखी के त काठ मार गइल। धीरे से कहलें- रउरा यकीन बा,ई उहे लिखले बाड़ी। कबो उनका के लिखत देखले बानी।

तनी सकुचात-मुस्कात कहलन- लिखत त देखले नइखीं कबो।बाकिर गावत पढत सुनले बानी।मुखी कहलन-रूकीं! फेर पाकिट से एगो फटहीं आ मुचराइल छोटहन डायरी निकाल के एगो पेज खोल के लेखक के आगे कर देहलन।लीहीं देखीं त इहे बंद रहल ह नु। लेखक भौंचक्का! रउरा लगे कइसे? कवि जी कहलन- ईहो हमरे लिखल ह। ऊ गइली त साथे ले गइली। ओही घरी से प्रेमगीत हम कबो लिखबे ना कइनी। पहिले हम बड़ी मिज़ाज वाला रहनी। स्कूल में उनका से भेंट भइल त कविता हमरा हृदय में जनमल ।हम खूब लिखीं आ जब उ हमरा आसपास होखस त उनके बहाने से हम आपन कविता सुनाईं।ऊ सुन के खूब हमर तारीफ करस।हम एकरा के धीरे धीरे आपन जिनिगी बुझे लगनी। कबो-कबो ऊ हमर गीत के नया राग बना के हमरा के सुनावत रहली। बाकिर उनकर आपन दुनिया रहे जवना में ऊ मगन रहत रहली।एक दिन हम उनका के आपन डायरी में लिखल सब गीत दे दिहनी ई कहके कि तुम बहुत अच्छा गाती हो।

फेर त दोस्ती बढ़े लागल। एक दिन एही नदी किनारे पिकनिक पर सब दोस्त इकट्ठा भइनी त उ हमार डायरी हमके वापस कर देहली।कहली कि जे हमरा ठीक लागल ह उ हम अपना डायरी में उतार लेले बानी। आगे के पढ़ाई ससुराल से होई एह से तहार डायरी तहरा के वापस कर देतबानी।

हमरा त काठ मार गइल। अब जवन रोग अकेलहीं पैदा कइले रहीं ओकर दवाई भी खुदे खोजे के पडल। प्रेमगीत तब से आज ले ना लिखाइल।बाकिर इ नदी के किनार आ इ पीपर गाछ हमर जिनगी बन गइल। कविता के रुप बदल गइल।अब प्रकृति हमार विषय बा। बाकिर ओहिमे राग प्रेम से भर जाला। लंबा साँस लेके मुखी जी कहले - उनका नइखे पता आ कहब मत। कहते कहते मुखी जी लुढक गइले आ उनकर जीवन समाप्त हो गइल।

लेखक बुझ गइले कि वियोग से उपजल गीत के राग काहे एतना मधुर होला। जे कुछ अचानक भइल उ तऽ गाँव में आग जइसन फइल गइल। गाँव भर के लोग मिलके उनकर अंतिम संस्कार कइलन।सब खतम भइला पर लेखक अपना घर के तरफ रूख कइलन। लेखक के मन अपराध बोध से भर गइल रहे।समय बीतल पर अब लेखक के मन राग से भर गइल रहे।ऊ जहाँ जास ओह गीत के सुनावस बाकिर मुखी कवि के नाम से सुनावस।कहस कि अमवा घाट के पीपर अबहियो उनकर कहानी कहेला—

उनका सरल जीवन, उनका सहज हँसी, आ उनका कविता के अजब दुनिया।

कवि जी के सोच असाधारण , — कवि जी बस एही से खास बन गइलें।

अब लोग कहे—

“एगो रहलन— मुखी कवि जी! जे

कागज पर भले कुछ ना लिखलें,

पर लोगन के मन में बहुत कुछ छोड़ गइलें।”

आजुवो गाँव में जब पीपर के नीचे हवा चलेला त लोग कहेला—

“इहे जगह पर एगो रहलन कवि जी... जे चुपचाप दुनिया समझत रहलन ।” पीपर,पतई ,नदी,गाँव आ धरती सबमें कवि जी हमेशा रहिहें।

◆ ◆ ◆

डॉ रजनी रंजन,
घाटशिला,
झारखंड।

जियल भी मुश्किल

मन के मार के जियल भी मुश्किल
मन के माफ़िक़ भी दुश्वारी
बनल बा दुश्मन, दुनियादारी

एक ओर परिवार के चिंता
एक ओर घर - बार के चिंता
हितई - नतई मान - प्रतिष्ठा
रोज़ी औ - रोजगार के चिंता
चैता - चईती फगुआ गुड़िया
तिथि तीज- त्यौहार के चिंता
यार के चिंता, प्यार के चिंता
एह सारा संसार के चिंता

सब एक साथे साधी कईसे
एक सूत में बांधी कईसे
बर के बर्बस करी बरारी

कबों ठहर के सोचिला जब
डर के डरे सिहर जाईला
छन भर खातिर जम जाला तन
छन भर खातिर मर जाईला
फिर भी हार ना मनले बानी
जीते के ज़िद ठनले बानी
साँस-साँस पे आस जगा के
जीवन राह पकड़ले बानी

बाक़ी बा सब राम भरोसे
राम जी दिहले राम ही सोचें
अब उनुकर ही बाटे बारी

◆ ◆ ◆

छोड़ा ख़ैर?

केका समझी आपन केका समझी गैर
छोड़ा खैर?

घरहिन में बा खींचा तानी
सब मन मनुआ सब मनमानी
देवी देउता भये उड़न - छू
सुख लइके उडि चलिन भवानी
केतनो चीखी - माथा पीटी
केहु न बा सुनवईया टेर
छोड़ा ख़ैर?

बाबू ,भईया ,माई, भउजी
सब के सूझी बा अलगौझी
अलग अलग बा चूल्हा सबके
अलगै दुलहिन दूल्हा सबके
कट के अईसे रहैं की जईसे
जनम - जनम के बाटई बैर
छोड़ा ख़ैर?

केका पकड़ी केका छोड़ी
केकरे माथे गुस्सा फोडी
केसे विनती अउर चिरौरी
केसे हाथ अ अंगुरी जोरी
केका कही ई जीवन गाड़ी
चल ना पाई प्रेम बगैर
छोड़ा ख़ैर?

◆ ◆ ◆

राम अचल पटेल

पहिले -
पुरनियाँ कहत रहले हँ - 'जब बाप के जूता बेटा के गोड़ में सही से आ जा त समुझीं कि बेटा जवान हो गइल। अब बेटा के साथे बराबरी के बेवहार राखीं।'
अब -
'जब बेटा बाप की चुनौटी से चोरा - चोरा के खइनी खाए लागे त समुझीं कि बेटा जवान हो गइल। अब बेटा से बराबरी के बेवहार राखीं। अपनी खइनी के चुनौटी बेटा के दे दीं आ जब खइनी खाए के मन करे त बेटा से कहीं -"बाबू, तनी बनावऽ ना। ढेर देर हो गइल खइनी खइले।"
नोट : - खइनी खाइल बाउर ह स्वास्थ खातिर।

एक बेर एगो चीनी, एगो पाकिस्तानी आ एगो भारतीय अरब देश में शराब पीयत पकड़ा गइलें।
एकरा खातिर उहाँ के सरकार ओ लोग के 20-20 कोड़ा मारे के सजाइ सुनवलसि।
कोड़ा मारे से पहिले जेलर कहलें कि आज हमरा बेगम के जनमदिन ह आ ऊ चाहत बाड़ी कि अपनी सजाइ से पहिले तहन लोग एकहकगो मन्नत मांगि ल।"
चीनी कहलें कि हमरा पीठि पर एगो तकिया बान्हि दिहल जा।
तकिया पीठि पर बन्हा गइल।
लेकिन तकिया जियादे देर ले ना टिकि पावल।
पाँचे कोड़ा में फाटि गइल आ उनका पनरह कोड़ा अपनी पीठिए पर खाए परल।
पाकिस्तानी ई देखिके डेरा गइलें आ कहलें कि हमरा पीठि पर दू गो तकिया बान्हि दिहल जा।
दू गो तकिया बान्हल गइल।
लेकिन उहो जियादे देर ना चलल आ उनहूँ का दस कोड़ा अपनी पीठिए पर खाए परल।
जब भारतीय के भाँजा आइल त जेलर कहलें कि
तू दुनियाँ के बेहद खूबसूरत देश से आइल बाड़ऽ जवन अपनी वीरता खातिर जानल जाला,
तू एगो ना दू गो मन्नत मांगि सकत बाड़ऽ।
भारतीय माँथ उठा के बहुत नरमी से कहलें -
'हम तहार एहतराम करत बानीं आ ए नवाजिश के बदले बीस ना सइ कोड़ा के मांग करत बानीं.......
जेलर चिहात पुछलें कि तहार दूसर ख्वाहिश का बा?
भारतीय फिनु से माँथ उठा के मुस्कियात कहलें ......
"हमार दूसर ख्वाहिश ई बा कि ....
हमरा पीठि पर पाकिस्तानी के बान्हि दिहल जा।"

संगीत सुभाष

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

नवकी कलम

आग लागल बा सोना में

हाहाकार मचल बा दुनिया के कोना कोना में,
महंगाई के मार झेले लोग आग लागल बा सोना में।
गइल जमाना सस्ती के ऊ दमड़ी ढेला पाई के,
हमारा अस लागत नइखे आई कबो भुलाई के।
बहुत तरक्की दुनिया कइलसि अणुबम बनाई के,
सुपर पावर बने चाहे सबका के धमकाई के।
इहे हाल रही त भीख दी ना केहू भगोना में,,,
महंगाई के मार झेले लोग आग लागल बा सोना में।
हर चीज के दाम बढता दिन पर दिन भाई हो,
मेहनत होखे बारह घंटा बढ़े नाहीं कामाई हो।
खरचा चली घर के कइसे आई कीमती दवाई हो,
एह पर बोलेवाला केहू नइखे दीपक भाई हो।
अबो से उहे होखे सबकर भला बाटे जोना में,,,
महंगाई के मार झेले लोग आग लागल बा सोना में।

◆ ◆ ◆

गुजारिश बा सरकार से

बचावल जा देश के,प्राइवेट स्कूल के वॉर से,
यू.पी अउर बिहार के, गुजारिश बा सरकार से।

प्राइवेट स्कूलन के जब मान्यता होई रद्द,
सरकारी स्कूलन के तब जाके बढ़ी कद।
सभे जाने बाकी चर्चा केहू करे ना,
ए कुल्ह के लफड़ा में कवनो नेता परे ना।
दिन पर दिन जनता कटे धारदार तलवार से...

प्राइवेट में भेजे पइसा वाला गरीब भेंजे सरकारी में,
सवख से बइठे गरीब के लइका बोरा बिछा के बारी में।
अधिकार मिले समानता के अइसन कवनो रुल बने,
गरीब अउर अमीर खातिर वातावरण अनुकूल बने।
शिक्षा ना सउदा होता ई जोड़ल जाता रोजगार से...

लूटपाट के दौर चलल बा प्राइवेट स्कूलन में,
एक-जुट होखे के परी सभका एकरा उन्मूलन में।
तब जाके हल होई रुकी धोखाधड़ी,
उम्मीद कइल जाई दीपक तब देश आगे बढ़ी।
मुक्ति जब मिली सभका एकरा मार से...

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

कहाँ आसान बा

सूर्येश प्रसाद निर्मल
तरैया शीतलपुर

कहाँ आसान बा
जिनगी जी
लेवल इहाँ
बड़ी आसान बा
मउत कीन
लेवल इहाँ
जब ले
खोजेम रउवाँ
पता ई जिन्दगी
तब ले
छीन ली दुनिया
तोहर मुसुकी ले इहाँ
कहाँ ले के जायेम
फाटल गुदरी अपन
कहाँ आसान बा
दुख गिन लेवल इहाँ
केहू कुछऊ ना बोली
देखियो के इहाँ
बड़ी आसान बा
हक छीन लेवल इहाँ
देखते देखते
लोग लूट ली निर्मल
नजर ना आवे
केहू के
आँसू पी लेवल इहाँ।

◆ ◆ ◆

जिनगी चलऽतिया....

घड़ी दिन पहर अस ढलऽतिया
अतने बुझिहऽ कि जिनगी चलऽतिया....

मन लगाके निकहा पढ़ाई कइनीं जा
नोकरी पाके बढ़िया नोकर भइनीं जा
मए मेहनत के परापत अतने बाटे
बुद्धि कोना में बइठ हाथ मलऽतिया
अतने बुझिहऽ कि जिनगी चलऽतिया.....

रोजहा प सूरज गोसाईं आवत बाडें
ड्यूटी जाए के टाइम बतावत बाडें
जिनगी डेरा से आफिस चक्कर भइल बा
पते ना दुनिया जियऽतिया कि मरऽतिया
अतने बुझिहऽ कि जिनगी चलऽतिया.....

रोपेया पइसा कमाई आ गाड़ी बाटे
बाल बच्चा मेहरारु के गहना साड़ी बाटे
आन शहर के आन लोगन में घेराइल बानीं
समइया आरी से काटला लेखा कटऽतिया
अतने बुझिहऽ कि जिनगी चलऽतिया.....

साँस चलत बा, जिनगी बढ़त बा
दाँत टूटत बा, बार झरत बा
केकरा गुलामी में बानीं बुझाते नइखे
जिनगी बन्हकी धराइल कर्जा अस बढ़ऽतिया
अतने बुझिहऽ कि जिनगी चलऽतिया.....

◆ ◆ ◆

विशाल विद्रोही
रोहतास, बिहार

हरिया वाला कप

सरयू पंडित गाँव के गिनल-चुनल लोगन में गिनात रहलें आ एक खास व्यक्तित्व के छवि धारण कइले रहलें। पंडिताई त अपना जगह रहे, ऊ गाँव के माध्यमिक स्कूल में संस्कृत के शिक्षक भी रहलें, जेकरे चलते लोगन में उनका प्रति बहुत श्रद्धा आ आदर रहे। छोट परिवार रहे। पंडित जी जब स्कूल जात रहलें त पंडिताइन अकेले रह जात रहली।

हरिया, जे उनका टहलुआ रहे, उनका गैरमौजूदगी में दरवाजा के देखभाल आ सारा काम संभालत रहे।

उनका दरवाजा पर, बाहर वाला खिड़की के ऊपर राखल ऊ चीनी माटी के कप—जेकरे बाहर वाला हिस्सा साफ-सुथर आ फूल से सजल रहे, लेकिन अंदर से कालिख के मोटा निशान धारण कइले रहत रहे—जइसे केहू के मन होखे। ई कप के इस्तेमाल हरिया करत रहे, त कप के नाम भी पड़ गइल "हरिया वाला कप"। लेकिन ई बात हरिया के पता ना रहे। आ पता चलियो जाइत त का फर्क पड़ित? ना त कप के कालिख मिटित, आ ना ही उनकर मन साफ होइत।

उनका घरे बर्तनन के नाम पड़ल रहे—जइसे "पूजा वाली थाली", "पूजा के लोटा" आ "हरिया वाला कप"। अब जरा सोचल जाव—पंडित जी के खुद के नाम पर ना त कवनो थाली रहे, ना कप, आ ना पंडिताइन के नाम से कुछ। लेकिन हरिया के नाम पर एक कप जरूर रहे। हरिया वाला कप।

◆ ◆ ◆

(फोटो सांकेतिक आ AI से बनावल ह)

नितिन शिवम्

के आपन बा

मत पूछीं के आपन बा.
बस खाली विज्ञापन बा.

मतलब के रिश्ता बाटे,
सब तऽ फेर समापन बा.

साल पुरनका रहे बाउर,
कहाँ नया में नयापन बा.

ऊपर से सब हँसत बाड़ें,
मन में बस सूनापन बा.

जात-पात में बटलें लोग,
बचल कहाँ अपनापन बा.

घर बाहर हर जगे लुटास,
जेकरा में सीधापन बा.

नेतवन के तऽ दुनिया में,
प्यारा बस सिंहासन बा.

✍ नूरैन अन्सारी

घर आके न कहल जाला

दुख-दर्द सब सहल जाला.
मन मार के रहल जाला.

हर एक बात परदेश के ,
घर आके न कहल जाला .

याद लड़कपन आवे जब
लोर आँख से बहल जाला

शीश महल असरा के हमर,
बेमौसम ही ढहल जाला.

बोलल भी गुनाह बहुत बा
चुप ना हमसे रहल जाला

कबतक दीया जरी आख़िर,
पुरवा सन-सन बहल जाला.

✍ नूरैन अन्सारी

ना मिलेला

हर समय सुख के सुतार ना मिलेला.
सब केहू से दुःख में, उबार ना मिलेला.

रही बोली-बचन निक त,मिली सबकुछ,
मऊरइला पर सुई भी उधार ना मिलेला.

जोड़ गाठ के नाही,निबह पावेला रिश्ता,
जबले सबका मन के बिचार ना मिलेला.

ना चाही के भी तिसरईत के पड़ेला ज़रूरत,
जब अपने घर में आपन आधार न मिलेला.

कबो कबो लही जाला , अन्हरा के लाठी,
बिना करम के भाग्य भी बरियार ना मिलेला.

गिर के परबत-पहाड़ से बच जाला आदमी,
नज़र से गिरला पर पोखरा इनार ना मिलेला.

◆ ◆ ◆

नूरैन अंसारी

हरवा

दिखेला नाहीं हरवा अब घरवा दुअरवा।
जोड़िया बैलवन के नजरो ना आवे,
खूँटा घारी ई सगरो बतावे;
लउके ना भितरी में नाहीं बहरवा।
दिखेला नाहीं हरवा........

भरत पानी रहे दुलही पनघटवा,
बने कोंहार घरे माटी के बटवा;
नाहीं बा ढेंका अब नइहरे ससुरवा।
दिखेला नाहीं हरवा........

बढ़िया बुझाला ना अइसन ई रीतिया,
रहली बिलाइ गइली गउवाँ के भीतिया;
देति रहे ठंडी ना देला लिंटरवा।
दिखेला नाहीं हरवा........

बढ़िया बाग से सजलि रहे परती,
रहे लिपात पियरी माटी से धरती;
मोर पपीहा ना बाने इनरवा।
दिखेला नाहीं हरवा........

हर एक गउवाँ में रहल अखाड़ा,
पिएँ पहलवान रस औ छुहाड़ा;
"रागी" जी रहे तब चमकत चेहरवा।
दिखेला नाहीं हरवा अब घरवा दुअरवा।।

◆ ◆ ◆

राधेश्याम "रागी"
कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

हमार दरद

हमार दरद तू ना समझ पइलू,
दिल के तड़प तू ना समझ पइलू।
हम त तोहरा के खुदा मान के पुजनीं,
पर हमार इबादत तू ना समझ पइलू।

अँखियन से गिरत ई लोर के सागर,
ई गम के बरसात तू ना समझ पइलू।
कइनीं जे हम प्यार के खुलेआम इजहार,
ऊ पाकल मोहब्बत तू ना समझ पइलू।
सौरभ के धड़कन में बस तू ही रहलू,
पर अपन ही चाहत तू ना समझ पइलू।

◆ ◆ ◆

जिया बे-कल बा

तोहार सूरत निहारे के बहाना खोजेला,
ई पागल दिल बस तोहार ठिकाना खोजेला।

गइल बाड़ू जबसे तू ई नगरी छोड़ के,
नजरिया हमार बस तोहार जमाना खोजेला।

इजहार-ए-मोहब्बत त कइले रहनीं हम,
अब ई तन्हाई कवनो फसाना खोजेला।

रात भर करवट बदलत कटेला जिनगी,
ख्वाब तोहरे याद के खजाना खोजेला।
सौरभ के कलम से टपकेला दरद लोर बन के,
जिया बे-कल बा, बस तोहार मुस्कुराना खोजेला।

◆ ◆ ◆

अभियंता सौरभ कुमार
जिला -सिवान बिहार

गाँव.......

गाँव सुनला भर से आँख चमक आवेला।

गाँव.....

बोलला भर से कुल भाव छलक आवेला

गाँव.....

कहला भर स ऊ माटी के महक, ऊ खेत के कोर

से उठल सूरुज....

ऊ अपना लेखा प्यार, ऊ आदरनीयता, ऊ

अतुलनीयता कुल उभर आवेला।

गाँव.....

सुनला भर से आँख चमक आवेला।

गाँव माने.....

हमनीं के आपन दिन, आपन शाम.....

कुल समझ आवेला।

गाँव......

बोलला भर से कुल भाव छलक आवेला।

◆◆◆

ज्योतिका प्रसाद

नाइ जाला हो

तुहें कइसे कहीं हरदम सतावल नाइ जाला हो
न साथे चलि सके दे दिल लगावल नाइ जाला हो

बड़ी जब भागि जागेला घरे मेहमान आवेने
घरे जे आगइल होखे भगवाल नाइ जाला हो

समय के फेर सब हउवे ते ईहो दिन बदलि जाई
अगर आफत में बा केहू चिढ़ावल नाइ जाला हो

न तोहरे बस में बाटे ते तू बोलत बाड़ काहें के
बहुत अऊकात भी आपन दिखावल नाइ जाला हो

जे पजरे बइठि के हटिहें दुखाई जोर से उनके
कबो पुचकारि के फिर दुर-दुरावल नाइ जाला हो

जरल पेटे के बानीं मन करे ते दे दिहा खाना
उपासे पेट केहू के सुतावल नाइ जाला हो

जे 'काजू' साँच कहि दीहें ते तोहरो परपरा जाई
बतंगड़ बाति के अइसे बनावल नाइ जाला हो

◆◆◆

काजू निषाद
गोरखपुर,उत्तरप्रदेश

बेटी के व्यथा

चुप चुप कहऽतानीं
बेटी भइल बिया
बेटी हई कउनो पाप ना ह
काहें तियागत बानीं

बाबू जी के शान हम
माई के हम गुड़िया
भैया के हम हई दुलारी
काहें तियागत बानीं

पढ़ेंम लिखेम नाम राउर
रोशन करेम हमहूँ
इज्जत ना हम डूबे देम
वइसन बेटी बनम
दूगो कुल के जोरले राखम
वइसन बेटी हई
अफ़सोस न होई रउवा कबो
बेटी काहें भइली
एगो मौका जिए के
हमके दीं ना पापा
कइसन होला ई दुनिया
देखे दीं ना पापा
बेटी हई कउनो पाप न
तियागीं ना ए पापा
तियागत नइखीं ए बेटी
समझऽ हमार बात
डरऽतानीं ए दुनिया से
जे में पापी भरल बारे
फाट जाला छाती हमार
देख बेटी के दशा
एसे अच्छा मत आवऽ
बेटी तू जन्म लेके
समझऽतानीं ए पापा
राउर हम त कहल
ऊ दशा से अच्छा हम
दुनिया में नाहीं आइम
त्यागीं हमके ए पापा
हम जनम नाहीं लेम।

◆ ◆ ◆

निधि कुमारी सिंह
सोदपुर कोलकाता

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह “सिरिजन” । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं “सिरिजन” के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
रउरा हाथ के खिंचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

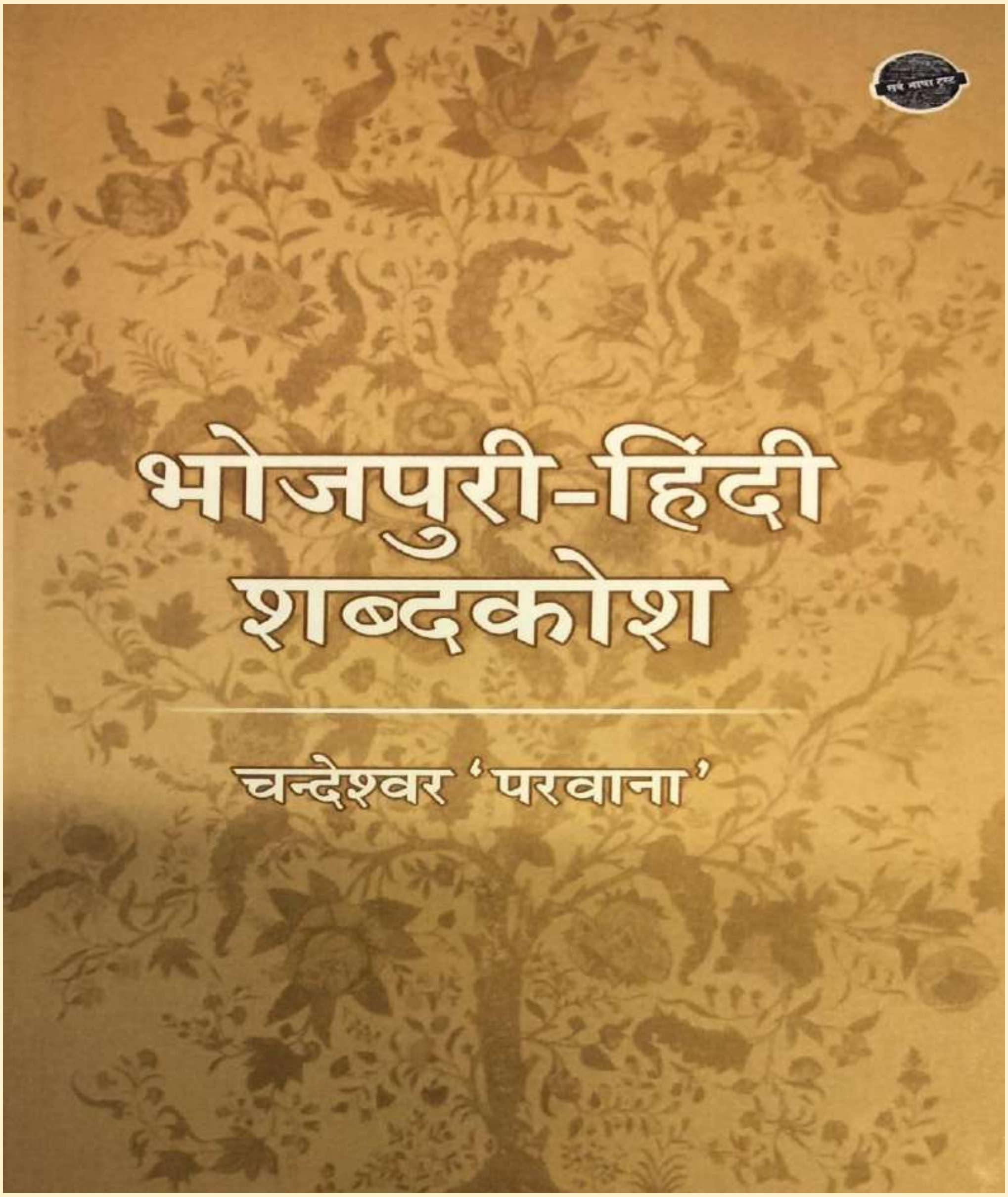

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, सरंक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा चन्देश्वर"परवाना" जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।

www.bhojpurisahityangan.com